





"श्रीराघवेन्द्र" से उद्धृत।

ROBERT CLIVE.

THE FOUNDER OF THE BRITISH EMPIRE IN INDIA

By

Pt. Dwarka Prasad Chaturvedi

Editor—Sri Raghavendra

राबर्ट क्लाइव

लेखक

चतुर्वेदी—द्वारकाप्रसाद शर्मा

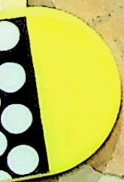
सम्पादक "श्रीराघवेन्द्र"।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृत निश्चयः॥
सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युजस्व नैवं पाप मवाप्स्यसि॥

—श्रीमद्भगवद्गीता २ अ०



... यन्त्रालय में मुद्रित।



ROBERT CLIVE.

THE FOUNDER OF THE BRITISH EMPIRE
IN INDIA.

By

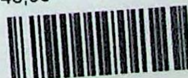
The Editor of "Sri Raghavendra."

राबर्ट क्लाइव ।

चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्म्मा लिखित

हतो वा प्रप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेययुद्धाय कृत निश्चयः ।
सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।
ततो युद्धाय युजस्व नैवं पाप मवाप्स्यसि ।

२ अ० ३७—३८ श्लोक, श्री मद्भगवद्गीता



प्रयाग

श्रीराघवेन्द्र यंत्रालय में मुद्रित ।

भूमिका

"A life of active exertion, of well regulated energy, an humble mind and a heart of faith and love, will convert the mounhtain of mis:ry into a peaceful valley."

—DANBY.


ह पुस्तक दो उद्देश्य से लिखी गयी है। प्रथमतः भारत वर्ष में ब्रिटिश आधिपत्य स्थापित करने वाले बङ्गाल के प्रभावशाली गवर्नर लार्ड क्लाइव का जीवन चरित्र प्रकाश करने के अर्थ; द्वितीयतः इस लिये कि पाठकों को इस देश की उस समय की यथार्थ स्थिति का बोध हो जिस समय इस देश के अधिष्ठाता परस्पर की इर्ष्या में पड़ और ज्ञान शून्य हो अपनी कुल्हाड़ी से अपना ही पैर काट रहे थे।

यह प्रायः देखा जाता है कि इतरजन इतिहास को शुष्क विषय समझ कर उसको बहुत कम पढ़ते हैं और यही कारण है कि देश के अतीत काल के नाना प्रकार के परिवर्तनों के इतिहास को न जानने के कारण इतिहास-ज्ञान-शून्य देशवासी अपने देश की सामयिक त्रुटियों और आवश्यकताओं के रहस्य को न तो स्वयं समझ ही सकते हैं और न उन अभावों को मेंटने के लिये उचित उपाय ही बतला सकते हैं। इस प्रकार के लोग देश के उद्धार के लिये जो प्रयत्न करते हैं उनसे देश का उपकार होना तो दूर रहा, उलटा अपकार होता है और देशोद्धार होने की तो बात ही क्या है प्रत्युत देश रसातल को चला जाता है। जीवन-चरित्र-प्रेमियों को क्लाइव

से राजनैतिक पुरुष की जीवनी विदित हो और साथ ही साथ उस समय की यथार्थ ऐतिहासिक घटनाओं का भी उन्हें ज्ञान हो इसी लिये मैंने यह प्रयत्न किया है।

यथासम्भव इस बात का प्रयत्न किया गया है कि हिन्दी भाषा जानने वाले, जो प्रायः उपन्यासादि हलके साहित्य को ही बहुधा पढ़ा करते हैं वे भी इस जीवनी को पढ़ कर इस पुस्तक से कुछ लाभ उठावें और इस बात को भली भाँति समझ लें कि इस देश के शासन परिवर्त्तन के समय किसने इस देश के साथ उपकार किया था और किसने अपकार।

जिस समय इस देश में स्वदेशी और बहिष्कार का आन्दोलन जड़ पकड़ता जाता है और लोग अपनी भूलों को सुधारने के लिये सचेष्ट हो रहे हैं, उस समय लार्ड क्लाइव की जीवनी का एक देशी द्वारा प्रकाशित होना किस दृष्टि से देखा जायगा-यद्यपि इसका निर्णय व्यक्तिगत विचार एवम् धारणा से सम्बन्ध रखता है; तथापि यदि विचारशील लोग साथ ही साथ इस बात पर भी ध्यान देंगे कि जिस विदेशी की जीवनी से अगले पृष्ठ भरे गये हैं उसकी उन्नति का क्षेत्र यही पुण्य देश है और इस पुण्य देश के वर्त्तमान सुख दुखों का आदि सम्बन्ध उसी पुरुष से है तो कदाचित् इस पुस्तक को लोग चाव से पढ़ने की इच्छा प्रकाशित करें।

इस देश में पाश्चात्य शिक्षा दीक्षा के प्रभाव से और संस्कृत-ज्ञान-शून्य होने के कारण, हमारे धर्म्म की गूढ़ और जटिल समस्यायें भी जब विलायती पण्डितों के प्रमाणों से ही स्पष्ट की जाती हैं तब इस पुस्तक के आधार स्वरूप विलायती इतिहास लेखक हैं-यह सुन कर यदि हमारे देशी भाई

असन्तुष्ट हों तो यह उनका सरासर अन्याय समझा जायगा। क्योंकि यदि मैक्समूलर, वेबर ह्विटनी, ह्वूलर प्रभृति, वेद उपनिषद, सूत्र, स्मृतियों की खोजों के लिये प्रमाण हो सकते हैं और उनके मतों के सामने सहस्त्र सहस्त्र भारतीय टीकाकारों के मत भ्रान्त समझे जाते हैं, तो मेकाले, मार्शमैन ह्वीलर पोप होम्स वेलपोल आदि पाश्चात्य इतिहास लेखक गण भी भारतीय ऐतिहासिक जटिल घटनाओं के तथ्य निर्णय करने के लिये अवश्य ही प्रमाण मान कर ग्रहण किये जा सकते हैं। यह पुस्तक किन किन पुस्तकों के आधार पर लिखी गयी है उन पुस्तकों की सूची अन्यत्र दी गई है। यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि क्लाइव के चरित्र में जहां जहां धब्बे हैं उनको लेखक ने साफ करने का प्रयत्न नहीं किया बल्कि उन पुराने और फीके धब्बों को क्लाइव के देशवासियों की दृष्टि से ही देख कर उनके धुंधले रङ्ग को और भी स्पष्ट कर दिया है जिससे इस पुस्तकके पढ़ने वालों को शिक्षा मिले।

क्लाइव की जीवनी से, पढ़ने वालों को कितनी ही लाभप्रद और काम की शिक्षा मिल सकती हैं। क्लाइव ने इस देश में रह कर जो कुछ भला बुरा किया, यद्यपि उन अच्छे बुरे कर्म्मों का फल भी आगे पीछे क्लाइव ने ही भोगा, तथापि हमारे पाठकों को यह भली भाँति समझ लेना चाहिये कि चाहे बड़ा आदमी हो चाहे साधारण मनुष्य ही क्यों न हो, अधर्माचरण का अन्तिम परिणाम दोनों के लिये समाने रूपसे सदा से शोचनीय ही होता है, चाहे आरम्भ में भले ही किसी की उन्नति होती हुई क्यों न दिखलाई पड़े। इतिहास से यह बात स्पष्ट सत्य प्रगट होती है कि जिन स्वदेशियों ने क्षुद्र स्वार्थ

के वशीभूत हो इस देश का अधिकार अधर्म्माचरण से बाहरी लोगों के हाथ में सौंप दिया उनको उन दुष्ट कर्मों का प्रायश्चित भी उसी समय करना पड़ा। अमीचन्द, मीर जाफर प्रभृति का अन्तिम परिणाम इस बात की साक्षी देता है।

प्रसङ्ग आपड़ने पर यह बतला देना भी यहां आवश्यक जान पड़ता है कि सब से प्रथम विदेशियों में से भारतवर्ष को कुटिल नीति से अपने अधिकार में कर लेने की इच्छा, भारतवर्ष स्थित फ्रेंच गवर्नर डूपले को हुई थी। इसमें सन्देह नहीं कि उस समय राजनैतिक निपुणता में डूपले अद्वितीय था। दक्षिण प्रान्त में उसका प्रभाव भी बहुत था, किन्तु उसमें त्रुटि यही थी कि वह स्वयं इस देश का स्वतंत्र शासक बनने की कामना रखता था-इसीसे वह स्वदेशी सहयोगियों (लेबोरडाने आदि) का उत्कर्ष नहीं सह सकता था। डूपले की कुटिल नीति को, उसके स्वार्थ पूर्ण कार्य्यों ने, फ्रांस निवासियों पर प्रकट कर दिया था अतः फ्रांसवालों ने सदैव डूपले से इस देश में शान्ति बनाये रखने और लड़ाई झगड़ों में सम्मिलित न होने का अनुरोध किया। डूपले ने जब स्वदेशियों के अनुरोध पर ध्यान न देकर मनमाना कार्य किया तब उसके देश वालों ने भी उसे समय पर सहायता देने में आनाकानी करना आरम्भ किया। यदि डूपले-क्लाइव की तरह स्वयं योद्धा भी होता तो सम्भव था कि डूपले अपने इष्ट साधन में देशवासियों की सहायता के विना भी कृतकार्य्य हो जाता परन्तु वह स्वयं योद्धा नहीं था अतः अवसर पर सहायता न मिलने से डूपले अपने विचारों को पूरा करने में अकृतकार्य्य ही रहा। यदि डूपले को समय पर फ्राँस वाले यथेष्ठ सहायता देते तो कभी सम्भव नहीं था कि इस देश पर इङ्गलेण्ड वालों का

अधिकार हो सकता। डूपले के स्वार्थ साधन का लाभ इङ्गलैण्ड वालों ने उठाया।

अन्त में, मैं यह प्रकाश करना भी प्रयोजनीय समझता हूं कि मुझे यह आशा कभी नहीं थी कि मेरी यह रचना कभी किसी प्रेस का मुंह देखेगी और जिस प्रकार बहुत से उत्साही साहित्य सेवियों की रचना बस्तों में बँधी की बँधी ही रह जाती हैं वही दशा इस पुस्तक की भी होगी; परन्तु मेरे परम प्रियमित्र और हितैषी बन्धु वैकुण्ठवासी सुदर्शन सम्पादक पं० माधव प्रसाद मिश्र के परामर्श से मैंने इसे "श्री राघवेन्द्र" में क्रमशः प्रकाश करना उचित समझा। ईश्वर के अनुग्रह से जो बात प्रथम असाध्य प्रतीत हुई थी वह आज साध्य हुई है और यह पुस्तक वर्त्तमान रूप में हिन्दी जानने वालों की सेवा में उपस्थित करने योग्य हो गई है। मेरे दृष्टि प्रमाद और प्रेस के कम्पोजिटरों की कृपा से शुद्ध की हुई भूलें कहीं कहीं ज्यों की त्यों रह गई हैं। मेरा विचार था कि इस पुस्तक में शुद्धाशुद्ध पत्र लगा कर पुस्तक के इस दोष को दूर कर देता; किन्तु—जब मैं स्वयं अन्य पुस्तकों के शुद्धाशुद्ध पत्रों के अनुसार पुस्तक नहीं शुद्ध करता तब "आत्मवत् सर्वभूतेषु" न्याय से अन्य महानुभाव इस कष्ट को उठावेंगे-मुझे ऐसी आशा नहीं। इसी से उसका देना अनावश्यक समझा। यदि कभी इस पुस्तक के द्वितीय संस्करण का सुखस्वप्न पूरा हुआ तो इस संस्करण की भूलें दूसरे संस्करण में दूर कर दीं जायगी।

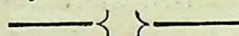
प्रयाग।
शु० वै० १५ रवौ
स० १९६४. } चतुर्वेदी—द्वारकाप्रसाद शर्म्मा।

BOOKS OF REFERENCE.

The following are the works, to which the wviter acknowledges his great obligation:——

I Lord Macaulay's, Critical & Historical Essays, contributeid to the "Edinburgh Review" Volume II.

2. Malcolm's Life of Lord Clive.
3. Four Heroes of India by F. M. Holmes.
4. Thornton's British Empire in India.
5. Auber's Rise of British Power in India.
6. Maleson's French in India.
7. Orme's Hindustan.
8. Martinean's British Rule in India.
9. Wheeler's History of India.
10. Text Book of Indian History by Dr: G. U. Pope [D. D.]
11. Annals of Indian Administration by Dr: Smith.
12. Elphinstone's History of India.



विषय सूची ।

प्रथम अध्याय ।

द्वितीय अध्याय ।

तृतीय अध्याय ।

चतुर्थ अध्याय ।

पञ्चम अध्याय ।

षष्ट अध्याय ।

सप्तम अध्याय ।

अष्टम अध्याय ।

नवम अध्याय ।

॥ श्रीः ॥

राबर्ट क्लाइव ।

प्रथम अध्याय ।

अपि मुदमुपयान्तो वाग्विलासैः स्वकीयैः ।
परभणितिषु तृप्तिं यान्ति सन्तः कियन्तः ?

(क्लाइव का जन्म-शिक्षा-बाल्यावस्था के चरित्र-कम्पनी में क्लर्कशिप-भारत यात्रा)

द्वितीय हैनरी के समय से क्लाइव के पूर्वज श्रापशायर (Shropshire) में रहते थे। राबर्ट क्लाइव के पिता वकील थे, किन्तु वकालत से उनकी आमदनी बहुत कम होती थी। उनके पास थोड़ी सी पैतृक भूमि भी थी-परन्तु उस भूमि की आय भी स्वल्प ही थी। तेरह भाई बहनों में क्लाइव सब से बड़ा था। उसका जन्म सन् १७२५ ई० की २९ वीं सितम्बर को स्टिची के अन्तरगत, मारटनड्रे के मारकेटड्रेटन में हुआ था। यह स्थान क्लाइव के पिता की पैतृक रियासत के अन्तरगत है। राबर्ट क्लाइव की माता मैंनचैस्टर निवासी मिस्टर नेथेनियल-गैस्केल की बेटी थी और वह अत्यन्त बुद्धिमती थी। यदि कहीं राबर्ट को अपनी माता के द्वारा पालित पोषित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ होता तो वह इतना रोषयुक्त और उद्दण्ड प्रकृति का न होता। राबर्ट तीन वर्ष का भी नहीं होने पाया था कि

वह होपहाल मैंनचैस्टर निवासी मिस्टर बेली के पास भेज दिया गया । माता पिता के निरीक्षण में न रहने से जैसी दशा प्रायः बालकों की हो जाती है वैसी ही दशा क्लाइव की भी मि० बेली के साथ रहने से हो गई । जिन दिनों क्लाइव मि० बेली के घर में रहता था उन दिनों उसके ऊपर उन लोगों का आवश्यकता से कहीं अधिक लाड़ प्यार था। हमारे पाठक, भली भांति जानते होंगे कि अनुभवी लोगों का कथन मिथ्या नहीं होता "अति सर्वत्र वर्जयेत्" अति का लाड़ प्यार भी बालक के लिये हानि कारक होता है । सो क्लाइव जब केवल सात ही वर्ष का था, तब मिस्टर बेली ने एक पत्र में क्लाइव के पिता को सन् १७३२ ई० में लिखा कि "क्लाइव इतना लड़ांका हो गया है कि जिसका अब कुछ उपाय नहीं"। अर्थात् सात वर्ष की अवस्था में ही उस अमित लाड़ प्यार ने क्लाइव के स्वभाव को बिगाड़ कर, उसको अच्छे मनुष्यों के सहनशीलता, विनय परोपकारता आदि सद्गुणों से वञ्चित कर दिया ।

अतएव हम बालक क्लाइव का यह दुर्भाग्य ही समझते हैं कि वह बाल्यावस्था में अपने माता पिता के निरीक्षण में न रह सका और न उस पर उस कोमल अवस्था में उसकी माता के सद्गुणों का प्रभाव ही पड़ पाया । क्योंकि यह प्रायः देखा जाता है कि जो बालक स्वभाव से ही बड़ा ढीठ और नटखट होता है और किसी के कहने में नहीं रहता वह अपने पिता माता की शिक्षा और शासन से अवश्य दब जाता है । माता पिता की शिक्षा और शासन से क्लाइव का बड़ा ही उपकार होता-क्योंकि वह स्वयं शासित हो कर बाल्या-

वस्था में ही यदि शासन से परिचित हो जाता तो पीछे से उसके चाल चलन पर जो बड़ा भारी कलङ्क लगाया गया वह कलङ्क कदाचित् कभी न लगता।

इतना होने पर भी क्लाइव के शिक्षा गुरुओं और पोषकों की राय क्लाइव के विषय में बुरी नहीं थी। उसके आरम्भिक शिक्षक डाक्टर ईटन ने क्लाइव के सम्बन्ध में यह भविष्य-द्वाणी कही थी कि यदि क्लाइव मनुष्य की अवस्था तक पहुंच सका और उसको स्वतन्त्रता पूर्वक अपनी बुद्धि के अनु-सार काम करने का अवसर मिला तो वह बड़ा प्रतापी होगा और उसके समान बहुत कम लोग गणनीय होंगे।

वास्तव में कालान्तर में हुआ भी ऐसा ही। यद्यपि दोष-शून्य नहीं तथापि ऐसे लोगों की संख्या भारतवर्ष के प्रचलित अङ्गरेजी इतिहासों में बहुत कम है जो क्लाइव से बढ़ कर प्रतापी हुए हों। अर्थात् पिता का दुतकारा, निरावलम्ब, निराश्रय, निस्सहाय एक सामान्य बालक विना किसी की सहायता के अपने ही उद्योग और अपनी ही चतुराई से मिस्टर क्लाइव से लार्ड क्लाइव हुआ हो, अस्तु। डाकृर ईटन से अनुभवी शिक्षक के पास भी क्लाइव यदि बराबर शिक्षा पाता तो भी सम्भव था कि कदाचित् उसके स्वभाव में परिवर्त्तन होता-पर ऐसा भी न हुआ। ग्यारहवर्ष की उमर में क्लाइव मारकेट ड्रेटन के एक स्कूल में वि-द्याभ्यास के लिये भेजा गया और सन् १७३७ ई० में वह टेलर नाम के एक सौदागर के स्कूल में पढ़ने लगा। थोड़े ही दिनों बाद इस स्कूल से भी नाम कटवा वह तीसरे स्कूल में जो हैमिल हैम्प-स्टेड में था पढ़ने लगा। इस स्कूल में उसने सन् १७४३ ई० तक विद्याध्ययन किया।

जिस समय क्लाइव मारकेट ड्रेटन के स्कूल में था उस समय की एक विचित्र जनश्रुति उसके विषय में, विलायत में प्रचलित है। कहते हैं क्लाइव ने इस छोटे से स्थान के कतिपय विद्याभ्यास से विरत अकर्मण्य बालकों की एक डकैती जमात स्थापित की थी। उस जमात के भय से वहां के बाज़ार के प्रत्येक दूकानदार को, अपनी दूकानों की खिड़कियों के कांचों की रक्षा के निमित्त उस जमात को नियमित रूप से दो पैसे और कुछ सेव देने पड़ते थे।

बात जो कुछ रही हो और विलायत वासियों का इस दन्त कथा पर भले ही विश्वास हो पर हम ऐसी बातों पर कम विश्वास करते हैं। द्वितीय जार्ज के शासन काल में एक छोटे से छोटे बाज़ार के दूकानदारों में भयभीत हो इस भांति घूस देने की प्रथा प्रचलित थी-इसमें हमको पूर्ण सन्देह है। हां जिस प्रकार लड़कों के साथ लोग अब भी कभी कभी आमोद प्रमोद के लिये हंसी किया करते हैं वैसे ही यदि ड्रेटन के दूकानदार भी इन लोगों के साथ हँसी करते रहे हों, तो कदाचित् यह दन्तकथा भी किसी अंश में सत्य हो सक्ती है।

इतना हम अवश्य कहैंगे कि बात चाहैं जो कुछ रही हो पर इस जनश्रुति में क्लाइव के चरित्रों का एक प्रकार से चित्र ठीक ठीक खींचा गया है। क्योंकि क्लाइव निस्सन्देह पीछे से दुखदायी किन्तु प्रतिभावान् और अग्रगन्ता (Leader) होने की योग्यता सम्पन्न मनुष्य निकला। क्लाइव निर्भय और उदण्ड तो था ही इसीसे उसका मन पढ़ने लिखने में बहुत कम लगता था।

ऐसा निर्भय और लापरवाह बालक आगे क्या करेगा क्लाइव के बाप को इसकी चिन्ता सताने लगी। पिता ने इस बात का प्रयत्न किया कि राबर्ट वकील हो-पर जो बालक आरम्भ से स्वतन्त्रता भोग रहा है वह भला कब पिता की आज्ञा के वशवर्ती हो काम करने लगा! अन्त में क्लाइव के पिता ने उसको वकील बनाने का विचार छोड़ दिया। राबर्ट को वकील बनाने का विचार तो छोड़ दिया पर उससे काम क्या लिया जाय इस बात की चिन्ता क्लाइव के पिता को सदैव बनी रही। अन्त में क्लाइव के पिता ने उसको "ईस्ट इण्डिया कम्पनी" में क्लर्क के काम पर नियुक्त करवा, भारतवर्ष भेजना निश्चित किया। इस समय क्लाइव की अवस्था केवल अठारह वर्ष की थी।

जब क्लाइव को कम्पनी में चालीस रुपये मासिक की नौकरी मिली तब उसके कुटुम्बियों को वैसी ही प्रसन्नता हुई जैसी प्रसन्नता इन दिनों हम लोगों को अपने किसी आत्मीय के निकृष्ट सेवा वृत्ति पाने पर होती है। पर क्लाइव के कुटुम्बियों को उसके नौकर हो जाने की प्रसन्नता नहीं थी किन्तु उन लोगों की प्रसन्नता का कारण यह था कि उनके कुटुम्ब के तेरह लड़के लड़कियों में से सब से बड़े और उत्पाती बालक को नौकरी मिल गई और उन लोगों को अब आशा होने लगी थी कि उनसे अलग रह कर और परतन्त्रता की रज्जु में जकड़ा जाकर क्लाइव का कुछ न कुछ कल्याण अवश्य होगा।

इसमें सन्देह नहीं कि क्लाइव अपने माता पिता का एक बड़ा भारी सङ्कट काट कर उनसे कुछ दिनों के लिये

पृथक हो गया, परन्तु उसके पिता को यह विश्वास कदापि नहीं था कि क्लाइव का भविष्य क्लर्कशिप में चमकेगा। राबर्ट के पिता का अनुमान था कि क्लाइव का भाग्योदय सामरिक विभाग में ही होगा। अन्त में क्लाइव के पिता का उक्त अनुमान सत्य भी निकला। क्योंकि क्लाइव के भाग्योदय का प्रधान और मुख्य कारण उसका वीरोचित साहस ही था। यद्यपि क्लाइव स्वभाव ही से सामरिक कार्यों में अनुरक्त सा रहता था; तथापि उसके विषय में केवल यह कह देना अनुचित जान पड़ता है कि वह केवल समर-कुशल ही था।

क्लाइव-अति दुलारा क्लाइव, पिता माता का अवज्ञाकारी क्लाइव और साहसी क्लाइव, अपने पिता माता को छोड़, बाल्यावस्था के साथियों का मोह तोड़ और स्वदेश को छोड़ सन् १७४३ ई० की ग्रीष्म ऋतु में इङ्गलेण्ड से मदरास के लिये-जहाज़ पर सवार हो रवाना हुआ।



द्वितीय अध्याय

——:o:——

प्रकृतिः खलु सा महीयसः
सहते नान्यसमुन्नतिं यया।

(क्लाइव की समुद्रयात्रा-ब्रेजिल में नौ मास रह कर पुर्त्तगाली भाषा सीखना-मदरास में क्लाइव-निरावलम्ब क्लाइव-नौकरी पर क्लाइव-सेक्रेटरी से विवाद—क्लाइव का स्वदेश प्रेम-इङ्गलेन्ड और फ्रांस में झगड़ा-मदरास पर फरासीसियों का आक्रमण-डूप्ले की आज्ञा से मदरास का पतन-अङ्गरेज़ों का मदरास छोड़ कर भागना-भा

की शोचनीय दशा-कम्पनी के सर्जन द्वारा बादशाह की लड़की का आरोग्य होना-कम्पनी को कोठी बनाने की आज्ञा मिलना-क्लाइव का आत्मरक्षा के लिये युद्ध करना-)

क्लाइव स्वदेश छोड़कर प्रथम बार ही विदेश को चला था। यह उसकी विदेश यात्रा बड़ी लम्बी और कष्ट प्रद थी। जिस जहाज़ में क्लाइव सवार हुआ था वह जहाज़ असल में इतनी लम्बी यात्रा के योग्य भी नहीं था। अतएव यह जहाज़ ब्रेजिल पहुंचते पहुंचते मरम्मत करने योग्य होगया। कदाचित् हमारे पाठक यह सुनकर हैरान हुए होंगे कि मदरास के लिये प्रस्थापित जहाज़ ब्रेजिल क्या करने गया था? पर ऐसी शङ्का उठाने वालों को जानना चाहिये कि जिस समय की बात हम लिख रहे हैं उस समय इङ्गलेण्ड की जैसी आर्थिक दशा आज है वैसी उन दिनों नहीं थी। उन दिनों भारतवर्ष का सरल मार्ग बनाने को इङ्गलेण्ड असमर्थ था। साथ ही विचारशील पाठक उस समय के जहाज़ों की दशा पर भी विचार करें। उन दिनों इङ्गलेण्डवालों को पृथिवी के भिन्न भिन्न प्रान्तों में आवागमन के लिये बड़ा चक्कर काटना पड़ता था। हमारे पाठक यह जानकर और भी आश्चर्यान्वित होंगे कि जिस जहाज़ पर क्लाइव सवार था वह जहाज़ ब्रेजिल पहुंचते पहुंचते मरम्मत के योग्य होगया और उसकी मरम्मत करते करते ब्रेजिल में नौ मास व्यतीत हो गये। उन नौ मासों के भीतर क्लाइव ने अपने पास का सब धन जो वह घर से लाया था खर्च कर डाला। किन्तु वहां नौ मास रह कर उसने पुर्त्तगाली भाषा में कुछ अभ्यास कर लिया जिससे उसको पीछे से बहुत कुछ सहायता मिली।

किसी तरह जहाज़ ब्रेजिल से आगे बढ़ा पर 'केप' आते आते उस जहाज़ को मरम्मत के लिये पुनः रुक जाना पड़ा।

इसी तरह कई बार कई स्थानों पर ठहरते ठहरते और नाना प्रकार की आपत्तियों को झेलते झेलते क्लाइव ने जहाज़ में बैठे बैठे दूसरे वर्ष की वसन्त ऋतु में मदरास के दर्शन किए। अर्थात् जिस मार्ग को लोग इन दिनों दो सप्ताह में समाप्त करते हैं उस इङ्गलैण्ड और भारतवर्ष के बीच वाले मार्ग को क्लाइव ने अठारह मास में पूरा कर पाया। जब क्लाइव ने मदरास के बन्दर में पदार्पण किया तब न तो उस भावी भारत के जेता के लिये फोर्ट सेंट जार्ज से तोपों की सलामी दागी गयीं, न "वैलकम" की ध्वजा पताकाओं से मदरास की गलियों की शोभा बढ़ाई गई, न मदरास म्यूनिसीपैलिटी ने अभिनन्दन पत्र अर्पण कर भावी जेता की अभ्यर्थना करते हुए चापलूसी की बातें कहीं और न मदरास निवासियों ने आकर क्लाइव को फर्शी सलामें कीं। यह उस समय किसको ज्ञान था कि यह कथड़ी में छिपा हुआ रत्न एक दिन इस देश का जेता और इङ्गलैण्ड का गौरव समझा जायगा।

मदरास में पहुंच कर क्लाइव ने देखा कि उस समय कम्पनी के कर्मचारियों और ऐजेण्टों की सुवृहत्, उच्च, स्वच्छ अट्टालिकाओं से, जो समुद्र तट पर सघन बगीचों के बीचे बीच खड़ी थीं नगर की अनुपम शोभा हो रही है महीनों ले बराबर समुद्र में रहकर जब क्लाइव ने मदरास के मनोहारी दृश्य को, वहां के गेहुंआ रङ्ग के निवासियों को और समुद्रतट की नैसर्गिक शोभा को देखा तब उसको साश्चर्य आनन्द हुआ।

क्लाइव ने जहाज़ छोड़ जब पृथिवी पर पदार्पण किया तब उसके पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी। पाठकों के

स्मरण होगा कि क्लाइव ने अपने पास का सब धन तो ब्रैजिल में नौ मास रहकर ही व्यय कर डाला था । मार्ग में द्रव्य की आवश्यकता होने पर उसने जहाज़ के कपतान से ऋण स्वरूप कुछ धन लिया था और मासिक वेतन में से थोड़ा थोड़ा करके चुका देने का कपतान को वचन दिया था।

उन्नीस वर्ष की अवस्था में इस साहसी चञ्चल नवयुवक को वह काम करना पड़ा जिसको वह हृदय से नापसन्द करता था । गवर्नर के सेक्रेटरी की आज्ञा के अधीन होकर सुबह से शाम तक नित्य कलम घिस कर इकतीसवें दिन चालीस रुपये पाना—भला क्लाइव से साहसी नवयुवक को कब पसन्द आने लगा ! उसकी इस शोचनीय दशा में, असहाय की सहाय, असन्तोषियों का सन्तोष, निर्धनियों का धन और निरावलम्बियों का एक मात्र अवलम्ब स्वरूप आशा—क्लाइव की शुष्क हृदय मरुस्थली में वारि सिञ्चन करती थी। वह आशा यही थी कि एक न एक दिन कम्पनी के अन्य कर्मचारियों की भांति वह भी अपने निज का कोई व्यवसाय करके अपनी आशा को पूर्ण करने में सफल मनोर्थ हो सकेगा ।

मिष्टर होमस् क्लाइव की इस दुःखावस्था के सम्बन्ध में लिखते हैं :—

"Such a position, to a youth of his nature, must have been galling indeed; and in estimating his character and his life, this peculiarly painful condition, so different from that of scores of young Indian Civil Servants, to-day, and so calculated to embitter and depress him, must be remembered."

—Four Heroes of India.

क्लाइव की गांठ में न तो धन था और न विपत्ति में सहाय करने वाला उसका कोई परिचित मित्र ही मदरास में था । घर

२

से चलते समय पिता ने परिचय के अर्थ, मदरास-स्थित अपने एक मित्र के नाम क्लाइव को एक पत्र दिया था-किन्तु, जब मनुष्य को कष्ट मिलने वाला होता है, तब घटनायें भी उसके प्रतिकूल ही हुआ करती हैं। सो क्लाइव के मदरास पहुंचने के पूर्व ही क्लाइव के पिता के वह मित्र मदरास से इङ्गलैंण्ड के लिये रवाना हो चुके थे और क्लाइव की लज्जावनत तथा अभिमानयुक्त प्रकृति मित्र बनाने और परिचितों की संख्या बढ़ाने में वाधक थी। यहां तक कि कई मास लों, मदरास में क्लाइव का कोई मित्र ही नहीं था।

इसमें सन्देह नहीं की ऐसी उग्र और असहिष्णु प्रकृति के वशीभूत होना क्लाइव के चरित्र में लाञ्छन है। यद्यपि वाल्यावस्था से पड़े हुए इन दुस्स्वभावों के लिये किसी अंश में क्लाइव मार्जनीय है; तथापि इसके लिये वह अवश्य दोषी है कि ज्ञानवृद्धि के साथ ही साथ वह अपनी कुत्सित प्रकृति को जानकर भी न सुधार सका। कहते हैं कि एक अवसर पर क्लाइव ने गवर्नर के सेक्रेटरी को कुछ कटुवाक्य कह डाले, जिसके लिये गवर्नर के निर्देशानुसार उसको सेक्रेटरी से क्षमा मांगनी पड़ी। वैसे चाहे क्लाइव गवर्नर की आज्ञा को न भी मानता, पर जब गवर्नर ने उसको नौकरी से छुड़ा देने की धमकी दी, तब निरुपाय हो उसको क्षमा मांगनी पड़ी। इस घटना के कुछ ही समय पश्चात् जब उस साधुस्वभाव सेक्रेटरी ने क्लाइव से अपने साथ भोजन करने के लिये कहा, तब आपने बड़ी अकड़ और रुखाई के साथ उत्तर दिया "महाशय ! नहीं, मुझको आपके साथ खाने की आज्ञा नहीं हुई।"

'No, Sir, I have not been told to dine with you.'

उस समय चाहे जो कुछ रहा हो—पर ऐसी घटनाओं का क्लाइव के मन और प्रकृति पर प्रभाव अवश्य पड़ा। फल यह हुआ कि उसने मर्मस्पर्शी शब्दों में अपने घर को एक पत्र लिखा जिसमें उसने इङ्गलैण्ड लौट जाने की उत्कट उत्कण्ठा प्रकट की और साथ ही अपने कुटुम्बियों और सम्बन्धियों के प्रति कुछ मोह ममता का भी निदर्शन दिया। उसने अपने पत्र में लिखा "जब से मैं अपने देश से विदा होकर चला हूं तबसे आजलों मेरा एक दिन भी प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत नहीं हुआ। ठहर ठहर कर जब मुझे अपने प्यारे देश इङ्गलैण्ड का स्मरण आता है, तब मेरे मन की एक विलक्षण दशा हो जाती है" क्लाइव ने अपने पत्र में मैंनचेष्टर को अपनी कामनाओं का केन्द्रस्थल बतलाते हुए लिखा था कि यदि उसको कहीं एक बार भी स्वदेश को विशेष कर मैंनचेष्टर को देखने का सौभाग्य प्राप्त हो तो वह अपनी सर्व्वोच्च अभिलाषाओं को पूर्ण हुई समझैगा। धन्य है यह स्वदेशानुराग! **धन्य है यह स्वदेश प्रेम!! धन्य है यह सर्व्वोच्च अभिलाषा!!!** हे स्वदेशप्रेम! जब तुमने क्लाइव से उदण्ड प्रकृति नवयुवक के भी हृदय में जाकर अपना राज्य स्थापित किया तब तुम सहृदय धर्मभीरु भारतवासियों के हृदय मानसरोवर में एक बार स्नान कर अपनी आत्मा का प्रायश्चित क्यों नहीं करते? वास्तव में जिस जाति का स्वदेश, स्वजाति और स्वधर्म में अनुराग है वह जाति मृत्युलोक में रहकर भी स्वर्गसुख का अनुभव कर रही है। अङ्गरेज जाति का यह स्वदेश स्वजाति और स्वधर्म्मानुराग ही है जो उनकी दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करके उनको सभ्यता के उच्चशिखर पर अवस्थित कर रहा है। जिस

मनुष्य में स्वदेशानुराग है, स्वजाति से प्रेम है और स्वधर्म में निष्ठा है वह मनुष्य-मनुष्य नहीं है वह पूजनीय भूदेवता है। पाठको ! इसी स्वदेश और स्वजाति के अनुराग में अनुरक्त और व्रती हो राबर्ट क्लाइव लार्ड क्लाइव होगा।

राबर्ट क्लाइव पर इन घटनाओं का तो प्रभाव पड़ता ही गया, परन्तु उसके प्रकृतिपरिवर्तन का एक और भी कारण बतलाया जाता है। कहते हैं मदरास के गवर्नर ने क्लाइव को अपने पुस्तकालय में आने जाने का अधिकार दे दिया था और क्लाइव ने इस अधिकार को प्राप्त कर लाभ भी उठाया।

क्लाइव को जब कलम रगड़ते रगड़ते दो वर्ष बीत गये तब एक ऐसी घटना हुई कि उसके जीवन का वह वर्तमान दृश्य सहसा पलट गया। अचानक फरासीसियों ने मदरास को घेर लिया और नगर तथा फोर्टजार्ज की रक्षा के लिये लिखा पढ़ी होने लगी। क्लाइव के उद्योग पर्व के प्रथम अध्याय का श्रीगणेश यहीं से समझना चाहिये। इस घटना का मूल और आदि कारण उस समय आष्ट्रिया के उत्तराधिकार का झगड़ा था। उन दिनों इङ्गलेण्ड और फ्राँस में विद्वेषाग्नि भड़क रही थी। जिस समय का यह वृत्तान्त है उस समय इङ्गलेण्ड के सिंहासन पर द्वितीय जार्ज आसीन थे और वह मेराया थारसा Maria Theresa के मित्र थे। फ्राँस के सम्राट उस समय उनके विपक्षी हुए। उस युद्ध का आरम्भ तो यूरोप में हुआ पर धीरे धीरे वह युद्ध जहां जहां इन दोनों के अधिकार थे प्रायः उन सभी जगहों में फैल गया। लेबोरडाने Labourdonnaye ने जो उस समय मारीशस का गवर्नर था—मदरास पर सेना लेकर चढ़ाई की और

उसको घेर लिया। किन्तु उसने यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि मदरास तभी तक फ्रांस के घिराउ में रहेगा जब तक उसको हर्जाना न मिल जायगा। और यह हर्जाना भी नाम मात्र का ही था।

जब इसकी खबर पाण्डिचरी स्थित फ्रेंच गवर्नर को लगी, तब उससे लेबोरडाने की यह विजय न सही गयी, क्यों कि डूपले लेबोरडाने से इर्ष्या रखता था। प्रसङ्ग आपड़ने पर कहना पड़ता है कि उन दिनों कार्यकर्त्ताओं की परस्पर की इर्ष्या और द्वेष के कारण ही फ्रांस का आधिपत्य इस देश पर न जम पाया; नहीं तो जिस समय का हाल हम लिख रहे हैं उस समय फ्रांस का दबदबा इस देश में बहुत अधिक बढ़ गया था। एक तो डूपले लेबोरडाने का उत्कर्ष नहीं सह सका और दूसरे उसको यह भी अभीष्ट नहीं था कि अङ्गरेजों की मदरास में जड़ जमें। अतः उसने यह प्रकट किया कि इस देश में वह फ्रांस की ओर से गवर्नर है और फरासीसियों द्वारा इस देश पर उसको पूर्ण अधिकार प्राप्त है। अतएव उसकी आज्ञानुसार मदरास का पतन हुआ और डूपले ने स्वयं फ्रांस की विजय पताका उड़ाते हुए नगर के प्रतिष्ठित लोगों और वहां के गवर्नर के साथ बड़ी धूम धाम से नगर की गलियों में भ्रमण किया। बाद को अपनी ओर से वहां एक फ्रेंच गवर्नर भी नियुक्त किया।

इन भयानक घटनाओं से अङ्गरेजों को अपनी इच्छा के विरुद्ध मदरास परित्याग करना पड़ा। जो सामर्थवान् थे वे प्रकट अथवा भेष बदल नगर छोड़ कर भागने लगे। इन भागने वालों में एक क्लाइव भी था। वह मुसलमान के भेष

में अपने एक मित्र मास्कलीन के साथ भाग निकला । इस बीच में उसने मदरास में अपने मित्र भी बना लिये थे। परन्तु यह मास्कलीन पीछे से उसका साला हुआ था ।

मदरास के समीप अङ्गरेजों के अधिकार में एक दूसरा किला कडुलोर में था, जिसका नाम सेण्ट डेविड़ था । उन दोनों ने इसी फोर्ट का मार्ग पकड़ा और वहां पहुँच कर कुछ समय लों वास किया ।

हमारे पाठक अब जरा भारतवर्ष की उस समय की दशा का स्मरण करें और घटना सूत्रों के सहारे अपने देश के भिन्न भिन्न प्रान्तों में मानसिक विचरण करें । जो मुगल– साम्राज्य (The Great Mogul Empire) भारतवर्षीय राजाओं की सम्पत्ति पर पानी फेर कर स्थापित कीया गया था और जिसकी राजधानी उस समय दिल्ली में थी वही मुगल–साम्राज्य अधः पात के पूर्व लक्षणों से युक्त हो चला था । डच, पुर्त्तगाली, फरा-सीसी और अङ्गरेज–विदेशीय जातियों के लोग व्यापार द्वारा इस देश के रहने वालों से हेल मेल बढ़ाकर अपना मतलब गाठने की धुनि में लगे हुए थे ।

इन विदेशी व्यापारियों में अङ्गरेज यहां सबसे पीछे आये । जिस समय का यह हाल है उस समय इङ्गलेण्ड में काली मिर्च तथा अन्य हिन्दुस्तानी मसाले अधिक मूल्यवान पदार्थ समझे जाते थे । अङ्गरेज व्यापारी इन वस्तुओं को यहां खरी-दते थे और विलायती चटकीली भड़कीली चीजों को यहां बेचते थे । इतिहास पढ़ने वाले जानते हैं कि सन् १६१२ ई० में अङ्गरेज व्यापारियोँ को सबसे प्रथम दक्षिण के सूरत नगर में व्यवसाय करने के अर्थ कोठी बनाने की आज्ञा, उस समय

के मुगल बादशाह जहांगीर से मिली थी। किन्तु नहीं मालूम मिष्टर होमस ने इस आज्ञा को क्यों अङ्गरेजों का अपमान सूचक बतलाया है (The almost contemptuous permission.)। सूरत में अङ्गरेज व्यापारियों की कोठी बनने के अट्ठाइस वर्ष बाद एक अङ्गरेज जर्राह ने जिसका नाम निश्चित करने में विलायती लेखकों में अब मत भेद है—मुगलसम्राट से अङ्गरेज व्यापारियों को हुगली नगर में; जो अब कलकत्ते के नाम से प्रसिद्ध है, ठहरने के लिये परवानगी हासिल की।

कहते हैं कि मि० बौड़न अङ्गरेज जर्राह ने मुगल बादशाह की असाध्य रोग से पीड़ित लड़की की चिकित्सा कर उसे आरोग्य किया। इस पर बादशाह सलामत जर्राह पर अत्यन्त प्रसन्न हुए और पुरस्कार मांगने को कहा। यह स्वदेश भक्त सर्जन यदि चाहता तो अपने लिये इस संसार में अतुलनीय भोग करने की उत्तम से उत्तम सामग्री बादशाह से पुरस्कार में मांग सक्ता था। क्यों कि उस समय के बादशाह जिस पर प्रसन्न होते थे उसको मान प्रतिष्ठा अथवा पुरस्कार देते समय इस बात का भी पूर्ण विचार कर लेते थे कि उनकी दी हुई प्रतिष्ठा पाने वाले की पीढ़ी दर पीढ़ी तक बनी रहे। उस समय केवल नाम मात्र की राय बहादुरी अथवा खान बहादुरी पाकर प्रतिष्ठा पाने वाले को इस कोरी प्रतिष्ठा की प्रतिष्ठा बनाये रखने की स्वयं चिन्ता नहीं करनी पड़ती थी। परन्तु, उस विशाल कीर्त्ति शाली स्वदेशभक्त तथा स्वजातिप्रेमी सर्जन ने क्षणभङ्गुर अपने शरीर को तुच्छ समझ पुरस्कार स्वरूप—हुगली में बसकर अङ्गरेज व्यापारियों की व्यवसाय वृद्धि के अर्थ केवल आज्ञा ही प्राप्त की।

इतिहास पढ़ने वालों को मालूम होगा कि सन् १६०० ई० में इङ्गलेण्ड निवासियों ने भारतवर्ष में व्यापार करने के लिये "ब्रिटिश ईष्ट इण्डिया" नाम की एक व्यापार-समिति [कम्पनी] स्थापित की थी। हमारे देशवासियों में केवल बाप बेटा, अथवा भाई भाई ही मिल कर व्यापार करना जानते हैं। शिवचरणलाल रामचरणलाल, गोविन्दप्रसाद गयाप्रसाद, मूलचन्द रामप्रसाद आदि केवल युग्म नाम की कोठियां अथवा दुकानें तो इस देश में एक दो नहीं असंख्य मिलेंगी, पर वास्तव में अभी भारतवर्ष में "ज्वाइण्ट ष्टाक व्यापार" समितियों का एक प्रकार से पूर्ण अभाव है। इतने बड़े देश में यदि बीस पचीस ऐसी बड़ी कम्पनियां हुईं भी तो न होने ही के बराबर हैं। इसका कारण या तो यही है कि भारतवासी अभी ज्वाइण्ट ष्टाक कम्पनियों के स्थापित करने के लाभ को भली भांति नहीं समझ पाये हैं, अथवा एक दो ऐसी कम्पनियों में प्रबन्ध की असावधानी के कारण और क्षुद्र प्रकृति स्वार्थलोलुप कर्मचारियों के कुकृत्यों से लाभ के बदले बरावर हानि उठाकर यहां वालों ने कम्पनियों को ढकोसला समझ रखा है। परन्तु वास्तव में बात यह है कि बहुत से थोड़ी थोड़ी पूजी के धनी यदि कोई बड़ा व्यापार किया चाहें तो ज्वायण्ट ष्टाक कम्पनी से बढ़कर ऐसे लोगों के लिये आशातीत लाभ उठाने का अन्य कोई उपाय नहीं है अस्तु,।

असल में इङ्गलेंड और भारतवर्ष के बीच व्यापार सन् १५९१ ई० में आरम्भ हो गया था। सब से प्रथम लैंकेष्टर नाम का एक अङ्गरेज व्यापारी सन् १५९१ ई० में तीन जहाज लेकर भारतवर्ष के लिये रवाना हुआ था। किन्तु इन तीन

जहाज़ों में से यहां तक केवल एक ही जहाज़ पहुंच पाया। यहां पहुंच कर बचे हुए उस एक जहाज़ के मल्लाहों के बीच परस्पर में झगड़ा होते होते बलवा होगया और बेचारे कप्तान लैंकेष्टर को एक विदेशी जहाज़ में बैठकर घर लौट जाना पड़ा। जब कप्तान लैंकेष्टर इङ्गलैण्ड पहुंचा और वहां वालों को यहां का सब वृत्तान्त सुनाया, तब वहां वालों ने यहां भेजने के लिये व्यापारी जहाज़ों का एक बेड़ा तयार किया और भारतवर्ष में व्यवसाय करने के लिये एक कम्पनी स्थापित की। इस कम्पनी का नाम "ब्रिटिश ईष्ट इण्डियन कम्पनी" रखा गया। क्वीन इलिजबेथ के राज्य काल में, सबसे प्रथम सन् १६०० ई० में इस कम्पनी को व्यापार करने के लिये अधिकार पत्र (चारटर) प्राप्त हुआ। पीछे से कई बार वह पुष्ट भी किया गया। जिस समय यह कम्पनी स्थापित हुई थी उस समय इस कम्पनी का मूल धन पौने लाख पाउण्ड से भी कम अर्थात केवल बहत्तर हज़ार पाउण्ड था। इस कम्पनी ने प्रथम चार जहाज़ों में विलायती माल भर कर भारतवर्ष को भेजा। इस प्रथम बार के उद्योग में ही कम्पनी को बहुत लाभ हुआ और उसकी सम्पत्ति बढ़ी। कहते हैं सन् १६८३ ई० में उस कम्पनी ने सौ पाउण्ड के माल को पाच सौ पाउण्ड में बेचा—अर्थात् जिस वस्तु को कम्पनी ने इङ्गलैण्ड में एक पाउण्ड को खरीदा था उसी वस्तु को इस देश में उसने असली मूल्य से चार गुना अधिक मूल्य लेकर बेचा। इस कम्पनी की श्रीवृद्धि देखकर इङ्गलैण्ड के अन्य व्यवसाइयों का उत्साह बढ़ा और सन् १६९८ ई० में एक दूसरी व्यापार—समिति स्थापित हुई। परन्तु जब इन दोनों कम्पनियों के अध्यक्षों ने देखा कि समान उद्देश्य रख कर एक ही देश में

दो कम्पनी होने से एक प्रबल शक्ति का ह्रास होता है, तब सन् १७०२ ई० में, तृतीय विलियम के राज्य काल में वे दोनों कम्पनियां मिलकर एक हो गयीं। उस संयुक्त कम्पनी का नये सिरे से एक नया अधिकारपत्र (Charter) लिखा गया। इस नवीन अधिकारपत्र के नियमें के अनुसार कम्पनी को इस देश में शस्त्रधारी रक्षकों को नियुक्त करने और आत्म-रक्षा तथा शान्त-स्थापित करने के लिये विग्रह करने का भी अधिकार प्राप्त हुआ। इस चारटर के पास होने के पूर्व अङ्गरेज व्यापारी मदरास में अपनी स्थिति दृढ़ कर चुके थे और द्वितीय चार्लस को पुर्त्तगाल देश की कैथराइन आफ ब्रेगेन्ज़ा (Catherine of Braganza) के साथ विवाह करने से बम्बई नगर अङ्गरेजों के अधिकृत हो चुका था।

जिस समय फ्रेंच गवर्नर डूपले ने मदरास को अङ्गरेजों से छीड़ा उस समय अङ्गरेजों के अधिकार में यहां के नगरों में से कड्डलोर जो कारोमण्डल कोष्ट में अवस्थित है तथा बङ्गाल-और करनाकट के बीच का विजगापट्टम—ये दो नगर थे। मदरास का सेण्टजार्ज क़िला, कड्डलोर का सेण्टडेविड़ दुर्ग और कलकत्ते का फोर्ट विलियम नामक इन तीन किलों पर भी अङ्गरेजों का पूर्ण अधिकार था।

अभी तक अङ्गरेजों का विचार भारतवर्ष में केवल शान्त-पूर्वक व्यवसाय ही करने का था। ये लोग लड़ाई लड़कर इस देश को अपने अधिकार में कर लेने के प्रयासी नहीं थे। यद्यपि इन लोगों के पास लड़ाके सिपाही थे; तथापि कम्पनी के कर्मचारी अपने को बनिहाई कारिन्दे ही समझते थे। अतएव यह आश्चर्य की बात नहीं समझनी चाहिये कि ब्रिटिश जाति

सी पराक्रमी प्रताप शालिनी जाति को फरासीसी मारीशस द्वीप के गवर्नर लेवोरडाने ने बड़ी सुगमता से जीतकर मदरास को अपने अधीन कर लिया। किन्तु पाठक आगे देखेंगे कि डूपले की आत्मोन्नति की तृष्णा ने घटना के प्रवाह को एक दम फेर दिया। डूपले मदरास का पतन करके ही सन्तुष्ट नहीं हुआ, उसने एक सेना तयार कर सेण्टडेविड़ दुर्ग को, जहां मदरास से भागकर अङ्गरेजों ने शरण ली थी-जा घेरा। अब दुर्ग में अविरुद्ध अङ्गरेजों को आत्मरक्षा के लिये विवश होना पड़ा। आत्मरक्षा के उपायें को सोचने विचारने में नवयुवक उत्साही क्लाइव का सर्द माथा तप्त हो गया। उस होनहार पराक्रमी नवयुवक ने, क्लार्क होने पर भी, लेखनी छोड़ हथियार थामना सहर्ष स्वीकार किया और विषम युद्ध होने पर आत्मरक्षा के लिये क्लाइव की देदीप्यमान सङ्गीन दुर्धर्ष पराक्रम के साथ शत्रु की सेना को नाश करने लगी।

---:o:---

तृतीय अध्याय।

प्रौढ़ं विक्रान्तमासीद्वनइवभवताशूरशून्येरणेऽस्मिन्

(फरासीसियों की पराजय—क्लाइव का जूआ खेलना—द्वन्द युद्ध—अङ्गरेज और फरासीसियों में सन्धि—मदरास पर अङ्गरेजों का दूसरी बार अधिकार—क्लाइव पुन: क्लार्कशिप पर—भारतवर्ष में मुसलमानी राज्य की दुर्दशा—निजामत के लिये झगड़ा-मिर्जाशाह और चन्दा साहब का झगड़ा-डूपले की कुटिल नीति—करनाटक की नवाबी—आरकट युद्ध की तयारी और उस पर अङ्गरेजी अधिकार।)

---:o:---

फरासीसियों की पल्टन ने यद्यपि सेण्टडेविड़ दुर्ग को घेर लिया, तथापि जिस दुर्ग की रक्षा के लिये स्वजाति

का गौरव समझने वाला और स्वदेशानुरागी क्लाइव कटिबद्ध था उस दुर्ग पर अधिकार कर लेना सहज बात नहीं थी। जब तक अङ्गरेजी एडमिरल ग्रिफिन समुद्र तट पर न पहुंचे, तब तक दुर्ग के भीतर से फरासीसियों की दुर्ग लेने की सब चेष्टाओं को अङ्गरेजों ने निष्फल किया। ज्योंहीं डूपले ने एडमिरल ग्रिफिन के आने के समाचार सुने त्योंही उसने उस स्थान से खसकना आरम्भ किया। सेण्टडेविड़ दुर्ग की रक्षा करने वालों में क्लाइव ने सब से अधिक ख्याति पायी और साथ ही उस अप्रतिम वीरता दिखलाने के पुरस्कार में क्लाइव को कम्पनी की ओर से प्रतिष्ठा सूचक एक पद मिला। किन्तु वास्तव में क्लाइव की वीरता की क़दर करने वाले पुरुषों का अभाव था, और यही कारण था कि उसका अब भी उस क्लार्कशिप से पीछा न छूटा। काम पड़ने पर क्लाइव लड़ाई लड़ता और शान्त के समय कम्पनी की कोठी में क्लार्कशिप भी करता।

यह सब होने पर भी क्लाइव के भाग्योदय के दिवस समीप आरहे थे। एक ओर तो उसके वीरोचित साहस और सहनशीलता की चर्चा हो रही थी दूसरी ओर उसको एक बड़ा भारी दुर्व्यसन पड़ गया था। यह दुर्व्यसन ऐसा वैसा नहीं था। इस दुर्व्यसन में लिप्त होने से जो भीषण परिणाम होता है उसको समझाने के लिये हिन्दू इतिहास पुराणों में भी शिक्षाप्रद उदाहरण दिये गये हैं। किन्हीं कारणों से क्यों न हो—जिस महा गर्हनीय दुर्व्यसन में पड़ कर महाराज युधिष्ठिर जैसे राज राजेश्वर अपनी पत्नी द्रौपदी तक को गवा बैठे, जिस दुर्व्यसन के वशीभूत हो राजा नल सर्वस्व को हार अपनी प्रियतमा दमयन्ती के साथ, असह्य दारुण कष्टों को सहते हुए, महान

कष्टप्रद अरण्यों में विचरण कर—अन्त में दासत्व वृत्ति स्वीकार करने के लिये विवश हुए—उसी महागर्हनीय दुर्व्यसन द्यूत के वशीभूत हो क्लाइव ने अपने पास का बहुत सा धन निकाल दिया। हमारे विचारशील इतिहासवेत्ता पाठक जानते होंगे कि कलि के आरम्भ में इस सभ्य शिरोमणि भारत के उत्कर्ष को मिट्टी में मिलाये जाने का मूल कारण द्यूत ही है। तब क्या—अब भी इसी भारतवर्ष में प्रत्येक वर्ष एक दिवस ऐसा आता है जिस दिन सैकड़ों नहीं हज़ारों अविवेकी गृहस्थ विना परिश्रम धन पाने की बलवती आशा के वशीभूत हो अपनी श्रीमती के आभूषणों तक को द्यूत में समर्पण कर—अन्त में अपनी मान मर्य्यादा को एक दम मिट्टी में मिला देते हैं। सहस्त्रों घरों में हाहाकार मच जाता है, तिसपर भी कुछ हमारे भाई धर्म की दुहाई तिहाई मचाते हुए—देश नाशकारी कई एक प्रधान प्रथाओं में से, दिवाली पर द्यूत खेलने की नाशकारी प्रथा को सनातन धर्म बतलाते हैं। हम नहीं समझ सक्के द्यूत खेलना किस प्रकार धर्म हो सक्ता है? क्योंकि धर्माचरण से सदसद्विवेक नष्ट होता हुआ आज तक हमने नहीं सुना, परन्तु द्यूत खेलते ही धर्म्माधर्म विचार तो हृदय से एक दम नष्ट हो जाता है। इसका उदाहरण खोजने को दूर जाना नहीं होगा। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण इस पुस्तक का चरित्र नायक क्लाइव ही है। क्लाइव को जूआ खेलते खेलते एक दिन मालूम हो गया कि खेल में उसके साथ वेइमानी हुई है और यह बात प्रकट होते ही—जो ऋण उस पर जूआ खेलने में हुआ था उसको चुका देने से उसने एक दम इनकार किया। इसका अन्तिम फल वही हुआ जो कौरव पाण्डवों के द्यूत का हुआ

था । क्लाइव और उसके प्रतिद्वन्दी में भयानक झगड़ा हो गया । क्लाइव को जो अभी इक्कीस वर्ष का भी नहीं था—उसके प्रतिद्वन्दी ने द्वन्दयुद्ध [Duel] के लिये ललकारा ।

हमारे देश वाले, मनुष्य की प्रथम पच्चीस वर्षों को गधा पचीसी बतलाया करते हैं । क्लाइव भी अभी गधापचीसी ही में था । उसको अभी आगे पीछे का कम ज्ञान था । इसीसे वह उग्र प्रकृति क्लाइव युद्ध की ललकार सुनते ही आगा पीछा विचारे विना ही द्वन्द युद्ध करने को सन्नद्ध हो गया । अब क्या था—भरी हुई एक पिस्तौल क्लाइव के हाथ में थी और दूसरी वैसी ही पिस्तौल उसके प्रतिपक्षी के हाथ में थी । प्रथम क्लाइव ने अपनी पिस्तौल का घोड़ा दबाया पर निशाना खाली गया । अब उसके विपक्षी के वार करने की बारी आयी । उसने क्लाइव के सिर का निशाना लगा उससे कहा कि या तो तू मुझ से अपने प्राणों की भिक्षा माँग नहीं तो थोड़ी ही देर में तेरा निर्जीव शरीर मेरे चरणों पर लोटता हुआ दिखलाई देगा । इन शब्दों का क्लाइव के मन पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने अपने विपक्षी से प्राणों की भिक्षा माँगी और यह प्राण सांघातिक लीला यहीं समाप्त हुई ।

इस घटना से लोग क्लाइव के विषय में जो चाहे सो कहैं, परन्तु दुर्ग के उच्चकर्मचारी जो सैंटडेविड दुर्ग की रक्षा के समय क्लाइव के अतुलनीय वीरोचित साहस का भली भाँति परिचय पा चुके थे इस घटना को तुच्छ समझ बरका गये । पाठको ! वास्तव में बात यही है कि जब किसी का किसी पर प्रेम अथवा श्रद्धा उत्पन्न होजाती है तब उसके दोष छोटे और गुण बड़े दिखलाई देने लगते हैं ।

इस बीच में डूपले और अङ्गरेज गवर्नर के बीच सन्धि हुई और मदरास पूर्ववत् अङ्गरेजों के अधिकार में आया। साथ ही क्लाइव को अपनी पुरानी क्लार्कशिप पर लौटना पड़ा। यद्यपि अङ्गरेज और फरासीसियों में सन्धि होगई थी, तथापि इन दोनों विदेशीय व्यवसाइयों की दशा में अब बहुत कुछ परिवर्तन होगया था। जिस समय का वृत्तान्त यह लिखा जा रहा है उस समय भारतवर्ष के शासन की बागडोर जिन लोगों के हाथ में थी वे परस्पर की इर्ष्यानल में धधक रहे थे। इसीसे उस समय के विचारशील दूरदर्शियों को भासने लगा था कि शीघ्र ही ये विदेशीय जातियां पुनः रणक्षेत्र में अवतीर्ण होंगी। साथ ही अङ्गरेज और फरासीसी भी भारतवर्ष में इन आपुसी झगड़ों का फल अपनी स्थिति के लिये विषतुल्य समझते थे।

जिस समय इस देश के शासकों में एक दूसरे के नाश करने के लिये कुचक्र रचे जारहे थे; जिस समय इस देश के शासक परस्पर की फूट के अन्तिम परिणाम को न विचार कर शत्रु मित्र की यथार्थ पहिचान से वञ्चित होगये थे; जिस समय इस देश में स्वार्थ, अधर्म्म और अन्याय सीमा को लाँघ गये थे; उस समय क्लाइव कम्पनी की राईटर्स बिलडिङ्ग में क्लार्क का काम करता था। बीच बीच में जब कभी आवश्यकता पड़ती तब अङ्गरेजों की ओर से मेजर लारेंस युद्ध करने जाते थे और मेजर लारेन्स की सहायता के लिये क्लाइव को क्लार्कशिप छोड़ कर जाना पड़ता था।

क्लाइव जब कम्पनी की कोठी में काम करता था, तब उसको कोठी का जमा ख़र्च रखने के अतिरिक्त गोदाम में रक्खे हुए माल की झड़ती लेनी पड़ती और माल का निरीक्षण भी करना पड़ता

था। गर्मी अधिक पड़ने से कोठियों में कम्पनी के कर्मचारी अपना अपना काम दुपहर के पूर्व ही निपटा देते थे और मध्याह्न काल को आनन्द पूर्वक बाग बगीचों में काट, सायङ्काल होने पर समुद्र तट के स्वास्थ्यकर पवन का सेवन किया करते थे; परन्तु क्लाइव को इस देश की गर्मी असह्य थी। यहां की उष्णप्रधान प्रकृति का उसके स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता था। उस समय गर्मी शमन करने के कृत्तिम उपायों का आविष्कार नहीं हुआ था। ख़स की टट्टियों में होकर 'थरमेण्टिडोट' की मन्द मन्द शीतल बयार कम्पनी के कर्मचारियों के उतप्त मस्तकों को ठण्डा नहीं करती थी। इसका कारण चाहें तो यही हो कि उन दिनों लोगों को ये उपाय मालूम नहीं थे अथवा उस समय इस देश के रहने वालों में देशत्व और देशाभिमान की ठसक कुछ कुछ बनी हुई थी, जिसके कारण उन लोगों ने विदेशियों की पङ्खाकुली-गीरी करने में अपने देश की और अपनी अप्रतिष्ठा समझी, अस्तु।

जब एक ओर स्वार्थलोलुप फ्रेंच गवर्नर डूप्ले अपनी धुनि में लगा हुआ मुगल साम्राज्य के अधःपात की प्रतीक्षा कर रहा था और साथ ही भारतवर्ष में फ्रेंच गवर्नमेण्ट स्थापित करने की राह जोह रहा था; तब दूसरी ओर तिमूर लङ्ग के जाँनशीन हाथ पर हाथ रखे—सलतन के कारोबार को एक तरह का बोझा समझ, चापलूस दर्बारियों के हाथ की कठपुतली बन रहे थे। जो विशाल मुगल साम्राज्य किसी समय इस देश भर में व्याप्त था वही अब निज़ामत और नवाबियों में पूर्णरीति से बट चुका था। निज़ामत और नवाबियों के निज़ाम और नवाब ज़ाहिरा तो सालाना खिराज भेज कर देहली तख़्त के मातहत बनते थे पर असल में वे लोग अपने अपने हल्कों

हर तरह से खुदमुखतार थे। एक तो उस समय के बादशाह सलामत रात दिन ऐशोइशरत में डूब कर बादशाहत के मामिलों को देखना भालना अपनी शान के ख़िलाफ समझते थे और दूसरे बादशाही निज़ामतों और नवाबियों में लोग हमेशा के लिये (Permenantly.) मुकर्रर कर दिये गये थे। इस देश की वर्तमान प्रथा के अनुसार उस समय के गवर्नरों के शासन का समय पाँच अथवा छः वर्ष नहीं था।

इतिहास वेत्ताओं का मत है कि तिमूरलङ्ग के ख़ानदान में अन्तिम बादशाह औरङ्गज़ेब था जिसने ज़ोरशोर से इस देश में हुकूमत की। यह बादशाह क्लाइव के यहां आने से चालीस साल पहिले सन् १७०७ ई० में दफनाया जा चुका था। इसीसे अब फ्राँस और इङ्गलैण्ड के विदेशी व्यापारियों के ऊपर इस सुविशाल मुगल साम्राज्य की केवल छाया मात्र रह गई थी किन्तु वास्तव में इन लोगों को छोटे छोटे राजाओं, सूबेदारों और नवाबों से ही काम पड़ता था और ये लोग निरङ्कुश होने से परस्पर की इर्ष्याग्नि में स्वयं ही जल रहे थे।

कहां तक कहें-यह देश उस समय अशान्त विग्रह, फूट और कलह का निवासस्थान हो रहा था। परशियन्स, अफगान और मरहटों ने लूट खसोट मार काट मचाकर इस देश को स्मशान तुल्य बना दिया था। भारत का इतिहास जिन्होंने पढ़ा है वे जानते ही होंगे कि असंख्य धन राशि लो देहली के ख़जाने से नादिरशाह और उसके साथी ही लेजाचुके थे-बचे बचाये देश के गौरव को नष्ट करने के लिये उस समय के शासक काफी थे। देहली के बादशाह को राजपूतों ने जब कर्त्तव्य विमुख देखा तब वे भी अपने को स्वतन्त्र समझने लगे और देश भर में छोटे छोटे लुटेरों के झुण्ड पैदा होगये।

आज से केवल १५८ वर्ष पूर्व सन् १७४८ ई० में, जिस समय दक्षिण के निज़ाम मरे, उस समय देश की बड़ी बुरी दशा थी। निज़ाम की सीमा के अन्तरगत ही नहीं किन्तु निज़ाम के मातहत करनाटक राज्य के लोग निज़ाम की सम्पत्ति के उतराधिकारी बनने को व्याकुल होने लगे। उस समय दक्षिण भारत कई एक छोटे छोटे भागों में विभक्त था और वे छोटे छोटे भाग कई एक राजाओं और नवाबों से शासित होते थे। वे छोटे छोटे राज्य निजाम के उसी प्रकार मातहत थे जिस प्रकार स्वयं निज़ाम दहली के बड़े मुगल के मातहत थे। दो प्रतिद्वन्दियों ने विदेशियों की सहायता मांगी। ये प्रतिद्वन्दी मिरजापाह जङ्ग और चन्दा साहब थे। इन दोनों का समान उद्देश्य करनाटक की नवाबी पाने का था और इन दोनों ने डूपले से मदद मांगी।

अपने उद्देश्य की पूर्ति का जो उपाय इन दोनों ने विचारा था यद्यपि इन लोगों के उद्देश्य के विपरीत फल देने वाला था क्योंकि समुद्रतट के नगरों में विदेशियों के पैर जम चुके थे; तथापि "अर्थी दोषो न पश्यति"। इन लोगों ने विष को अमृत समझा। डूपले ने जलती हुई दोनों मसालों में तेल डाला। डूपले ने कुछ फरासीसी और कुछ यूरोपीय शिक्षा प्राप्त देशी सेना इन दोनों की सहायता के लिये भेजी। फल यह हुआ कि मिर्ज़ा साहब तो दक्षिण के निज़ाम बन बैठे और चन्दा साहब ने करनाटक का राज्य अपने हस्तगत कर लिया। डूपले की भेजी हुई सेना ने विजय प्राप्त कर दोनों व्यक्तियों को उनकी इच्छानुसार सफलता प्रदान की। इससे डूपले को बड़ा लाभ हुआ। सहायता देने के पलटे में मिर्ज़ा साहब ने डूप

पर धन और अधिकारों की वर्षा की। डूपले का तो भला अब कहना ही क्या था। उसके दोनों हाथों में लड्डू थे। स्वदेश फ्राँस के बराबर उसको एक देश का शासन मिला। डूपले ने कुटिलनीति का अवलम्बन कर निज़ाम पर अपना इतना प्रभाव डाला कि निज़ाम साहब को यदि कोई किसी बात के लिये अर्ज़ी देता तो जब तक डूपले साहब की उस पर सही शिफारिश न होती तब तक अर्ज़ी की कुछ सुनवाई ही न होती। मिर्ज़ा साहब डूपले के हाथ की कठपुतली बन गये थे। डूपले जिधर और जिस तरह उनको नचाता उधर ही और उसी तरह वह नाचते थे।

वास्तव में हमारे देश के लोगों पर यूरोप वालों के प्रभाव पड़ने का यही श्रीगणेश समझना चाहिये। मिष्टर होमस का मत है कि पीछे से अङ्गरेजों ने भी डूपले की इसी नीति का अवलम्बन किया। देशी शासकों द्वारा अपना शासन स्थापित कर पीछे से देशी शासकों को अपने हाथ की कठपुतली बना स्वयं उस देश के हर्त्ता कर्त्ता बन गये *। हमारी समझ में इस नीति को उपयोग में लाने के लिये अङ्गरेज दोषी नहीं कहे जासक्ते। "जैसी बहे बयारि पीठ तब तैसी दीजे"। उस समय यदि अङ्गरेज लोग इस नीति का अवलम्बन न करते तो आज हमको ऐसे शान्त दान्त उदार और सुखमय राजा की छत्र छाया के नीचे रहने का सुअवसर कैसे प्राप्त होता! नीतिकुशल वे ही हैं जो देश काल पात्र का सदैव विचार रखते हैं। जिस समय देश

* "Here we see the beginning of a policy which was afterwards used with such immense effect by the English them selves-viz the policy of ruling throug the native digniteries who soon became puppets in the hands of their virtual masters."

स्वार्थियों के हाथ का खिलौना बना हुआ था और देश में चारों तरफ लूटखसौट, मारकाट मची हुई थी, उस समय अङ्गरेजों को इसी नीति का अवलम्बन करना युक्ति-सङ्गत था। विशेष कर ऐसी दशा में जब उनको यह बात मालूम होगयी थी कि यदि वे इस नीति के अनुसार कार्य्य न करेंगे तो भारतवर्ष से उन लोगों का कुछ भी सम्बन्ध शेष नहीं रहेगा। साथ ही पकी पकाई महूक को, थोड़ी सी मधु मक्खियों के भय से जो थोड़ी देर के लिये सिर पर कम्बल ओढ़कर धुआँ देने से भगाई जा सक्तीं थी-छोड़ देना उनकी आन्तरिक इच्छा के सर्वथा प्रतिकूल था।

दक्षिण में डूपले की शक्ति दिनों दिन बड़ी तेज़ी के साथ बढ़ रही थी जिससे अङ्गरेज जाति यहां वालों की दृष्टि में कमज़ोर जाति जचने लगी थी। प्राणी मात्र का यह स्वभाव है कि निर्वल को तुच्छ समझना। सो जब यहां वालों ने देखा कि फरासीसियों ने मद्रास को अङ्गरेजों से छीड़ लिया, और फरासीसियों की ही सहायता से निज़ाम दक्षिण प्रान्त का शासक बन गया, तब अङ्गरेज जाति को निर्बल समझना स्वाभाविक बात थी।

निज़ाम मिर्जा की मृत्यु हुई और डूपले ने मिर्ज़ा के खान्दान के ही एक पुरुष को निज़ाम बनाया, जिससे उसके अधिकार में कोई भी त्रुटि न पड़ने पावे। वास्तव में उस समय दक्षिण में डूपले की तूती बोलती थी-यहां तक कि डूपले की यादगार में एक स्तूप खड़ा किया गया, पदक बांटे गये और डूपले की विजय कीर्ति को चिरस्थायिनी करने के अर्थ City of Dupleix's Victory नाम का एक नगर बसाया गया था।

एक ओर तो डूपले की दुन्दभी बज रही थी और दूसरी ओर एक नये दृश्य का उपक्रम छिड़ रहा था। अङ्गरेजों ने फरासीसियों के बनाये हुए करनाटक के नवाब चन्दा साहब को वहां का नवाब ही न माना। अङ्गरेजों ने करनाटक के भूतपूर्व मृत नवाब के लड़के मोहम्मद अली को करनाटक की गद्दी का उत्तराधिकारी माना। यदि देखा जाय तो वास्तव में करनाटक की गद्दी पाने का अधिकारी कानून से भी मोहम्मदअली ही था। परन्तु मोहम्मद अली के अधिकार में त्रिचनापली नगर को छोड़ अन्य कोई नगर न था। चन्दा साहब ने जब यह सुना कि अङ्गरेज मोहम्मद अली के पक्षपाती हैं तब उसने अपने मित्र फरासीसियों की सहायता लेकर त्रिचनापली जा घेरा। अपने मित्र मोहम्मद अली के घिर जाने के समाचार जब अङ्गरेजों ने सुने तब उनको बड़ी चिन्ता हुई। वे सोचने लगे कि उपस्थित स्थिति में उनको किस नीति का अवलम्बन करना चाहिये। क्या वे मौनव्रत धारण कर अपने मित्र मोहम्मद अली की दुर्दशा होने दें और मित्रोचित कर्त्तव्य से मुख मोड़े? ऐसा करने से तो उनके प्रतिद्वन्दी फरासीसियों को भारतवर्ष के एक प्रान्त का पूर्ण अधिकार प्राप्त हो जायगा और आवश्यकता पड़ने पर वे अपने मित्र के साथ मित्रोचित व्यवहार भी न कर पावेंगे।

अङ्गरेज इस जटिल विषय को पूर्ण रीति से विचार भी न पाये थे तब तक ऐश्वर्यमद से मत्त डूपले ने सेण्ट डेविड दुर्ग और मदरास के समीप फरासीसी सीमा स्थापित करने को अपने झण्डे झण्डियां गाढ़ दीं, जिससे यह प्रकट होने लगा कि झण्डे झण्डियों के भीतर अङ्गरेजों का कुछ भी अधिकार नहीं है।

पाठक ! जरा इस आत्मश्लाघी डूपले की उस कुटिलता पर ध्यान देते चलें जिससे उसने अङ्गरेज व्यापारियों को अपमानित कर उनको अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिये अस्त्र उठाने पर विवश किया था । झण्डे झण्डियां गाढ़ कर भी डूपले को सन्तोष नहीं हुआ । उसने यह गप्प भी उड़वादी कि झण्डों के उस ओर की भूमि भी बहुत शीघ्र फरासीसियों की सीमा में आने वाली है ।

अङ्गरेज व्यापारियों को एक तो अपने मित्र मोहम्मद अली को सहायता पहुंचाने की चिन्ता थी ही, दूसरे इस अपमान से उनके हृदय पर बड़ी चोट लगी । किन्तु उस समय मद्रास में उनका कोई समर-प्रसिद्ध अफसर न था । मेजर लारेन्स-जिसने अपने युद्ध कौशल को दिखला उस समय अङ्गरेजों में सुकीर्ति पायी थी-इङ्गलेण्ड में था । मेजर लारेन्स ने ही क्लाइव को "प्रकृतसिद्ध योद्धा" (Born Soldier) बतलाया था ।

यह ईश्वरीय नियम है कि जो वस्तु एक को विष होती है वह किसी व्यक्ति विशेष को अमृत हो जाती है । कविवर कालिदास जी ने स्वरचित रघुवंश काव्य में कहा भी है:-

"विशमप्य मृतं क्वचिद् भवेत् । अमृतंवा विषमीश्वरेच्छया।"

सो अङ्गरेज व्यापारियों को तो यह कुसमय था और क्लाइव को यही सुसमय था । यह घटना क्लाइव की उन्नति के ठीक अनुकूल थी ।

क्लाइव जैसा साहसी और प्रखर बुद्धि सम्पन्न था इस कठिन समय में उसने अपनी प्रकृति का तदनुसार ही परिचय दिया । कम्पनी के गुमाश्तों को उसने सम्मति दी कि इस समय विपक्षियों के आक्रमण की प्रतीक्षा न कर, हम लोगों को शत्रु की सीमा में घुस कर युद्ध आरम्भ कर देना चाहिये । एक

क्लार्क से ऐसे साहस की बात सुन क्लाइव के उच्च और सहृदय कर्मचारियों को उसके वीरोचित साहस और उसकी दूरदर्शिता पर कितना साश्चर्य आनन्द हुआ होगा—इसका अनुमान हमारे पाठक स्वयं करलें।

प्रथम तो अङ्गरेज व्यापारियों ने केप्टिन जिञ्जर (Captain Ginger) की अध्यक्षता में कुछ सेना भेजकर त्रिचनापली में अविरुद्ध मोहम्मद अली की सहायता करनी चाही, पर जब इस उद्योग में कुछ सफलता न हुई तब दूसरी बार अन्य प्रतीकार न देख मदरास के अङ्गरेज गवर्नर मिष्टर साण्डर्स (Mr Saunders) को क्लाइव की इच्छानुसार शत्रुसीमा में घुस—अपने मित्र मोहम्मद अली के विपक्षी के आरकट दुर्ग पर आक्रमण करने की आज्ञा देनी पड़ी। अङ्गरेजों को उस समय यह बात जान पड़ने लगी कि अब आत्मरक्षा का समय आगया है और उनको अपनी अरक्षित—स्थिति की बड़ी चिन्ता होने लगी। मदरास के अङ्गरेज गवर्नर ने क्लाइव के साथ दो सौ ब्रिटिशजाति के वीर योद्धा, तीन सौ अङ्गरेजी ढङ्ग से शिक्षित प्रभुभक्त वीर देशी सिपाही कर दिये। इन पाँच सौ योद्धाओं के कमाण्डर क्लाइव के प्राईवेट ष्टाफ में आठ और भी अफसर थे, जिसमें चार तो क्लाइव के सहयोगी कम्पनी के क्लार्क थे। असल बात यह है कि भारतवर्ष में अङ्गरेजों के राज्य की नीव जमाने वाले अल्प वेतन भोगी वेचारे क्लार्क ही हैं।

पाँच सौ योद्धाओं की छोटी सेना का अधिपति बनकर वीर क्लाइव ने आरकट दुर्ग पर आक्रमण करने के लिये बड़े उत्साह और मनोयोग से पयान किया। जिस समय क्लाइव विजय यात्रा के लिये मदरास से प्रस्थित हुआ उस समय

आकाश में अवस्थित सूर्य्य ने काल के अनिवार्य प्रभाव पर दृष्टि पात कर मेघों से अपने मुख को छिपा लिया। जिनके वंशधर रघुकुल भूषण क्षत्रीचूड़ामणि श्रीराघवेन्द्र ने इस देश से देशान्तर विजय करने के अर्थ यात्रा की थी, आज उन्हीं सूर्यवंशियोँ के पित्रदेश भारतवर्ष के हस्तगत करने का श्रीगणेश करने के अर्थ विदेशीय वणिक समाज का एक वीर युवक जाता है। जिस समय सूर्य भगवान् की यह दशा थी उस समय इन्द्र महाराज के आनन्द के नगाड़े बज रहे थे। कलि की आदि में जिस देश के अन्तरगत ब्रजमण्डल में इनको अपमानित हो अविचारयुक्त किये हुए कर्म के अर्थ क्षमा मांगनी पड़ी थी उसी देश की भावी दशा को विचार और अपने अपमान का बदला पूरा होने की आशा से महाराज इन्द्र अत्यन्त प्रसन्न थे। क्लाइव की विजय यात्रा के दिन आकाश में मेघों की अवली को देखने और परस्पर की टक्करों से उत्पन्न हुई गड़गड़ाहट और बिजली की तड़कन को सुनने से यही जान पड़ता था कि उस दिन इन्द्र महाराज के नन्दन कानन में मानों कोई बड़ा उत्सव मनाया जा रहा था। बीच बीच में मेघों से छोटी छोटी जल की बूंदों के गिरने से ऐसा जान पड़ता था कि मानों इन्द्र महाराज अपने अपमान का बदला लेने वाले की वीरगति और साहस पर मुग्ध हो प्रेमाश्रु टपका रहे थे। यदि कोई मनुष्य इस इर्ष्या सम्पन्न संसार में कुछ करने की इच्छा रख कर कुछ करना चाहता हो तो उसको अपनी स्तुति निन्दा सुन कर उस पर कुछ भी ध्यान न देना चाहिये! क्लाइव भी ऋतु की प्रतिकूलता रूपी निन्दा की कुछ भी परवाह न कर वीरगति से अपनी छोटीसी वाहिनी को परिचालित करता हुआ आगे

बढ़ता ही चला गया। क्लाइव के इस साहस का परिणाम यह हुआ कि क्लाइव के आरकट नगर में अचानक पहुंचने से दुर्ग रक्षक किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो स्तम्भित होगये और क्लाइव ने युद्ध किये बिना ही आरकट दुर्ग पर अङ्गरेजी झण्डा गाड़ दिया। दुर्ग रक्षक भयभीत हो दुर्ग छोड़ छोड़ इधर उधर भागने लगे। क्यों न हो "उद्योगिनं पुरुष सिंह मुपैतिलक्ष्मीः", नीति प्राज्ञों की बात भला कब टल सकती है। पश्चिमी विद्वानों का मत है कि जो स्वयं कुछ करते हैं उनकी सहायता ईश्वर स्वयं करता है। "God helps them who help themselves." निरी बातों की बक बक करके आकाश पाताल मिलाने वाली बातों ही से जो अपना प्रभुत्व और महत्व जमाने का प्रयासी है वह अन्त में केवल हास्य का पात्र होता है। जो बहुत सी बक बक न कर, कुछ करता भी है क्लाइव की तरह उसके द्वार पर विजय लक्ष्मी सदैव नृत्य किया करती है।

पाठको! यद्यपि क्लाइव ने अपने प्रथम उद्योग ही में सफलता प्राप्त की है, तथापि हमको आगे चलकर अभी यह देखना है कि जिस स्थान पर उसने अभी अपना अधिकार जमा लिया है उस स्थान को वह अपने अधिकार में रख भी सकता है कि नहीं।

—:0:—

चतुर्थ अध्याय।

सहते विपत्सहस्रं मानी नैवापमानं लेशमपि।

(आरकट युद्ध—युद्ध में देशी वीरों की सहनशीलता और सहृदयता—क्लाइव को घूस का लोभ—क्लाइव का घूस अस्वीकार करते हुए उचित उत्तर—चन्दा साहब के पुत्र राजा साहब का रणक्षेत्र छोड़कर भागना—क्लाइव की सामयिक प्रतिभा—क्लाइव की

विजय-सिटी आफ डूपलेज विक्टरी का सर्वनाश-चन्दा साहब की मृत्यु-आरकट युद्ध से भारतवर्ष में ब्रिटिश राज्य की नींव)

आरकट दुर्ग के भयभीत रक्षक जो अभी तक बिलकुल डरे हुए थे अब कुछ कुछ चैतन्य होने लगे और किले के समीप जमा हुए। परन्तु, ये लोग क्लाइव की वीरता, साहस एवम् दृढ़ता से नितान्त अपरिचित थे। क्लाइव इन लोगों को घेरकर इन पर आक्रमण करने की फिकिर में था, और रात्रि होते ही उसने रात्रि के अन्धकार में अपने विपक्षियों पर आक्रमण करने की आज्ञा अपनी सेना को देदी। युद्ध का नियम है कि जो सेना आक्रमण करती है उसका बल उस सेना से जिसपर आक्रमण किया जाय—अधिक होना चाहिये, परन्तु यहां इसके बिलकुल विपरीत बात थी। अर्थात् क्लाइव की आक्रमणकारी सेना की अपेक्षा उसके प्रतिद्वन्द्वी की सेना छः गुनी अधिक थी। अधिक होने पर भी क्लाइव ने कौशल पूर्वक शत्रु सेना को उसी रात्रि के अन्धकार में मार भगाया। साथ ही क्लाइव की सेना का एक भी सिपाही हताहत नहीं हुआ।

डूपले ने जब इस समाचार को सुना—तब उसको बड़ा विस्मय हुआ। जो पलटनें त्रिचनापल्ली में मोहम्मदअली को घेरे पड़ी थीं उनमें से चन्दा साहब ने चार हज़ार सेना देकर अपने पुत्र राजा साहब को आरकट उद्धार के लिये रवाना किया। उधर डूपले ने पाण्डीचरी से १५० फरासीसी और वेलूर (Vellore) से तीन सौ देशी सिपाही राजा साहब की सहायता करने को पीछे से और भी भेजे। क्लाइव ने जिन तीन हज़ार दुर्ग रक्षकों को मार भगाया था उनको भी मिला

कर राजा साहब के अधीन अब लगभग साढ़े सात हज़ार सैनिक थे ।

पाठक अब ज़रा इन विषम युद्धकारियों की स्थिति पर ध्यान दें और क्लाइव के साहस और उसकी वीरता पर विचार करें । राजा साहब के अधीनस्थ जब साढ़े सात हज़ार के लगभग योद्धा थे तब क्लाइव के पास केवल १२० सिपाही और आरकट का दुर्ग था । साथ ही क्लाइव के पास भोजन की सामग्री भी कम हो चली थी । ऐसी अल्प संख्यक सेना को शत्रु की साढे सात हज़ार सेना से दुर्ग की रक्षा के साथ आत्मरक्षा भी करनी थी ।

दुर्ग में अवस्थित अङ्गरेजी सेना के नायक क्लाइव की अवस्था यद्यपि अभी केवल पच्चीस ही वर्ष की थी और उसकी आयु का अधिक भाग अभी लों कम्पनी की मुंशीगरी में ही व्यतीत हुआ था, तथापि उसमें स्वाभाविक अजेय उत्साह की मात्रा बहुत अधिक थी । उसने अपनी उस छोटी सी सेना में अपना जैसा उत्साह उत्पन्न करना आरम्भ किया। जो सैनिक अफसर अपने अधीनस्थ सेना के मन को अपने हस्तगत करना नहीं जानते, जो अफसर केवल रूलस् और रेग्यूलेशनस् की कठोरता का उपयोग कर के सिपाहियों के हृदय में केवल भय और Discipline ही पैदा करना जानते हैं उन अफसरों की अधीनस्थ सेना काम पड़ने पर केवल डिसिपलिन ही दिखला सकी है; परन्तु क्लाइव प्रकृति-सिद्ध सेना नायक था और उसमें ईश्वर दत्त सेना-नायक होने की योग्यता थी, अतः उसने अपनी उस छोटी सी सेना के मन को पूर्णतया अपने हाथ में कर के सैनिकों की पूर्ण श्रद्धा अपने ऊपर उत्पन्न करली ।

युद्ध आरम्भ हुआ और विकट रूप से युद्ध हुआ। पन्द्रह दिवस लों निरन्तर अविश्रान्त युद्ध होता रहा जिसमें रणमत्त वीरों को दम लेने तक का भी अवकाश नहीं मिलता था। आरकट दुर्ग के भीतर से क्लाइव पन्द्रह दिवस लों बराबर आक्रमणकारियों के साथ युद्ध कर के उनको पीछे ही हटाता रहा। इन पन्द्रह दिनों के भीतर बड़ी बड़ी घटनायें हुईं जिनका वर्णन यदि किया जाय तो उस समय के विदेशियों के युद्ध कौशल की बाल्यावस्था का पूरा पूरा परिचय पाठकों को मिल सकता है पर इससे पुस्तक बढ़जाने का भय है। यहाँ पर यह बता देना भी अत्युक्त न होगा कि क्लाइव के अधिकार में केवल आरकट का दुर्ग मात्र ही था और आरकट नगर की आबादी राजा साहब के अधिकार में थी।

कहते हैं लड़ते लड़ते क्लाइव की सेना में भोजन की सामग्री कम होने लगी। प्रभुभक्त भारतवासी, क्लाइव के अधीनस्थ सिपाहियों ने अपने को कुछ न समझ अपने सहयोगी अङ्गरेज गोरों को रांध रांध कर चावलों का भात खिलाया और स्वयं चावलों के मांड़ को पीकर कालक्षेप करने लगे। जो काले सिपाही सदैव से सहनशीलता, सहृदयता और परोपकारिता आदि वीरोचित गुणों का परिचय देते आये हैं उनके प्रति भेद दृष्टि रखना कितने शोक और लज्जा की बात है।

अन्त में राजा साहब ने व्याकुल होकर १४ नवम्बर सन् १७५१ ई० को रमज़ान के मुसलमानी महीने में मोहरम के दिन आरकट पर एक साथ आक्रमण करने की आज्ञा देदी। मुसलमानों से आक्रमण के समय यह कह दिया गया कि उनको मृत्यु से बिलकुल न डरना चाहिये क्योंकि मोहरम के दिन

लड़ाई में मरने से मुसलमान सीधा बिना किसी रोक टोक के बहिश्त को जाता है। इससे राजा साहब की सेना में बड़ा जोश फैल गया और उन लोगों ने चार भागों में विभक्त होकर आरकट दुर्ग पर चार तरफ से आक्रमण करना निश्चित किया किन्तु, जब राजा साहब ने सुना कि मदरास से केपटिन किलपेट्रिक एक बेटेलियन सेना लेकर और कुछ मरहट्टे जिनको मोहम्मद अली की सहायता करने के लिये धन दिया गया था-आरकट युद्ध में अविरुद्ध अङ्गरेजी सेना के उद्धारार्थ आरहे हैं, तब राजा साहब ने साम दाम दण्ड भेद नीति में से दाम अर्थात् धन का लोभ दिखा कर क्लाइव को अपने हस्तगत करना चाहा।

जो लोग इस संसार में कुछ काम किया चाहते हैं उनको कई एक विपरीत वासनाओं में से एक धन की वासना भी परित्याग करनी चाहिये। यद्यपि क्लाइव आदि से अन्त तक धन के लालच में पड़ने से न बच सका; तथापि इस अवसर पर उसने राजा साहब के प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए, दूत द्वारा कहला भेजा कि "मैं धर्म युद्ध में प्रवृत्त हूं और आप जिसकी ओर से लड़ रहे हैं वह आरकट की नवाबी पाने का हक़दार नहीं है"।

जब दूत ने क्लाइव का संदेसा राजा साहब को सुनाया तब वह क्रोध से विह्वल होगये और दुर्ग पर आक्रमण करने का सङ्केत सेना को देने के अर्थ तीन बार अपनी बन्दूक छोड़ी। सङ्केत पाते ही राजा साहब की ओर से दुर्ग पर एक बार ही आक्रमण करना आरम्भ किया गया। जब क्लाइव ने राजा साहब के अनुरोधपूर्ण किन्तु अनुचित प्रस्ताव को अस्वीकार कर उस का अनादर किया था तब वह जान गया था कि आरकट

दुर्ग पर आक्रमण अवश्य होगा। अतएव क्लाइव भी इस आक्रमण को रोकने के लिये पहिले से तयारी कर चुका था। उसने दुर्ग की दिवालों में होकर शत्रुसेना पर गोला गोली छोड़ने के लिये छिद्र करवा लिये थे। जब दुर्ग पर चारों ओर से एक साथ आक्रमण हुआ तब दीवालों के सुराखों में से चारों ओर गोला गोली की भीषण रूप से अविराम वर्षा होने लगी।

गोला गोली की इस अविराम वर्षा का फल यह हुआ कि आक्रमणकारी शत्रु दुर्ग के समीप फटकने तक न पाये। अन्त में क़िले के फाटकों को तुड़वाने के लिये मदमत्त हाथी छोड़े गये परन्तु गोलियों की वर्षा को सहकर फाटक तक पहुंचना सहज बात न थी। गोलियों की वर्षा के सामने हाथियों के भी पैर उखड़ गये और वे आगे न बढ़ सके। लड़ते लड़ते क्लाइव की सेना अब श्रान्त हो चली थी, परन्तु क्लाइव के निरन्तर उत्साह बढ़ाते रहने के कारण इन लोगों में दूना बल और उत्साह उत्पन्न होगया था और ये लोग जान पर खेलकर अपने सेनानायक की आज्ञा पालन कर रहे थे। क्लाइव स्वयं भी लड़ाई के अन्तिम दिवस लों दुर्ग के भीतर चारों ओर दौड़ दौड़ कर सैनिकों को गोला गोली नियमिति रूप से पहुंचाने और समयोचित आज्ञा देने में कोताही नहीं करता था। इस युद्ध में क्लाइव ने ऐसी फुर्ती दिखलाई कि उसकी सेना को क्लाइव सर्वत्र ही जान पड़ने लगा।

इन घटनाओं से क्लाइव का पूर्ण विकाश हुआ। कथरी में छिपा रत्न बाहर निकला। क्लाइव को अपने साथियों के साथ काम करने में बड़ा आनन्द प्राप्त होने लगा। उसको अपने

साथियों के उत्साह और बल का पूर्ण ज्ञान होने से उन पर भरोसा हो गया । उसने अपने साथियों के प्रति उचित व्यवहार कर उनका मन अपने वश में कर लिया ।

तीन बार बराबर हर तरफ से मार खाते खाते आक्रमणकारियों ने अपनी दाल गलना कठिन समझ युद्ध क्षेत्र में पीठ दिखलाई । सोलहवें दिन सूर्योदय होते ही प्रभात काल में दुर्ग के चारों ओर विचित्र दृश्य दिखलाई देता था । जिस स्थान पर गत सायङ्काल में सहस्त्रों मनुष्यों की भीड़ थी उस स्थान में अब सिवाय सिपाहियों की मृत देहें और बहुत सी युद्ध सामग्री के और कुछ दृष्टिगोचर नहीं होता था । राजा साहब ने जब बराबर अपनी बाज़ी हारती हुई देखी और केपटिन केलपेट्रिक तथा मरहट्टों की अवाई सुनी तब घबड़ाकर उसने युद्ध क्षेत्र परित्याग करने में ही अपना कल्याण समझा ।

इस विकट आरकट युद्ध में क्लाइव की सेना के केवल छः मनुष्य मारे गये । क्लाइव ने आक्रमणकारियों से किले की रक्षा का अत्युत्तम प्रबन्ध किया था । क्लाइव की इस सामरिक प्रतिभा के सम्बन्ध में लिखा है :—

"Although at the time he had neither read books, nor conversed with men capable of giving him instructions in the military art, all the resources which he employed in the defence of Arcot were such as are dictated by the best masters in the science of war."

क्लाइव विजयी हो कर भी अपने कर्त्तव्य कर्म को बराबर करता रहा । इस बीच में उसकी सहायता के लिये मदरास से सात सौ सिपाही जिन में दो सौ गोरे भी थे पहुंच गये । इस नवागत सेना के पहुंचते ही क्लाइव के उत्साह का कहना ही

क्या था। उसने भागते हुए राजा साहब और उनकी सेना का पीछा कर उन पर आक्रमण भी किया और पूर्णतया इस युद्ध में विजय पायी। क्लाइव की इस विजय का राजा साहब की सेना पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उनकी सेना के छः सौ सिपाही राजा साहब की नौकरी छोड़ कर क्लाइव की सेना में आकर भर्त्ती हो गये। जब चन्दा साहब ने अपने पुत्र की पराजय के समाचार सुने तब वह भी त्रिचनापल्ली के घिराउ को तोड़ कर वहां से हट गया और आरनी Arnee के गवर्नर ने मोहम्मदअली को करनाटक का नवाब स्वीकृत किया।

क्लाइव की जन्मकुण्डली में कोई ऐसा प्रबल ग्रह अवश्य रहा होगा जिसका यही प्रभाव था कि जिस युद्ध में क्लाइव जाता जय ही होती थी। जैसे घोर अन्धकार मय रात्रि में निशानाथ के उदय होते ही अन्य छोटे छोटे नक्षत्रों की आभा क्षीण पड़जाती है वैसे ही क्लाइव के समराङ्गण में पहुंचते ही अन्य योद्धाओं का पराक्रम क्षीण पड़ जाता था।

जब क्लाइव अन्य युद्धों में फसा था तब समय पाकर डूपले और राजा साहब ने मिलकर सेण्ट जार्ज दुर्ग के आस पास की बस्ती को उजाड़ कर अङ्गरेजों को अधिक क्षति पहुंचायी – किन्तु क्लाइव ने भी डूपले के नाम से स्थापित नगर (City of Dupleix's Victory) को जड़ से उखाड़ कर बदला चुका दिया। इस नगर के ऊजड़ होते ही दक्षिण प्रान्त बासियों को जो फरासीसियों को ही शक्तिशाली समझ उनको इस देश का मालिक समझ बैठे थे–मालूम हो गया, कि बृटिश जाति भी शक्तिशालिनी है और अपने आक्रमणकारियों को भली भांति दमन कर सक्ती है। इसी बीच में मरहट्टों द्वारा चन्दा

साहब के मारे जाने की सूचना प्रकाशित हुई; मोहम्मदअली को अङ्गरेजों द्वारा पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त हुई और अब वह आरकट की निष्कण्टक नवाबी करने लगा।

विचारशील परिणामदर्शी पाठको! आरकट विजय होते ही अङ्गरेजों का दबदबा बढ़ा और इस देश में ब्रिटिश शक्ति स्थापित होने का सूत्रपात हुआ। मरहट्टे समझ गये कि अङ्गरेज़ लोग निरे व्यवसाई बनिये ही नहीं हैं उनमें प्रकृतजन्य वीरता भी है परन्तु डूपले अपना आधिपत्य स्थापित रखने के अर्थ कुचक्र रचता ही रहा—किन्तु शोक है सफलता उसकी सहवर्तनी नहीं हुई। डूपले की असफलता के कई कारण हैं। डूपले स्वयं योद्धा नहीं था और न अब ही वह योद्धा बन सकता था। उसके असद्व्यवहार और उसकी स्वार्थलिप्सा के कारण उसके अधीनस्थ निम्न श्रेणी के पदाधिकारियों की उस पर अणु मात्र भी श्रद्धा नहीं थी। डूपले जिस यूरोपीय शक्ति का इस देश में प्रतिनिधि था उस देश के रहने वाले डूपले की स्वार्थलोलुपता को जान गये थे और वे उसको युद्ध में न पड़ने के लिये बराबर निषेध करते रहते थे। यही कारण था कि फ्रांस देश वासियों ने आवश्यकता होने पर भी डूपले की समय पर सहायता न की। धन्य है डूपले! जो बराबर हर तरफ से निरुत्साहित होकर भी अपना आधिपत्य जमाने के अर्थ विग्रह करता ही रहा। किन्तु साथ ही उसको प्रत्येक अवसर पर नीचा भी देखना पड़ा और उधर ब्रिटिश शक्ति का प्रताप बढ़ता गया।

पञ्चम अध्याय ।

"शूरं कृतज्ञं दृढ़ सौहृदं च
लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः"

(क्लाइव की रङ्गरूटों को सामरिक-शिक्षा-क्लाइव का प्रणय परिणय-क्लाइव की स्वदेशयात्रा-स्वदेशियों से सम्मान प्राप्ति-पैतृक भूमि को बन्धक से छुड़ाना-संचितद्रव्य का व्यय-पार्लिमेण्ट की दलादली में फसना-धन पास न रहने पर द्वितीय बार भारत यात्रा का विचार करना)

क्लाइव में केवल शिक्षित सेना को ही चालन करने की क्षमता नहीं थी—वह नये लोगों को भी सामरिक शिक्षा देकर योद्धा बना सक्ता था । एक बार कम्पनी के डाइरेक्टरों ने लन्दन से दो सौ रङ्गरूट भारतीय सेना की संख्या बढ़ाने को भेजे, वे लोग सामरिक विद्या का "क-ख" भी नहीं जानते थे । वास्तव में वे लोग निपट देहाती भुच्च गवांर और निर्बल थे । एक समय उन लोगों में से एक के समीप होकर अचानक एक गोली निकल गयी—उसको देखते ही मारे डर के वे सब भाग गये । जो वीर, युद्ध क्षेत्र में अपने मृत साथियों की छाती पर पैर रखते हुए आगे बढ़ते हैं; जो वीर समराङ्गण में अपने सम्मुख मृत्यु को ताण्डव नृत्य करते देख एक पद भी विचलित नहीं होते और जो वीर एक के बाद दूसरे अपने साथियों को मृत्यु की गोद में शयन करते देख कर भी निडर हो शत्रु सेना में घुस कर शत्रु का विध्वंस करना ही अपना कर्त्तव्य कर्म समझते हैं ऐसे वीरों को देख यदि कम्पनी के भेजे रङ्गरूट भय के मारे इन दिनों के पढ़े लिखे वाक्वीर भारतवासियों की तरह गोली का दनाका सुनते

ही "ओबाबारे" कह कर भाग निकले हों तो आश्चर्य की क्या बात है! जो कुछ हो — उन लोगों के लिये यह बड़े सौभाग्य की बात थी कि उनकी सामरिक शिक्षा प्रकृतसिद्ध वीर क्लाइव को सौंपी गयी थी। फल भी आशातीत ही हुआ। थोड़े ही दिनों में क्लाइव की शिक्षा में रह कर वे लोग कट्टर योद्धा बन गये। जिस भांति मञ्चूरिया में अवश्यम्भावी युद्ध का विचार कर और वहां की शीतप्रधान प्रकृत का अनुमान कर दूरदर्शी जापानी रणपण्डितों ने, अपनी सेनाओं को जापान के उत्तर प्रान्त में, जहां अत्यन्त शीत पड़ता है, रख कर—शीत सहिष्णु बना दिया था; उसी प्रकार दूरदर्शी क्लाइव ने उन लोगों को कई बार जोखिम में डाल कर और निरन्तर अपने साथ रखकर उन क्षीणकाय दुर्बल रङ्गरूटों को विषम घटनाओं में पड़ने पर साहसी बने रहने का आदी बना दिया। यहां तक कि उस समय के सब से दृढ़ चिङ्गली पट्टस के दुर्ग को उन हीं लोगों की सहायता से क्लाइव ने विना लड़ाई लड़े ही अपने हस्तगत कर लिया।

निरन्तर परिश्रम करने से क्लाइव का शरीर दुर्बल हो गया और उसको अपना स्वास्थ्य ठीक करने के अर्थ कुछ काल लों विश्राम करने की आवश्यकता हुई। सौभाग्यवश मेजर-लारेन्स जो क्लाइव की वीरता का परिचय पाचुके थे और उसका वीरोचित समादर भी करते थे — विलायत से लौटे। क्लाइव भी मेजर लारेन्स को अपना हितैषी और मित्र समझता था। कुछ श्रम दूर करने की आशा से क्लाइव ने अपने दायित्व को मेजर लारेन्स को सौंप उसके अधीन में रहकर काम करना सहर्ष स्वीकृत किया। हमारे देश में इन

दिनों लोग कहते हैं कि विद्या का विकाश है और अङ्गरेजी रहन सहन का अनुकरण करने वालों की संख्या भी अधिक है। किन्तु शोक है कि अङ्गरेजों के लाभदायक देशोपकारी गुणों का अनुकरण हमारे देशी नहीं करते। यदि कोई देशी आज क्लाइव की स्थिति को प्राप्त हो जाय तो वह अपने को "एकमेवाद्वितीयं" समझ देश भर का पूज्यतम बनने की चिन्ता में ही मग्न रहें। भला वह कब किसी के नीचे काम करने को राजी होने लगा! इस देश के अधःपात के अन्य कारणों में से एक कारण यह भी है कि लोगों में योग्यता और स्वत्व न रहने पर भी, लोग अपने से ऊंचों के समकक्ष("To Gain Equality")होने की ही कामना किया करते हैं। जबतक इस देश के रहने वाले अपने से किसी को उच्च समझते और उस उच्च पद की मानमर्यादा भी करते थे, तब तक इस देश के रहने वालों की अङ्क में विजयश्री शयन किया करती थी। पर जब से इस देश में स्वतन्त्रता, स्वतन्त्रता—"Liberality Broad-Mindedness" की कर्णभेदी, देश को चौपट करने वाली अनुचित चिल्लाहट मची तभी से यह देश उच्छृङ्खल सा हो गया है। इस समय सभी समान बनने और स्वतन्त्र होने के लिये व्याकुल हैं। ये लोग यह नहीं विचारते कि जब सभी समान हो जांयगे सभी स्वतन्त्र हो जांयगे तब शब्द "परितन्त्र" और "असमान" क्या केवल कोषों की ही शोभा बढ़ाने को रहेंगे अथवा ये शब्द ही शिक्षित मनुष्य जातियों की भाषा से भुला दिये जांयगे। जिस घर में बाप बेटा स्त्री पति माता दुहिता मालिक नोकर सभी समानता और स्वतन्त्रता प्राप्त करने के प्रयासी हों भला उस घर की क्या दशा होगी? अस्तु। जिस

समय का हाल हम लिख रहे हैं उस समय वृटिश शक्ति इस देश में स्थापित होने वाली थी और उस समय इङ्गलेण्ड के सौभाग्य से कम्पनी के आश्रित जनों में, समानता और स्वतन्त्रता रूपी विष का सञ्चार नहीं हो पाया था, यही कारण है कि क्लाइव ने सुख्याति और सम्मान पाने पर भी मेजर लारेन्स की समानता पाने और स्वतन्त्र होकर रहने की कामना न की और मेजर लारेन्स के अधीन रहकर काम करना बुरा न समझा।

क्लाइव के अविश्रान्त निरन्तर परिश्रम करने से अङ्गरेजों के अधीनस्थ भारतीय प्रान्तों में भली भांति शान्ति स्थापित हो चुकी थी। ऐसे शान्त समय में क्लाइव के हृदय में पुराने प्रणय परिणय की अग्नि भड़क उठी। आरकट युद्ध में फसने के पूर्व क्लाइव अपने हृदय मन्दिर में एक युवती की प्रेम मूर्त्ति की, प्रतिष्ठा कर चुका था। आरकट दुर्ग में अविरुद्ध होने पर और युद्ध की चिन्ता में बराबर फसे रहने पर भी उसके हृदय में कभी कभी प्रेमाग्नि भड़क उठती थी। वास्तव में प्रेमदेव की महिमा विचित्र है! अधिकारी भेद से प्रेमदेव भी फल देते हैं। प्रेमदेव ऊंच नीच भेद से शून्य "सर्वंखल्वमिदंब्रह्म" के अविवेकी अनुयायी नहीं हैं। प्रेमदेव पात्र भेद से अपना नाम भी बदल डालते हैं। और नाम बदलते ही उनका गुण कर्म भी बदल जाता है। जब प्रेमदेव किसी प्राणी में प्रवेश कर अपने द्वारा उसकी कन्या अथवा पुत्र में दृढ़ सम्बन्ध स्थापित करते हैं तब उनका नाम स्नेह पड़ जाता है। जब वे ही प्रेमदेव स्त्री अथवा मित्र के साथ सम्बन्ध दृढ़ करते हैं तब उनका नाम प्रेमदेव ही रहता है; जब यह सम्बन्ध माता पिता गुरु जनों के साथ दृढ़ किया जाता है तब उनका नाम

श्रद्धा हो जाता है किन्तु जब प्रेमदेव अन्तरात्मा और परमात्मा रूपी दो पदार्थों के सम्बन्ध को दृढ़तर करते हैं तब उनका नाम भक्ति हो जाता है। प्रेमदेव के राज्य में यावतीय सभी पदार्थ हैं। सो प्रेमदेव क्लाइव के हृदय में भी अपना राज्य स्थापित कर चुके थे! क्लाइव ने जिस युवती को प्रेमदेव का केन्द्रस्थल समझ अपना सर्वस्व मन समर्पण किया था - वह युवती पुरटन विल्टस (Purton Wilts) के रहने वाले मिष्टर ऐडमण्ड मास्कलीन Edmond Maskeylyne की पुत्री थी। नाम था मिस मारगरेट मास्कलीन। क्लाइव के आरकट युद्ध में जाने के पूर्व इन दोनों के हृदय में एक दूसरे के लिये बहुत कुछ जगह हो गयी थी। आरकट दुर्ग में अविरुद्ध क्लाइव ही अपनी भावी अर्द्धाङ्गिनी के प्रेमसरों से व्यथित नहीं होता था - मिस मास्कलीन भी अपने प्रेमी के प्रेम को और उसकी सङ्कटापन्न दशा का स्मरण कर के अहर्निशि चिन्तातुर रहती थी। उसकी मानसिक और शारीरिक दशा का क्षण क्षण में परिवर्तन होता था। जिन दिनों आरकट युद्ध छिड़ा हुआ था यद्यपि उन दिनों मिस मास्कलीन की दशा नितान्त शोचनीय हो गयी थी; तथापि जब वह अपने भावी पति की वीरता के समाचार सुनती; तब उसका शरीर पुलकित हो जाता था और पति की वीरता पर उसको दर्प होता था। जैसा ऊपर निरूपण किया गया है कि इस दम्पति के सौभाग्य से कुछ दिनों के लिये लड़ाई बन्द हो गयी और लड़ाई के गोले गोलियों के भयानक हृदयकम्पकारी शब्द—हर्षप्रद आनन्ददायिनी विवाह दुन्दुभी की लय में लय हो गये। क्लाइव की प्रथम भारत यात्रा की इति, उसको जन्मभर के लिये स्मारक हुई। राबर्ट क्लाइव

और मिस मारगरट मास्कलीन का चिर काल से अन्तर निहित प्रेम अब सब पर प्रकाशित हुआ। उन दोनों को परस्पर के प्रेम पाश में नियमबद्ध होते देख सब लोगों को अत्यन्त आनन्द हुआ।

भारतवर्ष की पुण्यमयी भूमि में दश वर्ष रह कर क्लाइव की स्थिति और प्रकृति में विलक्षण परिवर्तन हो गया। इस देश में रहने से उसके भाग्य का उदय हुआ। साथ ही उसने इस देश में रहकर स्वदेश की ऐसी सेवा की कि इङ्गलेण्ड देश निवासियों को जब तक उनका इस देश से सम्बन्ध रहेगा-क्लाइव का नाम विस्मरण नहीं हो सक्ता। यह राबर्ट क्लाइव के परिश्रम ही का फल है कि जो जाति इस देश में वाणिज्य करने आयी थी, जिस जाति को स्वप्न में भी इस देश पर अपना साम्राज्य स्थापित करने का ख्याल नहीं था वही जाति धीरे धीरे प्रजा के मन को अपने हाथ में रखकर इस देश की हर्त्ता कर्त्ता बन गयी।

दश वर्ष पूर्व जिस बालक को लोगों ने तुच्छ समझ उसके साथ अनुचित व्यवहार किया था अब वही तुच्छातितुच्छ बालक अपने परिश्रम, अपने उद्योग और अपनी चतुरता से ब्रिटिश जाति के वीरों में अग्रगण्य हो गया। जो क्लाइव किसी समय नितान्त शुष्क हृदय समझा गया था उसी क्लाइव ने विलायत लौटने पर विलक्षण सहृदयता का परिचय दिया। क्लाइव के इङ्गलेण्ड में पहुंचने पर कम्पनी के डाइरेक्टरों ने वीरोचित कार्य्यों के उपलक्ष में और कम्पनी की श्रीवृद्धि के लिये क्लाइव को धन्यवाद दिया और साथ ही सम्मान पूर्वक रत्नजटित एक उत्तम तलवार भेंट की। डाइरेक्टरों ने भेंट तो की पर क्लाइव से सहृदय नवयुवक को वह भेंट स्वी-

कृत नहीं हुई । उसने भेंट को अस्वीकार करते हुए कहा कि यद्यपि कम्पनी ने उसके कार्य्यों के लिये तलवार भेंट कर उसको कृतज्ञ किया है पर उस भेंट को स्वीकार करने में वह अपने अफसर और पुराने मित्र मेजर लारेन्स का अपमान समझता है । जब तक कम्पनी द्वारा वैसी ही एक तलवार लारेन्स को भेंट न की जाय तब तक वह कम्पनी की भेंट को अङ्गीकार नहीं कर सक्ता । इससे बढ़ कर सहृदयता; उच्च पदाधिकारी के प्रति प्रतिष्ठा और अपने मित्र के प्रति प्रेम और क्या हो सक्ता है ?

क्लाइव जहाँ जाता था वहां लोग उसकी बड़ी प्रतिष्ठा करते थे । जिस युवक ने इङ्गलेण्ड के चिरकाल के प्रतिद्वन्दी फ्रांस के अनुष्ठानों को एक दम अस्तव्यस्त कर दिया और कम्पनी की श्रीवृद्धि की—अङ्गरेज इतिहास लेखक कहते हैं कि उस युवक का उसके देश वालों ने बड़े प्रेम से ("With open arms") स्वागत किया । क्लाइव के घर वाले भी अब उसकी प्रतिष्ठा करने लगे । उसके निकटस्थ आत्मीय जो पहिले उसके आचरणों को देख उस पर अप्रसन्न थे और उससे घृणा करते थे वे भी क्लाइव को अब अपना गौरव और कुल दीपक समझने लगे । क्लाइव ने स्टिची की जिमींदारी जो बहुत दिनों से बन्धक थी—ऋण देकर अब उसे भी छुड़ा लिया । उसके पिता पर नौ हजार पाउण्ड का ऋण था—उस ऋण को भी उसने चुका दिया । साथ ही उसका विचार था कि वह कोई ऐसा प्रबन्ध करदे जिससे उसके माता पिता को जीते जी किसी प्रकार का आर्थिक दुःख न भोगना पड़े ।

विचार करते ही करते क्लाइव एक ऐसे बुरे झञ्झट में

फस गया कि उसने दो वर्ष के भीतर ही अपने पास का बचा हुआ धन उड़ा दिया। वास्तव में यह बड़े ही दुःख और आश्चर्य की बात है कि जो मनुष्य एक देश को शासन करने की क्षमता रखता हो वह आत्मशासन की क्षमता से वहिर्मुख होकर, सञ्चित धन को, जो इस संसार रूपी अपार समुद्र की एक मात्र तरिणी है—इस प्रकार उड़ादे।

पाठक गण! क्लाइव ने पार्लियामेण्ट के चुनाव के झञ्झट में पड़ कर ही अपने पूर्व विचारों को उलट पलट डाला। क्लाइव के समय में भले आदमियों का धन पार्लियामेण्ट के चुनाव के समय खूब बहाया जाता था। क्लाइव के हृदय में भी "अहं" ने अड्डा जमा लिया था, और "अहं" अड्डा क्यों न जमाता? उसके पास ख़र्च करने को गांठ में धन था और उसकी प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले उसके मित्र भी थे। उसने ड्यूक आफ न्यूकेसिल के चुनाव का विपक्ष ग्रहण किया। उसकी इच्छा थी कि ड्यूक आफ न्यूकेसिल पार्लियामेण्ट में न चुना जाय और उसके बदले लार्ड सेण्डविच चुने जाँय। लार्ड सेण्डविच के पक्ष में मिस्टर फाक्स था जिसने वारिन हेस्टिङ्ग्ज़ को दोषी ठहराने में बर्क का साथ दिया था। यदि क्लाइव को कमिटी की इच्छा का हाल पहिले मालूम हो जाता तो सम्भव था कि उसका अधिक धन व्यय न होता। किन्तु जो कमिटी चुनाव के लिये गठित की गयी थी क्लाइव को उस कमिटी की राय प्रथम तो अपने अनुकूल जान पड़ी पर पीछे से कमिटी ने अपनी इच्छा के विरुद्ध विचार स्थिर किया।

इसी घटना से क्लाइव को भारतवर्ष में पुनः आने का विचार बांधना पड़ा। उधर कम्पनी के डाइरेक्टरों को भारत-

वर्ष की उस समय की स्थिति को सुन कर इस देश में भावी युद्धों के लिये एक दक्ष रणकुशल मनुष्य की खोज थी जो कम्पनी की भारतवर्षस्थित सेना का पूरा भार उठा सके। अतएव सन् १७५५ ई० में क्लाइव को इङ्गलेण्ड से भारतवर्ष के लिये दूसरी बार प्रस्थानित होना पड़ा। द्वितीय बार क्लाइव चालीस रुपये मासिक की अभागी क्लर्कशिप पर नहीं गया था। इस बार वह सेण्ट डेविड दुर्ग का गवर्नर और भारतवर्ष में कम्पनी की सम्पूर्ण सेनाओं का लेफटिनेण्ट कर्नल होकर रवाना हुआ था।

जब क्लाइव द्वितीय बार यहां आया तब इस देश की राजनैतिक दशा में विचित्र परिवर्तन हो गया था। कुचक्री डूपले स्वदेश को लौट गया था और उसके उत्तराधिकारी गोधन (Godhan) ने अङ्गरेज गवर्नर मिस्टर साण्डर्स के साथ सन्धि कर ली थी। इस सन्धि के नियमों के अनुसार फरासीसी और अङ्गरेज व्यापारियों को समुद्रतट के सब नगरों में व्यापार करने का समान अधिकार प्राप्त था। और मोहम्मदअली को उभय पक्षवालों ने आरकट का नवाब मान लिया था।

कहावत प्रचलित है कि "बिल्ली के भाग्य से छींका भी टूट पड़ता है" सो जिस समय क्लाइव यहां के लिये रवाना हुआ उस समय फरासीसियों और अङ्गरेजों में मोहम्मदअली के बारे में कुछ विवाद फिर चल पड़ा और इसी कार्य में एक ऐसी लोमहर्षण घटना सङ्घटित हुई कि जिसके कारण भारत के इतिहास के पृष्ठ आज लों कलङ्कित हो रहे हैं। जिस मोहम्मदअली के लिये अङ्गरेजों को इस देश में अपने सहयोगी फांस के साथ बहुत दिनों तक निरन्तर युद्ध में फँसा रहना

पड़ा उसी मोहम्मदअली के सजातीय नवाब सिराजुद्दौला ने अङ्गरेजों के साथ विश्वासघात किया। इससे घटना प्रवाह सहसा बदल गया और अङ्गरेजों को मदरास से हटा कर कलकत्ते में अपना अड्डा कायम करना पड़ा। इस घटना के बाद ही अङ्गरेजों द्वारा बङ्गाल विजय किया गया।

षष्ठ-अध्याय।

"तरुणी कच इव नीचः कौटिल्यं नैव विजहाति।"

[मुर्शिदाबाद के नवाब का देहान्त--सिराजुद्दौला का मुर्शिदाबाद की नवाबी पाना-फ्रान्स और ग्रेटब्रिटेन में पुनः युद्ध की आशङ्का--कलकत्ते में अङ्गरेज व्यापारियों का अपने रहने के स्थानों को सुदृढ़ करना--सिराजुद्दौला का अविवेकी चापलूसों की बातों में आकर कलकत्ते पर चढ़ाई करना--फोर्ट विलियम पर आक्रमण-अङ्गरेज कैदियों को अभय वाणी-काल कोठरी की रुधिर--शोष घटना]

सन् १७५६ ई० के एप्रिल मास में बङ्गाल के अन्तरगत मुरशिदाबाद के नवाब अलीवर्दीखां का देहान्त हुआ और इससे सिराजुद्दौला को कम उमर में मुरशिदाबाद की नवाबी मिली। बङ्गला भाषा के लेखक अब सिराजुद्दौला को अच्छा सिद्ध करने की चेष्टा करते हैं परन्तु अङ्गरेज इतिहास लेखकों ने उसको निष्ठुर, दुष्टप्रकृत और क्षुद्रहृदय बतलाया है। * अङ्गरेज इतिहास लेखक तो यहां तक लिखते हैं कि नवाब को अङ्गरेज जाति के प्रति हार्दिक घृणा थी। जो कुछ रहा हो नवयुवक नवाब की हृदयविदारी निष्ठुरता-पूर्ण कहानियां अब तक प्रचलित हैं।

* Guilty of the most detestable cruelties and full of implacable hatred towards the English"

जिस समय सिराजुद्दौला को मुरशिदाबाद की नवाबी मिली उस समय अङ्गरेज व्यापारियों की कलकत्ते में वैसी ही स्थिति थी जैसी स्थिति उनकी आरम्भ में मदरास में थी। कलकत्ते में जो भूमि उनके अधिकार में थी उस भूमि पर उनको कर देना पड़ता था और अन्य भूस्वामियों की भांति उनको भी अपनी अधिकृत भूमि में कुछ अधिकार प्राप्त थे। अङ्गरेज व्यापारियों का वास्तविक उद्देश्य अभी तक बङ्गाल में केवल व्यवसाय मात्र ही था।

इसी समय योरप में फ्रान्स और ग्रेटब्रिटिन में लड़ाई आरम्भ होने की आशङ्का उत्पन्न हुई और अङ्गरेज व्यापारियों ने, फरासीसियों से अपनी और अपने मालमता की रक्षा करने के लिये, कलकत्ते में अपने रहने के मकानों और अन्य अधिकृत स्थानों को सुरक्षित और सुदृढ़ बनाकर अपनी दूरदर्शिता का परिचय दिया।

कोई कोई मनुष्य ऐसे क्षुद्र और दुर्बल मन के होते हैं जो दूसरों की निन्दा करने में ही अपना और अपने स्वामी का कल्याण समझते हैं परन्तु वास्तव में ऐसे चापलूस लोग उभय पक्ष का अनिष्ट करते हैं। अङ्गरेज व्यापारियों को अपने रहने के गृह और अन्य स्थानों को सुदृढ़ बनाते देख, नवाब साहब के मुँहलगे चापलूसों ने नवाब के कण्ठ में यह बात उतार दी कि कलकत्ते में रहने वाले अङ्गरेज व्यापारी उसके (नवाब के) विरुद्ध किलाबन्दी कर रहे हैं और वे लोग बहुत जल्द नवाब के मित्र फरासीसियों पर चढ़ाई करने वाले हैं।

घटना क्रम से दैवात् इसी समय नवाब साहब के कई एक कोपभाजन कर्मचारी कठोर दण्ड से परित्राण पाने के

अर्थ मुरशिदाबाद को छोड़ कलकत्ते भाग गये। इस घटना से नवाब साहब को चापलूसों की कही हुई बातें रत्ती रत्ती सत्य जच गयीं। अनन्तर कुछ लोगों ने नवाब से कहा कि अङ्गरेज व्यापारियों के पास अपार सम्पत्ति हैं और उनको पराजित करने वाले को बहुत सा धन भी मिल सकता है।

मित्र फरासीसियों को बचाने की कामना; कोपभाजन कर्मचारियों को दण्ड देने की उतकट उत्कण्ठा और अपार धन हाथ लगने की लालसा ने नवयुवक नवाब सिराजुद्दौला को अङ्गरेजों पर आक्रमण करने के लिये विवश किया। उसने प्रथम तो मुरशिदाबाद के निकट कासिमबाजार वाली अङ्गरेज व्यापारियों की कोठी लूटी और उस कोठी में जो धन मिला उसको अपने हस्तगत कर कोठी में रहने वाले अङ्गरेज व्यापारियों को बन्दी बनाया। अनन्तर उसने पचास सहस्र पैदल सैना और कई एक तोपखानों सहित कलकत्ते पर चढ़ाई की।

कहते हैं जिस समय सिराजुद्दौला ने कलकत्ते के विलियम दुर्ग पर आक्रमण किया, उस समय अङ्गरेजों की सब मिलाकर कुल संख्या केवल पांच सौ के लगभग थी। तीन दिन लों पांच सौ अङ्गरेजों ने आत्मरक्षा के अर्थ नवाब की पचास हज़ार कट्टरसेना से युद्ध कर चतुर्थ दिवस विजय की आशा परित्याग कर के, अपनी स्त्रियों और बच्चों को जहाजों पर पहुंचा दिया। जो लोग स्त्रियों और बच्चों को जहाज पर पहुंचाने गये थे उनमें से भी बहुत कम लोग दुर्ग में लौट कर आये। बहुत से तो स्त्री और बच्चों की ममता में पड़ स्वदेश और स्वजाति की ममता को एक साथ तिलाञ्जलि दे जहाजों पर ही बैठ रहे।

जीवन के लिये भागने वाले और रणभीरु इन अङ्गरेजों में फोर्टविलियम के गवर्नर और कर्नल नाम को कलङ्कित करने वाले-ड्रेक साहब भी थे। गवर्नर के इस प्रकार जान लेकर भाग जाने पर दुर्ग में बचे हुए वीर अङ्गरेजों ने हालवेल साहब को दुर्ग का गवर्नर बना लिया। नवाब की पचास सहस्र सेना और कई एक तोपखानों की निरन्तर मार के सामने भला ये बेचारे मुट्ठीभर अङ्गरेज कब तक ठहर सक्ते थे—सो अन्त में पांचवें दिन तीसरे पहर अङ्गरेजों ने नवाब के हाथ में आत्म-समर्पण कर दिया।

अनन्तर जो पैशाचिक व्यवहार इन लोगों के साथ किया गया-उसको सुनकर अङ्गरेज जाति ही नहीं किन्तु योरूप की सारी जातियों का हृदय कांप उठा। जिन अङ्गरेजों ने आत्म समर्पण किया था—वे सब नवाब साहब के सामने पंक्तिबद्ध करके खड़े किये गये। नवाब ने हालवेल साहब को इस युद्ध के लिये बहुत धिक्कारा। किन्तु साथ ही उन कैदियों को विश्वास भी दिलाया कि उनका प्राण अपहरण नहीं किया जायगा। यह ऊपरी अभयवाणी देकर नवाब साहब तो अपने आरामगाह में तशरीफ ले गये और ये कैदी एक अङ्गरेजी बारक में एकत्र किये गये। इस बारक के एक छोर पर अङ्गरेजी फौजी कैदियों के लिये हवालात के ढङ्ग की एक कोठरी थी जिसका अङ्गरेजी नाम काल-कोठरी (Black hole) था। कलकत्ते में यह काल कोठरी सन् १८१८ ई० तक जैसी की तैसी बनी थी पर बाद को न जाने क्यों वह गिरा दी गयी। इस काल कोठरी का स्मारक कलकत्ते में अभी तक मौजूद है।

कहते हैं इसी काल कोठरी में वे १४६ अङ्गरेज कैदी

भेड़ों की तरह ठूस दिये गये। प्रथम जब नवाब के सिपाहियों ने, जो उन लोगों पर निगहबानी करने के लिये नियुक्त किये गये उन १४६ लोगों से उस बीस बर्ग फीट की कोठरी में जाने के लिये निर्देश किया, तब उन लोगों ने अपने रक्षकों की उस बात को हंसी की बात समझी। परन्तु जब सिपाहियों ने तलवारें म्यान से खींच कर और डण्डों को हाथ में ले-कैदियों को प्राणभय दिखलाया तब वे लोग उस कोठरी में घुसने के लिये विवश हुए।

रात्रि का समय, बङ्गाल की गर्मी और एक अति छोटी कोठरी * में १४६ मनुष्य ठूस दिये गये। ऐसे स्थान की यमयातना का कुछ भी विचार न कर नवाबी गारद ने १४६ कैदियों को कोठरी में ठूस बाहर से कोठरी का दर्वाज़ा बन्द कर ताला डाल दिया। थोड़ी ही देर बाद उस कोठरी में हृयदविदारी दृश्य आरम्भ हुआ। ज्यों ज्यों रात्रि बढ़ती गई वैसे ही वैसे कैदियों का कष्ट बढ़ता गया। स्वच्छ हवा के न मिलने से और सांस लेने में कठिनता होने से दम घुटने लगा; प्यास के मारे ओठ सूखने लगे और कोई २ कैदी अचेत हो मूर्छित भी होने लगा। कोठरी के बीच में जो लोग पड़ गये थे उनकी यातना का तो कहना ही क्या था। बीच में जो लोग थे उनकी यातना पराकाष्ठा को पहुंच गयी और उनमें कई आदमी उस यातना से ही नहीं किन्तु सभी सांसारिक

* इस कोठरी का वर्ग फल बतलाने में अङ्गरेज इतिहास लेखकों का मत भेद पाया जाता है। मिस्टर होमस इस कोठरी का बर्गफल २० फीट बतलाते हैं और डाक्टर पोप ने Text book of Indian History में तथा हालवेल साहब ने (जो स्वयं इस कोठरी मे मृत:प्राय दशा को प्राप्त हुए थे) अपने पत्र में इस कोठरी का वर्ग फल केवल १८ फीट ही लिखा है। यह कोठरी तीन ओर से बन्द थी केवल एक दीवार में पवन के आने जाने के लिये सिर्फ २ खिड़कियां थीं।

यातनाओं से एक दम छूट गये। इन लोगों के मरने से और गर्मी अधिक होने से कोठरी के अन्दर मुर्दे सड़ने लगे। मुर्दों के सड़ते ही असह्य दुर्गन्ध भी उत्पन्न हुई और कोठरी में अब "पानी दो" "पानी दो" का गगनभेदी कलरव होने लगा।

हालवेल साहब ने उस कुत्ते की मृत्यु से बचने के लिये गारद के हवलदार को खिड़की के पास बुला धन का लालच दिखलाया और हवलदार कुछ समय के लिये बाहर भी गया परन्तु लौटकर उसने यही संदेसा सुनाया कि "नवाब साहब सो रहे हैं और उनको सोते से जगाना अपनी मृत्यु को बुलाना है"। पाठको! जिस समय मनुष्य देहधारी वे हतभाग्य प्राणी उस कोठरी में विषयुक्त पवन के कारण अचेत हो कर मृत्यु की गोद में सो रहे थे उसी समय नवयुवक नवाब मुलायम गद्दे तकियों से लिपट कर सुख नींद में खुर्राटे भर रहा था और उसकी सेना के कुछ नरपिशाच, उन कैदियों की यंत्रणा का सुखानुभव करने के लिये, जलती मशालें हाथ में लेकर, खिड़कियों के पास खड़े मृत्युक्रीड़ा को देख, प्रसन्न हो रहे थे।

जब आर्त्तस्वर से हतभाग्य अङ्गरेज जल के लिये प्रार्थना करने लगे तब कुछ सहृदय सिपाहियों का हृदय द्रवीभूत हुआ और उन लोगों ने मशकों में पानी भर के कैदियों को खिड़कियों के सीखचों में से जल पिलाना आरम्भ किया। जल आते ही कोठरी में बड़ी खलबली पड़ गयी। सब लोग सब से प्रथम जल पीने के लिए व्याकुल होने लगे। जिस प्रकार कृष्ण भगवान् की माया से गान्धारी ने अपने पुत्रों के मृत शरीरों को तर ऊपर रख उनकी छातियों के ऊपर खड़े होकर भूख बुझाने के

लिये एक बदरी फल (बैर) तोड़ने की चेष्टा की थी वैसे ही ये क़ैदी भी अपने आत्मीय मित्रों और कुटुम्बियों के मृत शरीरों को पैरों से कुचलते हुए जल पीने के लिये किसी तरह खिड़की तक पहुंचने की चेष्टा करने लगे ।

ज्यों त्यों वह चिरस्मरणीय रात्रि व्यतीत हुई । प्रातःकाल होते ही इस घटना की खबर नवाब को लगी । उसने इस शोकप्रद घटना पर अणुमात्र भी शोक प्रकट किये विना ही बड़ी घबड़ाहट से हालवेल साहब के जीवित रहने की बात पूछी । पाठक क्या बतला सकते हैं कि हालवेल साहब पर नवाब साहब क्यों इतने अनुरक्त थे ? कारण यही था कि नवाब साहब से लोगों ने कह दिया था कि विलियम दुर्ग में बहुत धन गड़ा हुआ है जो हालवेल को ही मालूम है । यदि हालवेल मर गया तो नवाब को गड़ा हुआ धन कौन बतलावेगा । यह धन की लिप्सा थी जिससे नवाब साहब ने हालवेल की खैरसल्ला खैराफियत जबरन पुछवाई । नवाब ने हालवेल का हाल जानने के लिये व्यग्र हो स्वयं जाकर कोठरी का दर्वाजा खुलवाया । दर्वाजा खुलने पर १४६ में से केवल २३ क़ैदी जीवित बचे । जो मर गये थे उनके मृत शरीरों को टाङ्ग पकड़वा कर खिचवाते हुए कोठरी के समीप एक गड्ढे में फिकवा दिया और उस गड्ढे को मिट्टी से बन्द करवा दिया । जो लोग जीवित थे उनकी सूरतें एक रात्रि में ही बिलकुल बदल गयी थीं उनके पास रहने वाले उनके कुटुम्बी भी यदि उनको उस दिन देखते तो कदाचित ही वे अपने सम्बन्धियों को पहिचान पाते ।

काल कोठरी की उक्त घटना को हमारे * बङ्गला साहित्य सेवी एक प्रकार की उलटी रीति से सिद्ध करके निष्ठुर हृदय सिराजुद्दौला को निर्दोष सिद्ध करते हैं। काल कोठरी की घटना को लगभग १५० वर्ष के व्यतीत हो चुके। काल कोठरी भी गिरवा दी गयी। ऐसी दशा में अर्वाचीन लेखक काल कोठरी की घटना को भले ही मिथ्या सिद्ध कर के सिराजुद्दौला की निष्ठुरता और उसके विश्वासघात को इतिहास के पृष्ठों से मिटाने की चेष्टा करें पर अतीत काल में सिराजुद्दौला के सजातियों ने जैसे अमानुषिक अत्याचार भारतीय प्रजा पर किये हैं, जिनको अर्वाचीन लेखक भी स्वीकार करते हैं और जिन अत्याचारों से भारत के इतिहास में मुसलमानी-काल (Mohamedan Period) के अध्याय के अध्याय अब तक पूर्ववत् कलङ्कित हो रहे हैं उनको देख सुन कर विचारशील लोग काल कोठरी की घटना के विषय में-धूम देख कर पर्वत पर अग्नि का होना सहज ही अनुमान कर सक्ते हैं।

बीते समय के नवाब और नादिरशाह से अत्याचारी अब नहीं हैं परन्तु इतने सालों के बाद भी जब कभी किसी भीषण अत्याचार की उपमा दी जाती है तब "नादिरशाही" अथवा "नवाबी" अत्याचार ही स्मरण हो आते हैं। सैकड़ों वर्ष पूर्व पाश्चात्य आक्रमणकारियों और उनके भारतीय वंशधरों ने जो अत्याचार भारत की सीधी और भोली प्रजा पर किये थे उनके पाठ और स्मरण मात्र से आज भी सहृदय लोगों के हृदय कांपने लगते हैं। अर्वाचीन इतिहास लेखकों ने काल कोठरी की घटना को लेकर इस लिये भारतीय

* सिराजुद्दौला के विषय में बङ्गला भाषा में एक पुस्तक छपी है।

इतिहासों के पृष्ठों को काला किया है कि काल कोठरी की घटना में भुक्तभोगी अङ्गरेज थे; नहीं तो सम्भव था बहुत से अन्य नवाबी अत्याचारों की भांति काल कोठरी की घटना कोभी भारत के इतिहास में स्थान न मिलता और ऐसा होने से हमारे वङ्गाली लेखकों का लिखना लोगों को सत्य भी जच जाता। परन्तु वास्तव में बात यही है कि काल कोठरी की घटना जो इतिहासों में वर्णित है वह अक्षर अक्षर सत्य है।

देव मन्दिरों को नष्ट भ्रष्ट करना, देव मूर्तियों को तोड़ कर अपने महलों की सीड़ियों में जड़वाना और घरों में घुस कर हिन्दू नारियों के सतीत्व को नष्ट करना मुसलमान बादशाहों और नवाबों का खेल कहा जाय तो अत्युक्त न होगा। औरों की बात न सही कुटिल नीतिज्ञ अकबर बादशाह की नीति पर ही यदि विचार किया जाय तो उसने भी हिन्दूजाति को बिगाड़ने में और उसकी विशुद्धता नष्ट करने में कोई कोर कसर उठा नहीं रक्खी थी। राजपूतों की कन्याओं के साथ विवाह करने में वह भी न चूका और जिसने उसकी इस नीति का प्रतिवाद किया वही अकबर का शत्रु हुआ। जहां तक हो सके हिन्दू नारियों के सतीत्व को बिगाड़ना अतीत काल के मुसलमानों ने प्रायः एक नियम सा बना रक्खा था। सो उसी नियम के अनुसार सिराजुद्दौला ने भी काम किया।

उन बचे हुए २३ कैदियों में एक रूपवती गौराङ्गी युवती भी थी। उस युवती पर नवाब साहब की नियत डिग गयी और उसको ज़बरदस्ती आपने अपने ज़नान खाने (Harem) में दाखिल कर लिया। अन्य बाइस अङ्गरेजों की तलाशी ली गयी

जिनके पास कुछ भी धन निकला उनको तो रिहाई मिली पर जो धनहीन थे-जिनके पास कुछ भी नहीं था उनके साथ बड़ा निष्ठुर व्यवहार किया गया।

इस घटना की आलोचना करते हुए कुछ लोग नवाब को निर्दोष बतला—नवाब के सिपाहियों को दोषी बतलाते हैं। क्योंकि कैदी अङ्गरेजों द्वारा युद्ध में नवाब के सिपाहियों के सम्बन्धी मारे गये थे। कहा जाता है इसी के पलटे में, सिपाहियों ने उन कैदी अङ्गरेजों के साथ वह अमानुषिक व्यवहार किया था। यदि यही बात रही हो तो इन लोगों को भी नीच प्रकृति कहना अत्युक्त न होगा। क्योंकि रूस जापान युद्ध में पराजित रूसी सैनिकों के साथ विजयी जापानियों ने जैसा व्यवहार किया था उसके लिये सभ्य समाज के सभी लोग आज लों जापान के सैनिकों की सहस्रमुख से श्लाघा कर रहे हैं। यह नियम है कि सैनिक अपने अफसर और शासक की इच्छा के अधीन रह कर ही काम करते हैं। अतः इस अमानुषिक कार्य में नवाब का हाथ नहीं था-विना किसी प्रबल प्रमाण के पाये, इस पर, सहसा विश्वास करने को हमारा जी नहीं चाहता।

दूसरे दिन जब काल कोठरी की घटना सिराजुद्दौला को सुनाई गयी और जब स्वयं उसने जाकर कोठरी खुलवाई, तब उसने अपनी अभयवाणी के विरुद्ध कार्य करने वालों को दण्ड देना तो एक ओर रहा उनको धिक्कारा तक नहीं। अपने अधीनस्थ सैनिकों को दण्ड न दिया तो न सही किन्तु जिन निरपराध अङ्गरेजों को अभयवाणी देकर भी उनके प्राण लिये गये थे उनके मृत शरीरों के प्रति मनुष्यत्व का ही विचार कर

उचित व्यवहार तो किया होता और उनको भली भांति समाधि तो दी होती तथा जीवित लोगों के साथ (प्रायश्चित स्वरूप) अच्छा व्यवहार तो किया होता; किन्तु नहीं—अच्छा व्यवहार करना तो एक ओर रहा उसने अङ्गरेज जाति के सभी व्यापारियों को विलियम दुर्ग के आस पास रहने का भी निषेध कर दिया । अस्तु ।

सप्तम-अध्याय ।

"उष्णो दहति चाङ्गारः शीतः कृष्णायते करम्"

[मदरास में काल कोठरी की घटना की खबर-अङ्गरेजों में हलचल-सिराजुद्दौला से बदला लेने के लिये क्लाइव का प्रस्थान-अङ्गरेजों का हुगली पर पुनः अधिकार नवाब से सन्धि की बात चीत-नवाब का फरासीसियों से मिलकर षड्यंत्र रचना-चन्द्र नगर पर अङ्गरेजी अधिकार-सिराजुद्दौला के विरुद्ध कुटिल मंत्रणा-हिस्सा बांट की बात-जाली सन्धिपत्र और जाली हस्ताक्षर]

काल कोठरी की हृदय-विदारी घटना के समाचार मदरास स्थित अङ्गरेज व्यापारियों से अधिक दिन लों नहीं छिप सके । सन् १७५६ ई० की ग्रीष्म ऋतु में सेण्ट डेविड दुर्ग में यह वृतान्त पहुंचते ही हाहाकार मच गया । जिन अङ्गरेजों के कुटुम्बी अथवा जिन स्त्रियों के पति काल कोठरी की घटना में निष्ठुरता पूर्वक मारे गये थे-उनके आर्तनाद से सेण्टडेविड दुर्ग गूंज उठा ।

जिस समय का यह हाल है उस समय लों पाश्चात्य विज्ञान का आधिपत्य, इस देश में, जमने नहीं पाया था । इन दिनों की भांति कलकत्ते की खबर मदरास तक तार द्वारा

मिनटों में नहीं पहुंचती थी। इसी से कलकत्ते में एप्रिल मास में उद्धृत घटना का समाचार सेण्ट डेविड दुर्ग में जून मास में और मदरास में अगस्त मास में पहुंचा। मदरास में इस समाचार के प्रकाशित होते ही 'बदला' 'बदला' (Revenge) लेने की ध्वनि से नगर प्रतिध्वनित होने लगा। बदला किस प्रकार और कौन ले—इन बातों का विचार होने लगा। अन्त में नवाब को दूज का बदला तीज देने की लालसा से, लोगों को क्लाइव का स्मरण हुआ और उसको बुलाने के लिये सेण्ट डेविड दुर्ग को पियादे रवाने किये गये।

इङ्गलेण्ड से आने बाद क्लाइव वाटसन के साथ अङ्गीरिया नामक समुद्री लुटेरों का एक समुद्री अड्डा जीत चुका था और जिस समय उक्त लोमहर्षण घटना के समाचार सेण्ट डेविड दुर्ग में प्रकाशित हुए उसके थोड़े ही काल पूर्व क्लाइव घेरिया (Gheriah) को कम्पनी के पूर्ण अधिकार में करके लौटा था। कहते हैं समुद्री डाकुओं के अड्डे में क्लाइव को डेढ़ लाख पाउण्ड का माल हाथ लगा था। आरकट दुर्ग की रक्षा करने में जिस वस्तु की आवश्यकता नहीं थी और अङ्गीरिया तथा घेरिया को अधिकृत करने के लिये जिस वस्तु की अपेक्षा नहीं थी उस वस्तु की अपेक्षा क्लाइव को अब आन पड़ी। नवाब को उसके दुष्टकर्मों का फल चखाने के लिये क्लाइव को उच्चकोटि के रणपण्डित होने के साथ ही सुदक्ष राजनैतिक क्षमता प्रदर्शन करने का अवसर प्राप्त हुआ।

क्लाइव नौ सौ सैनिक गोरे और पन्द्रह सौ देशी सिपाही अपने साथ ले नवाब को उसके कुकर्मों का फल चखाने के लिये रवाना हुआ। क्लाइव के साथ यद्यपि गोरे और देशी

सब मिला कर केवल चौबीस सौ ही योद्धा थे तथापि इन योद्धाओं में से प्रत्येक का बल दस साधारण सिपाहियों के तुल्य था। ये लोग अपने अफसर क्लाइव की आज्ञा पालनार्थ प्राण तक दे देने वाले थे। क्लाइव आक्टूबर मास में अपनी वाहिनी सहित जल मार्ग से रवाना हो दिसम्बर मास में हुगली पहुंचा। अर्थात् काल कोठरी की घटना से नौ मास बाद अङ्गरेज लोग नवाब से उसके दुष्ट कर्मों का बदला लेने के लिये हुगली पहुंचे। क्लाइव ने पहुंचते ही क्रमशः बजबज, कलकत्ता, फोर्ट विलियम आदि स्थानों पर अपना अधिकार जमाया। बजबज लेते समय वारिन हेस्टिङ्गज* ने वालण्टीयर बन कर युद्ध किया और सब से प्रथम क्लाइव और हेस्टिङ्गज का परस्पर परिचय बजबज में ही हुआ। यद्यपि क्लाइव और हेस्टिङ्गज की अवस्था में केवल सात वर्ष का ही अन्तर था; तथापि क्लाइव की ख्याति अधिक हो गयी थी। क्लाइव को देख कर हेस्टिङ्गज को विश्वास हो गया था कि चेष्टा करने पर वह भी क्लाइव की भांति किसी दिन अपनी उन्नति कर सकेगा। हेस्टिङ्गज ने उन्नति की, परन्तु रणक्षेत्र द्वारा नहीं। क्लाइव की अनुमति से उसने सिविलियन बना रहना ही स्वीकार किया।

कलकत्ते से २५ मील आगे जब क्लाइव ने धनसम्पन्न समृद्धशाली हुगली नगर पर अङ्गरेजों का खोया हुआ अधिकार पुनः प्राप्त किया जिसमें कमान आइर कोट (Eyre Coote) की बड़ी वाह वाही हुई थी; तब नवाब साहब की मोहनिद्रा

* वारिन हेसटिङ्ग की भी उन्नति इसी देश में हुई थी-एक साधारण व्यक्ति होने पर भी वह इस देश का अधीश्वर बन गया था। इसकी भी जीवनी लिखने की हमारी इच्छा है।

भङ्ग हुई और सन्धि के लिये प्रस्ताव किया । करनाटक और अङ्गीरिया आदि युद्धों में क्लाइव की वीरता और दृढ़ता का वृतान्त सिराजुद्दौला सुन चुका था । क्लाइव की वीरता उस समय इस देश में इतनी प्रसिद्ध थी कि लोग क्लाइव को "साबित" जङ्ग (Sabitjung Firm in fight) कहने लगे थे ।

जिन अङ्गरेजों को सिराजुद्दौला ने लूटा था उनका हर्जा भी देने को अब नवाब राजी था । लूटे हुए धन को फेर देने के लिये तो नवाब साहब राजी हो गये थे परन्तु १२३ जानों के लिये नवाब साहब ने क्या हर्जा देना विचारा था इसका इतिवृत्त किसी इतिहास लेखक ने नहीं लिखा ।

क्लाइव के जीवन में यह समय उसके लिये बड़ा नाजुक था । अभी लों उसने जो ख्याति और विजय प्राप्त की थी उसका प्रधान कारण क्लाइव की वीरोचित प्रकृति थी, किन्तु अब उसके लिये राजनैतिक प्रतिभा भी दिखलाने का समय उपस्थित हुआ था । क्लाइव का यदि वश चलता तो वह अप्रतिहत उत्साह और वीरगति से आगे बढ़ घोर संग्राम कर शत्रु को उसके दुष्ट कर्म का पूरा फल चखाता पर यह मामला अब पञ्चायत में पड़ गया और इसी लिये एक प्रकार से क्लाइव की स्वतन्त्रता अपहरित हो गयी; जिससे दुष्ट कुकर्मी नवाब को उचित दण्ड मिलने में विलम्ब हुआ ।

जिस कमिटी के अधीन यह कार्य हुआ था उसकी इच्छा नवाब के साथ सन्धि कर लेने की थी अतः सन्धि के लिये पैगाम भुगतने लगे । सन्धि की बात चीत वाटसन साहब (जो कम्पनी के एक कर्मचारी थे) और अमीचन्द द्वारा होती थी । इन दोनों के बीच में जो बात चीत होती थी

उसका अन्तिम परिणाम अच्छा हुआ । इसका कारण अङ्गरेज इतिहास लेखकों ने क्लाइव में राजनैतिक पूर्ण ज्ञान की कमी बतलाया है । यद्यपि सन्धि का मामला कमिटी में पड़ा हुआ था; तथापि कमिटी पर सर्वप्रधान अधिकार क्लाइव का ही था क्योंकि वह स्वयं योद्धा भी था । क्लाइव में राजनैतिक निपुणता का अभाव होने से ही, सन्धि सम्बन्धी उस समिति का कोई निश्चित सिद्धान्त ही न हो पाया और अन्त में इस समिति के मन्तव्यों के विरुद्ध क्लाइव को कार्य करना पड़ा । इस सन्धि के मामले ने क्लाइव के चमकते हुए चरित्रों पर एक काला पर्दा डाल दिया । क्लाइव की शुद्ध देशहितैषिणी सुकीर्ति रूपी ज्योत्स्ना में, उसकी मानसिक निर्बलता और धन के प्रलोभन से अन्धकार छागया ।

वाटसन की इच्छा के विरुद्ध नवाब और अङ्गरेजों में सुलह हुई और नये सन्धिपत्र के अनुसार बङ्गाल में अङ्गरेजों को पुनः अधिकार प्राप्त हुए । परन्तु वाटसन की इच्छानुसार इस सन्धि से दुष्ट नवाब को उसके घोर दुष्ट कर्म का कड़ा दण्ड न मिला । इसका कारण यही था कि क्लाइव को अपने राजनीतिज्ञ होने का अभिमान हो गया था । और इसी लिये वह अपनी राजनैतिक दृष्टि से सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर करने को राजी हुआ । क्लाइव को राजी होते देख लोगों को इस बात का आश्चर्य हुआ कि ब्रिटिश जाति ने, अपने साथ निष्ठुर व्यवहार करने वाले को उचित शिक्षा दिये विना ही क्योंकर सन्धि करली !

यूरुप में "सात वर्ष का युद्ध" ("Seven years' war") आरम्भ हुआ । नवाब को यह अच्छा अवसर हाथ लगा । उसने ब-

ङ्गाल के अङ्गरेजों से सन्धि तो की पर अपने पुराने कृपापात्र फ-रासीसियों से दक्षिण प्रान्त स्थिति अङ्गरेजों को दबाने के लिये अनुरोध किया । नवाब को विश्वास था कि ऐसा करने से ब-ङ्गाल स्थित अङ्गरेजी सेना जब दक्षिण में अपना अधिकार ब-नाये रखने को जावेगी तब बङ्गाल अनायास खाली हो जायगा और पूर्ववत् वह पुनः बङ्गाल में विना किसी आपत्ति के, नवाबी करेगा । नवाब की यह चाल यद्यपि उसके एक अच्छे राजनै-तिक होने का परिचय देती है तथापि जब मनुष्य के जीवन का कटोरा पापों से लबालब भर जाता है तब अच्छी चाल भी बुरी हो जाती है ।

यद्यपि यूरुप में फ्रांस और इङ्गलेण्ड से युद्ध छिड़ गया था; तथापि क्लाइव की इच्छा भारतवर्ष में फ्रांस के साथ सुलह बनाये रखने की ही थी । किन्तु क्लाइव को जब नवाब साहब की कुटिलता का पता लगा, तब उसने एडमिरल वाटसन के अ-नुमोदन से फरासीसियों के भारतीय उपनिवेश चन्द्रनगर पर आक्रमण करना निश्चित किया । नवाब और अङ्गरेजों में जो सन्धि हुई थी उसके अनुसार नवाब से जब चन्द्रनगर पर आ-क्रमण करने के लिये सहायता देने को कहा गया, तब उसने ऐसा करने से सहसा नाहीं की, किन्तु उसने गुप्तरूप से फरासी-सियों की धन और युद्ध सामग्री द्वारा सहायता की ।

चन्द्रनगर पर अङ्गरेजों ने हमला किया और जब लों फ-रासीसियों की सहायता के लिये सेना आवे ही आवे-तब लों अङ्गरेजों ने चन्द्रनगर पर पूर्ण अङ्गरेजी अधिकार कर लिया। इस युद्ध में वास्तव में एडमिरल वाटसन ने ही विजय प्राप्त की थी । यह एडमिरल कलकत्ते में मरा और उसके समाधि-स्तम्भ पर अब तक यह लिखा है:—

Gheriah taken, February 31;1756.
Calcutta, January 2, 1757
Chandernagore taken March 1757.
"Exegisti monumentem aere perennius."

नवाब ने जो कुचक्र रचा था उसके अनुसार यद्यपि उसको कुछ भी सहायता नहीं मिली; तथापि उसकी दुष्टता की मात्रा में कुछ भी कमी नहीं हुई। एक ओर तो उसने अङ्गरेजों को सन्धि के अनुसार हर्जे की एक किश्त भेजी और दूसरी ओर कटक प्रान्त से बङ्गाल प्रान्त पर आक्रमण करने के लिये फरासीसी बिसी (Bussy) से अनुरोध किया। पाठक जानते होंगे कि कटक और कलकत्ते के बीच दो सौ मील से अधिक अन्तर नहीं है।

नवाब सिराजुद्दौला आसुरिक तलवार बल से, अहङ्कार की प्रतिमूर्ति बनकर, उदारता की नीति पर पदाघात करता हुआ अपनी प्रजा अपने अधीनस्थ कर्मचारियों और अपने शुभचिन्तक मित्रों को भी अपना घोर शत्रु बना चुका था। जिस नवाब का घर ही शत्रुपूर्ण था, जिसके मित्र शत्रु थे, प्रजा शत्रु थी, स्वजन शत्रु थे—और कर्मचारी शत्रु थे—जिसके सब केवल शत्रु ही शत्रु बन चुके थे; जो सब को शत्रु बना कर अहर्निशि शत्रुपुरी में वास करता था, वह नवाब सिराजुद्दौला भला कब सुखी रह तथा अपनी सेना पर निर्भर रह कर प्रतापशाली विदेशियों का सामना कर सक्ता था। नवाब की प्रजा उसके अत्याचारों से व्यथित हो उसको नवाबी से उतार देने के लिये व्यग्र हो रही थी। जब नवाब साहब स्वयं अत्याचारी थे तब उनके अधीनस्थ कर्मचारी उनसे भी बढ़ कर प्रजा पर अत्याचार किया करते थे। नवाबी और बादशाही

शासन काल में जो जो अत्याचार इस देश की प्रजा पर किये गये उनका स्मरण मात्र अब भी हृदय को कंपा देने की शक्ति रखता है।

पाठको! हमारा यही भारतवर्ष किसी समय अशान्त अत्याचार और नाना प्रकार के क्लेशों की क्रीड़ास्थली बन चुका है। सैकड़ों सहस्त्रों सती साध्वी हिन्दूरमणियों के उष्ण अश्रुजल से इसी भारत वसुन्धरा की ज्वाला असहनीय हो चुकी है। इसी आर्यभूमि में पिता के सामने, माता के सामने, म्लेच्छ संस्पर्श से कितनी ही अभागिनी कुलवतियों का सर्वनाश हो चुका है। इसी पुण्यभूमि में हम लोगों की कितनी ही पूजनीय रत्न आदि से जटित देव मूर्तियाँ धन के लोभ से भङ्ग कर दी जा चुकी हैं और इसी जगद्विख्यात देश में ब्राह्मणों का एक मात्र धन, उनके अगणित ग्रन्थों से नवाबों और बदशाहों के हम्माम और बावर्चीखाने महीनों गरम किये जाचुके हैं।

ऐसे ही नाना प्रकार के अत्याचारों से उत्पीडित नवाब सिराजुद्दौला की प्रजा उसके अत्याचारों से परित्राण पाने के लिये नवाब के विरुद्ध कुचक्र रचना में प्रवृत्त हुई।

बङ्गाल प्रान्त के सुप्रसिद्ध धनाढ्य, जगत सेठ नामक एक हिन्दू महाजन, नवाब की सेना के प्रधान सेनापति मीर जाफर और उनके खजानची रायदुल्ला भी इस कुचक्र में सम्मिलित हुए थे। कुचक्रियों को अपनी सफलता का पूर्ण विश्वास था। क्योंकि मुरशिदाबाद के रेजीडेण्ट मिस्टर वाट और क्लाइव की कलकत्ते वाली ब्रिटिश काउनसिल भी इस कुचक्र में सम्मिलित थी। यद्यपि समिति रूप से कलकत्ते की ब्रिटिश काउनसिल को हम इस अधर्म नीति में सम्मिलित कह सकें

हैं; तथापि इस काउन्सिल में ऐसे भी लोग थे जो ऐसी प्रपञ्च रचनाओं को पाप समझ ईश्वर से डरते थे। कहने पर क्लाइव समाधान करने के लिये कह देता था कि दुष्ट को जिस तरह हो दण्ड देना ही अच्छा है । क्लाइव अन्त लों अपने इस सिद्धान्त से विचलित नहीं हुआ और इसी लिये मत भेद रहने पर काउनसिल को क्लाइव की इच्छानुसार कार्य करना पड़ा।

इन कुचक्रियों ने कुचक्र रचना के पूर्व अपने लाभ की बातें सोच विचार कर आपस में स्थिर कर ली थीं । मीर जाफर तो अपने स्वामी के साथ विश्वासघात करने को इस लिये कटिबद्ध था कि अन्त में उसको बङ्गाल की नवाबी मिलेगी। और कलकत्ते की काउनसिल को मीर जाफर ने, बङ्गाल की नवाबी पाने पर, अङ्गरेजों को बहुत सा धन देने की उनके साथ प्रतिज्ञा की थी । डाक्टर पोप लिखते हैं कि यह बात भी प्रथम से ही निश्चित हो गयी थी कि सफलता प्राप्त होने पर इङ्गलिश गुप्त समिति के सभ्यों में भी एक बड़ी धनराशि विभक्त की जायगी । *

अपने अपने लाभ की बातें स्थिर हो चुकने पर भी बीच में एक झगड़ा पैदा होगया । नवाब और अङ्गरेजों के बीच जासूसी का काम करने वाले अमीचन्द थे। अङ्गरेज इतिहास लेखकों के कथनानुसार अमीचन्द बङ्गाली थे परन्तु अग्रवाल कुलोत्पन्न बाबू हरिश्चन्द्र ने " उत्तरार्द्धभक्तमाल " में अपनी

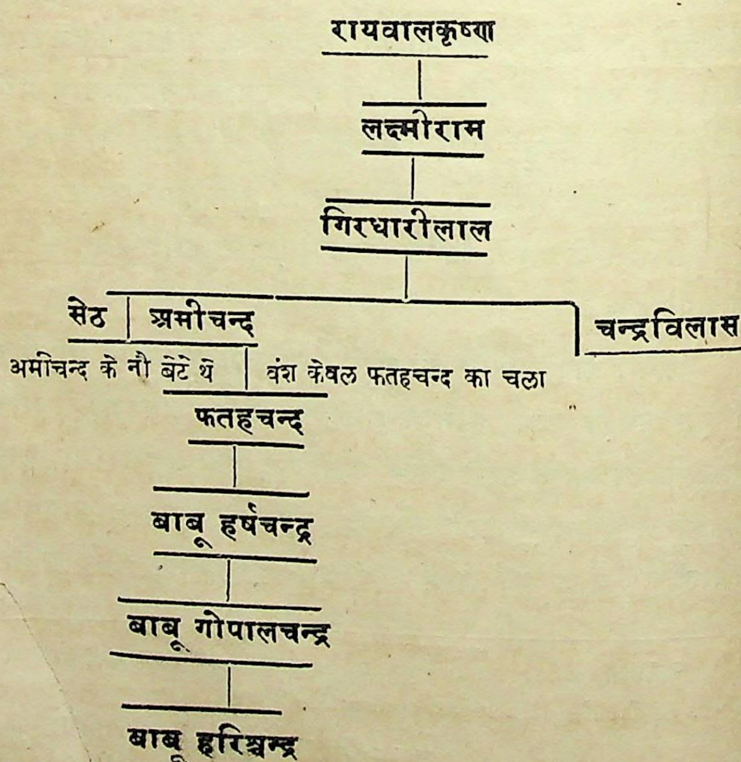
* While a large sum was to be distributed among the members of the English secret committee"

Dr: Popes—British Power in Bengal P. 203

वंशावली में अमीचन्द को अपना पूर्वज बतलाया है (१) और बाबू अक्षय कुमार मित्र ने स्वरचित "सिराजुद्दौला" नामक

(१) "वैश्य अग्रकुल में प्रगट बालकृष्ण कुलपाल
ता सुत गिरधर चरन रत, बर गिरधारी लाल
अमीचन्द तिनके तनय फतेचन्द ताजन्द
हरख चन्द जिनके भये निज कुल सागर चन्द
× ÷ + + +
पारवती की कूख सों तिनसों प्रगट अमन्द
गोकुल चन्दाग्रज भये भक्तदास हरिचंद"

और बाबू राधाकृष्णदास जी ने बाबू हरिश्चन्द्र जी के जीवन चरित में उनका वंशवृक्ष यों बनाया है



पुस्तक में लिखा है "हिन्दू वणिकों में उमाचरण का नाम अङ्गरेजों के इतिहास में अमीचन्द कह कर प्रसिद्ध है"। सम्भव है अङ्गरेज इतिहास लेखकों ने बङ्गाल में वाणिज्य करने से अमीचन्द को बङ्गाली समझा हो किन्तु उमाचरण को अङ्गरेज इतिहास लेखकों ने अमीचन्द लिखा हो यह बात हमारी समझ में नहीं आती। अस्तु जो कुछ हो। जब सब बातें नवाब और अङ्गरेजों के बीच निश्चित हो चुकी तब अङ्गरेज इतिहास लेखकों के लेखानुसार अमीचन्द का लालच बढ़ा और उनहों ने कहा कि या तो उनको तीन लाख रुपया और दिये जाने की एक धारा सन्धि पत्र में बढ़ायी जाय नहीं तो वह अब सब भगडा फोड़ देंगे और भगडा फूटते ही सब कुचक्रियों को प्राण दण्ड मिलेगा। मिस्टर होमस से निर्पेक्ष लार्ड क्लाइव की जीवनी लिखने वाले ने अमीचन्द के लिये बड़े कड़े शब्द लिखे हैं। ("A treacherous villian of the deepest dye")यद्यपि अब इस प्रकार के बहुत से प्रमाण मिलते हैं जिनसे अमीचन्द पर अङ्गरेज इतिहास लेखकों के लगाये कलङ्क नहीं लग सकते, तथापि यदि मान भी लिया जाय कि अमीचन्द ने अपने लालच की मात्रा बढ़ा दी थी तो भी केवल अमीचन्द को घोर पापी समझना अधर्म है। हम देखते हैं कि अङ्गरेज इतिहास लेखकों के मतानुसार जब नवाब के कर्मचारी तथा कलकत्ते की ब्रिटिश काउनिसल के प्रायः सभी मेम्बर आपादमस्तक इस पाप में सने हैं तब केवल अमीचन्द के ही प्रति ऐसे कुवाच्यों का प्रयोग क्यों किया जाता है? खैर अमीचन्द ने तो केवल धमकी मात्र ही दी थी पीछे से वह वैसा करते कि नहीं यह बात अन्धकार में निहित है, परन्तु इस धमकी के पल्टे में जो निष्ठु-

र * व्यवहार और विश्वासघात अमीचन्द के साथ किया गया-क्या वह किसी घोर पाप से किसी अंश में कम है ?

अस्तु-ऐन समय पर अमीचन्द को मचलते देख कलकत्ते की इङ्गलिश सीक्रेट कमिटी साश्चर्य चिन्तित हुई। इस चिन्ता से निस्तार पाने के लिये कमिटी वालों ने नाना प्रकार की युक्तियां सोचीं परन्तु कोई भी युक्ति ठीक न बैठी। अन्त में प्रपञ्ची क्लाइव ने ईश्वर का भय छोड़, ब्रिटिश आईन के विरुद्ध अमीचन्द से बदला लेने के लिये वही अपराध किया जिस अपराध के अभिषाप से बेचारे नन्दकुमार को फांसी दी गयी थी।

पाठको! हमारी भाषा के अजर अमर कवि गोस्वामी श्री तुलसी दास जी ने लिखा है "समरथ को नहि दोष गुसाईं।" वाल्यावस्था से उदण्ड प्रकृति क्लाइव को बङ्गाल में सब प्रकार के अधिकार प्राप्त थे। इसके अतिरिक्त कलकत्ते की काउनिसल क्लाइव के रोषयुक्त और सिपाहियाना मिजाज से भयभीत हो उसके हाथ की कठपुतली बन गयी थी। इस काउनसिल में केवल एक धर्मभीरु पुरुष था। उसका नाम था वाटसन। बाटसन साहब ईश्वर से डरते थे और स्वतंत्र प्रकृति के मनुष्य थे। काउनसिल भर में यही अकेले थे जो क्लाइव की बातों में हां नहीं मिलाते थे।

क्लाइव ने धर्माधर्म का विचार परित्याग कर दो सन्धि पत्र तयार किये-एक सफेद रङ्ग के कागज पर दूसरा लाल रङ्ग के कागज पर। लाल रङ्ग के कागज पर जो सन्धि पत्र लिखा गया था वह अमीचन्द की इच्छानुसार था किन्तु सफेद रङ्ग के

* कहते हैं अमीचन्द के परिवार की १३ स्त्रियां उनके नौकर और उनका घर जला दिया गया था।

लिखे हुए सन्धि पत्र में अमीचन्द को तीन लाख रुपये देने वाली बात की चर्चा भी नहीं थी । जब दो रङ्ग के कागजों पर दो प्रकार के सन्धि पत्र तयार हो गये-तब हस्ताक्षर के लिये कमिटी के सामने वे दोनों पत्र उपस्थित किये गये । क्लाइव ने इन सन्धि पत्रों पर हस्ताक्षर करने के लिये अनुरोध करते हुए कमिटी के मेम्बरों से कहा कि अमीचन्द से दुष्ट प्रकृति विश्वासघातक के साथ हर प्रकार का बुरा व्यवहार करना न्यायसङ्गत है । अनुरोध करने पर भी एडमिरल वाटसन ने अपने को इस बेईमानी के कुकृत्य से प्रथक रखा । किन्तु वाटसन की कुछ भी परवाह न कर उदण्ड क्लाइव ने उन दोनों पत्रों पर वाटसन के जाली हस्ताक्षर बना लिये ।

सिराजुद्दौला को नीचा दिखालाने के लिये जो बेईमानी की गई वह अवश्यमेव गर्हनीय और तिरस्कार करने के योग्य है । सिराजुद्दौला से असन्तुष्ठ हो लोगों ने उसके सर्वनाश के लिये जो कुचक्र रचा, यद्यपि वह शासन की कठोरता और शासन के अत्याचारों का उपयुक्त प्रायश्चित्त था; तथापि क्लाइव से प्रसिद्धि-प्राप्त मनुष्य ने जो अधर्माचरण किया वह इतिहास के पृष्ठों से कभी नहीं मिट सकता । सिराजुद्दौला के अपराधों के प्रायश्चित्त के लिये उसकी प्रजा भले ही उसको तिरस्कृत कर के जबरदस्ती उससे नवाबी छीन लेती परन्तु क्लाइव से उच्च विचारशील स्वदेशहितैषी और स्वजात्याभिमानी को ऐसे नीच और निन्द्य काम करने के लिये कभी अग्रसर नहीं होना चाहिये था । क्लाइव की सुख्याति तो इसी में थी कि वह प्लासी युद्ध में ही नवाब को वीरोचित साहस के साथ परास्त कर के उसका सर्वनाश करता । क्लाइव के इस क्षुद्र और

नीच कार्य्य की आलोचना करते हुए क्लाइव के स्वदेश भाइयों ने लिखा है :—

"Clive perpetrated that great act of bad faith (not even an act amounting to palpable dishonesty and treachery—The Author.) which must ever remain a stain on his character"

वास्तव में क्लाइव ने यह काम ऐसा बुरा किया जिससे उसके चरित्र में सदा के लिये दाग़ लग गया ।

—:0—

अष्टम अध्याय ।

"अचिरांशु विलास चञ्चला
ननुलक्ष्मीः फलमानुषङ्गिकम्" ॥

[क्लाइव की युद्ध कामना-युद्ध की तयारी-मीरजाफर का पत्रव्यवहार बन्द करना-क्लाइव की युद्ध समिति के साथ मन्त्रणा-क्लाइव का हृदयदौर्बल्य-क्लाइव की सेना का पयान-प्लासी का युद्ध-२३ वीं जून सन् १७५७ का चिरस्मरणीय दिवस-नवाब की सेना का नाश-क्लाइव का रणक्षेत्र पर अधिकार-कुचक्रियों की सफलता-सिराजुद्दौला का अन्तिम परिणाम-मीरजाफर को बङ्गाल की नवाबी-अमीचन्द की आशा लता पर वज्रपात-अमीचन्द की शोचनीय मृत्यु-क्लाइव के विषय में डाक्टर पोप की सम्मति-क्लाइव को बङ्गाल विजय से धनलाभ-फरांसीसियों का पराजय-क्लाइव की द्वितीय वार इङ्गलेण्ड यात्रा-क्लाइव को आइरिश पियर लार्ड और वैरन की उपाधियां मिलना-क्लाइव की कामना-क्लाइव की वार्षिक आय-क्लाइव की उदारता-क्लाइव की पार्लियामेण्ट में बैठने की इच्छा-सलीवन और क्लाइव का झगड़ा-क्लाइव की बङ्गाल की जिमींदारी की आय का अपहरण-भारत में पुनः गड़बड़-पटने में विप्लव-क्लाइव की शर्त्तें-क्लाइव की अन्तिम भारत-यात्रा]

—oo:o:oo—

कैसे ही क्यों न हो—क्लाइव जो चाहता था सो हो गया। दोनों सन्धिपत्रों पर हस्ताक्षर हो गये। अतः क्लाइव ने अपने पत्रों का ढङ्ग बदला और

अपनी सेना को तयार किया। सिराजुद्दौला को क्लाइव का अभिप्राय मालूम पड़ गया। उसने भी भावी युद्ध की आशङ्का से अपनी सेना को सुसज्जित कर अपनी सेना में युद्ध घोषणा प्रचारित की। इधर से क्लाइव अपनी सेना लेकर आगे बढ़ा, उधर से सिराजुद्दौला रणातुर हो आगे बढ़ा। इन दोनों की सेनाओं की मुठभेड़ सुप्रसिद्ध प्लासी क्षेत्र में हुई। क्लाइव के साथ * ६५७ गोरे २१०० देशी सिपाही, १५० गोलन्दाज और १० तोपखाने थे। और नवाब की अधीनस्थ सेना में ५०००० पैदल, १८००० घुड़सवार और कई एक तोपखाने थे।

क्लाइव के साथ मीर जाफर अपने स्वामी सिराजुद्दौला के साथ विश्वासघात करने की प्रतिज्ञा से आवद्ध था और इन दोनों में परस्पर पत्रव्यवहार भी चलता था। किन्तु अब भावी युद्ध की भीषणता को स्मरण कर सिराजुद्दौला का सेना नायक मीर जाफर अपने मन में कुछ डरा और क्लाइव के साथ लिखा पढ़ी करनी बन्द कर दी। अपनी सेना से बहुत अधिक शत्रु सेना देखकर और मीर जाफर के सहसा परिवर्तित व्यवहार पर ध्यान देकर क्लाइव के मन में आशङ्का उत्पन्न हुई। उसके मन में नाना प्रकार के संकल्प विकल्प उपन्न होने लगे।

---

* मार्सडन साहब इन दोनों सेनाओं की संख्या इस भांति बतलाते हैं। सिराजुद्दौला की सेना में ५०००० पैदल १८०० घुड़सवार और ५० तोपें और कुछ फरासीसी सिपाही थे और क्लाइव के साथ ११०० गोरे, २००० देशी सिपाहि और केवल दस हलकी तोपें थीं। किन्तु Beveridge's History of India Book III. p. 559 में क्लाइव ने अपने पत्र में जो अपनी सेना की गणना स्वयं लिखी है वह यह है। ६५० गोरों की एक बटालियन १०० गोलन्दाज और ६ तोपखाने, ८०० सिपाही ६०० मल्लाह [ये मल्लाह हाल ही में आये थे।] इस प्रकार सब मिला कर २१५० सैनिक और ६ तोपखानों को लेकर क्लाइव ने प्लासी युद्ध के लिये तयारी की थी।

भविष्य में क्या करना होगा—इस बात को निश्चय करने के लिये उसने युद्ध समिति (War Council) आमन्त्रित की। क्लाइव ने इस प्रकार की समिति प्रथम बार ही आमन्त्रित की थी। समिति में युद्ध सम्बन्धी विषय उपस्थित होने पर तेरह वोट तो युद्ध न करने के पक्ष में आये और केवल सात युद्ध करने के पक्ष में। नवाब से युद्ध करने के पक्ष में वोट देने वालों में आइरकोट Eyre Coote भी था।

प्रथम तो क्लाइव अधिकांश सम्मति के अनुसार नवाब के साथ युद्ध न करने के लिये राजी हो गया किन्तु आइरकोट के, युद्ध करने के लिये बारम्बार अनुरोध करने पर—क्लाइव का मन विचलित हुआ और वह एकान्त में विचार करने के लिये समीपस्थ एक सघन आम्रवृक्षों के उपवन में चला गया। लौटने पर उसने अपने प्रथम विचार को बदल दिया। जिस समय प्रतापशाली रणकुशल क्लाइव ने आम्रवृक्ष के नीचे खड़े होकर अपने प्रथम विचार को बदला था उसी समय बङ्गाल के भाग्य का निर्णय होगया था। क्लाइव ने पुनः एक बार अपनी निर्भय वीरता का परिचय दे अपने साथ के अफसरों पर आधिपत्य जमाया और युद्ध समिति की निश्चित की हुई सम्मति के विरुद्ध उसने अपने अधीनस्थ उस छोटी सी सेना को शत्रु की बहुसंख्यक सेना पर आक्रमण करने के लिये, दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही नदी पार होने की आज्ञा दे दी। उसने नदी पार कर शत्रु सेना से एक मील के अन्तर पर अपनी सेना के डेरे खड़े करवाये। ये डेरे ऐसी बुद्धिमानी से खड़े किये गये थे कि दूर से देखने वालों को यही प्रतीत होता था कि इन डेरों में रहने वाली सेना की संख्या बहुत अधिक है।

जिस स्थान पर क्लाइव ने अपनी छावनी डाली वह स्थान भी सुरक्षित था। सघन वृक्षों की आड़ से इस सेना की रक्षा होती थी और शत्रुसेना पर इस स्थान से मार की अच्छी घात थी।

इतना होने पर भी क्लाइव को अपने दायित्व का बड़ा ध्यान था। जिस दिन युद्ध होने वाला था कहते हैं उसके पूर्व रात्रि में उसको रात्रि भर निद्रा नहीं आयी। रात्रि भर क्लाइव को इसी चिन्ता ने सताया कि दूसरे दिन उसको अपनी सेना से कहीं अधिक सेना के साथ युद्ध करना है।

सन् १७५७ ई० की २३ वीं जून का प्रातःकाल बङ्गाल के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा। इसी दिन भारत के वाटरलू युद्ध का श्रीगणेश हुआ था। पौ फटते ही नवाब की सेना कई पंक्तियों में पंक्तबद्ध होकर, जहाँ क्लाइव की सेना का पड़ाव था उस ओर आक्रमण करने के लिये भीमवेग से आगे बढ़ी। यद्यपि अङ्गरेजी सेना में १००० भी ब्रिटिश जाति के योद्धा नहीं थे; तथापि सम्पूर्ण सेना का परिचालन ब्रिटिश आफिसरों द्वारा ही होता था और इसीसे अङ्गरेजी सेना में आज्ञा पालन उचित रीति से और उचित समय पर होता था।

नवाब की सेना में देशी तोपखानों के अतिरिक्त कुछ फरासीसी तोपें भी थीं। देशी तोपखाने बैलों द्वारा खींचे जाते थे और चबूतरों पर रख कर इन तोपों से गोले छोड़े जाते थे। इन दिनों की भाँति उस समय हार्सबेटरी माउण्टेनबेटरी आदि का प्रचार नहीं था। इसीसे उन देशी तोपखानों से ठीक ठीक काम नहीं लिया जा सकता था। इन तोपों की मार अङ्गरेजी फौजों तक नहीं पहुंच पाती थी। हां फरासीसी तोपों से निकले हुए गोले कभी कभी अङ्गरेजी फौजों के पास तक अवश्य

पहुंचते थे। जब नवाबी सेना की यह दशा थी तब अङ्गरेजी तोपखाने नवाब की सामने खड़ी हुई पंक्तिबद्ध सेना पर भयानक रूप से निरन्तर अग्नि वर्षा रहे थे। दोपहर तक तो तोपखानों का द्वन्द्वयुद्ध चलता रहा। इस बीच में बादलों ने आकर मेह वर्षाना आरम्भ किया और इस वर्षा से नवाब के तोपखानों की बारूद और रञ्जक जो खुले मैदान में थी भीग गयी। किन्तु अङ्गरेजों की बारूद आदि जो पेड़ों की छाया में थी पानी से बच गयी। इस दैवी घटना का प्रभाव नवाब की सेना पर अधिक पड़ा। नवाब की सेना को इस दैवी घटना से पूर्ण विश्वास हो गया कि ईश्वर भी इस समय अङ्गरेजों की ही ओर है। इस विश्वास के उत्पन्न होते ही नवाबी सेना भयभीत हुई। अफसरों को क्रमशः मरते देख नवाबी सेना का उत्साह भङ्ग होने लगा और पंक्तिबद्ध नवाबी सेना के पैर उखड़े और वह पीछे खसकने लगी। परन्तु फरासीसी कण्टिजण्ट जो नवाब की मदद को आया था, पूर्ववत् बराबर अङ्गरेजी सेना का दृढ़ता पूर्वक सामना करता रहा। शत्रु सेना को रणक्षेत्र से पीठ फेरते देख अङ्गरेजी सेना की एक टुकड़ी ने आम के पेड़ों से निकल कर शत्रु सेना पर सहसा वीरगति से आक्रमण किया और जिस स्थान पर शत्रु सेना थी—वहाँ से उसको खदेड़ कर उस स्थान पर अपना अधिकार जा जमाया। अपनी टुकड़ी को शत्रु के मोरचे पर अधिकार जमाते देख क्लाइव ने अपनी सम्पूर्ण सेना को आगे बढ़ने की आज्ञा दी। अङ्गरेजी सेना के आगे बढ़े हुए भाग पर आक्रमण करने को शत्रु सेना का एक दल आगे बढ़ता हुआ ज्यों ही दीख पड़ा त्यों ही क्लाइव ने उस दल पर तोपें दागने की आज्ञा अपने गोल-

न्दाजों को दी। अङ्गरेजी गोलों की अविराम वर्षा के मारे यह दल भी तितिर बितिर होकर भाग गया।

अङ्गरेजी सेना इस दल को भागते देख उत्साहित हुई और आगे बढ़ कर वह ऐसे स्थान पर जाकर रुक गयी जहां से वह शत्रुओं की छावनी पर गोले वर्षा सके। अङ्गरेजी गोलों की मार से शत्रु सेना का सर्वनाश होने लगा। नवाब की सेना में खलबली पड़ गयी और वह छिन्न भिन्न हो रण क्षेत्र से इधर उधर भाग गयी। मीर जाफर के परिचालन में जो सेना थी केवल वही जहाँ की तहाँ अड़ी खड़ी रही। अङ्गरेजी सेना शत्रु के रूप में घुस गयी और ढूढ़ ढूढ़ कर शत्रुओं का नाश करने लगी। अङ्गरेजी सेना को न रोकने के लिये नवाब की सेना में यदि कोई दोषी कहा जा सकता है तो केवल मीर जाफर—क्यों कि मीर जाफर यदि चाहता तो अङ्गरेजी सेना का सामना करता—किन्तु उसको बङ्गाल बिहार उड़ीसा की नवाबी पाने के लालच ने ऐसा करने से रोका। सामना करना तो एक ओर रहा—अङ्गरेजों की विजय होते देख वह उनमें जाकर मिल गया। क्लाइव ने भी उसके पिछले असद्व्यवहारों को एक दम भूल और उसको बङ्गाल का नवाब समझ—सलाम किया। प्लासी युद्ध के अन्तिम परिणाम की आलोचना करते हुए डाक्टर पोप ने लिखा है:—

"Thus Clive did in Bengal what Dupleix had done in Carnatic"

अर्थात डूपले जिस नीति का अवलम्बन कर करनाटक में सफल हो चुका था—क्लाइव ने बङ्गाल को हस्तगत करने में उसी नीति का अवलम्बन किया।

पाठको! मीरजाफर और कलकत्ते की अङ्गरेजी काउन-

सिल का रचा हुआ, सिरजुद्दौला के विरुद्ध चक्र सफल हुआ। मीर जाफर बिहार उड़ीसा बङ्गाल का नवाब बनाया गया परन्तु बङ्गाल के नये नवाब वास्तव में अङ्गरेजों के हाथ के कठपुतले थे। और नवाब का ऐसा होना कोई आश्चर्य की बात भी नहीं है, क्योंकि अङ्गरेजों की कृपा से ही मीर जाफर को बङ्गाल की नवाबी पाने का सुअवसर प्राप्त हुआ था और अङ्गरेजों को अप्रसन्न करने से उस समय भी मीर जाफर को नवाबी छिन जाने का भय था। हमारे पाठकों को इस बात पर अवश्य ध्यान देना चाहिये कि आरम्भ में जिन विलायती वणिकों की कम्पनी का उद्देश्य केवल इस देश में अपने देश का व्यापार प्रसार करना था वही कम्पनी अपने नैतिक कौशल (Diplomacy) से किस प्रकार धीरे धीरे इस देश के आधिपत्य को हस्तगत करती जाती थी।

इस प्लासी युद्ध की घटना का वर्णन पूर्ण करने के अर्थ अब हम इस युद्ध के एक मात्र प्रधान पात्र सिराजुद्दौला के जीवन की शेष घटनाओं का उल्लेख करना भी अत्यन्त आवश्यक समझते हैं।

प्लासी क्षेत्र में जिस समय दोनों सेनाओं में घमासान लड़ाई हो रही थी उस समय अपनी सेना का उत्साह घटते देख और उस तुमुल युद्ध के भीषण भविष्य पर दृष्टिपात कर नवाब सिराजुद्दौला अपने मन में डरा। वह रणभीरु स्वार्थी नबाब अपनी सेना को नष्ट होते हुए छोड़, अपने प्राण को अपनी सेना के सैनिकों के प्राणों की अपेक्षा बहुमूल्य समझ और अपने कर्त्तव्य को एक दम बिसार कर चुपके से मुर्शिदाबाद भाग गया। मुर्शिदाबाद पहुंच कर उसने एक पिटारी

में बहुत से बहुमूल्य रत्नों को रखा और वहां से पटना को रवा-ना हुआ। कुछ दिनों बाद सिराजुद्दौला के एक पुराने शत्रु ने जिसकी उसने नाक काट ली थी मीर जाफर को उसका पता बतलाया, और वह पकड़ा गया। जब सिराजुद्दौला जो कुछ दिन पूर्व स्वयं बङ्गाल का नवाब था; बङ्गाल के नये नवाब के सामने उपस्थित किया गया तब जो भाव उन दोनों के हृदय में उत्पन्न हुए होंगे उनका विचार मात्र, सरल प्रकृति कोमल हृदय में, करुणा उत्पन्न करने की, अब भी शक्ति रखता है। किनहीं कारणों से क्यों न हो—मीर जाफर ने अपने भूतपूर्व स्वामी के प्राण—अपहरण की आज्ञा नहीं दी—किन्तु मीर जा-फर के दुष्ट पुत्र मीरन ने सिराजुद्दौला की अन्तिम कष्टमय जीवन लीला को समाप्त कर दिया। सिराजुद्दौला ने बङ्गाल की केवल १५ मास नवाबी कर पायी थी और २० वर्ष की अवस्था पूर्ण होने के पूर्व ही उसको किये हुए कुकर्मों का अत्यन्त कठोर दण्ड भी यहीं मिल गया।

मिस्टर हालवेल के शब्दों में यदि वह "महानिर्दय और ज़ालिम नवाब" सिराजुद्दौला—यह जानता होता कि यह व सुन्धरा किसी की नहीं है, यह अनित्य है, यह अचला है—इस के पाने के अर्थ—अपने साथियों को, अपनी पुत्रवत प्रजा को कष्ट देना व्यर्थ और अन्याय है—तो कदाचित् वह निरपराधि-यों के शोणित से अपने हाथों को कलङ्कित न करता। यदि नवयुवक सिराजुद्दौला यह जानता होता कि वह न्यायवान सर्वव्यापी—अन्याय करनेवालों के पापों का फल कालान्तर में अवश्य देता है तो वह कदाचित् "कालकोठरी"-ऐसी निर्दयता पूर्ण घटनाओं का नायक बन, अपनी आत्मा को कलङ्कित कर के,

नरक की दारुण यंत्रणाओं को भोगने के लिये उपक्रम न रचता। यदि ईश्वर-भय-रहित, वह शून्यहृदय सिराजुद्दौला यह जानता होता कि प्रजा को भी परमात्मा ने किसी प्रकार की शक्ति प्रदान की है तो कदाचित् उसको अपनी ही प्रजा के रचे हुए षड़यंत्र द्वारा इस प्रकार अपमानित हो नष्ट न होना पड़ता। यदि अपरिणामदर्शी और युवावस्था के मद में मत्त—नवाब सिराजुद्दौला को यह ज्ञात होता कि इस जीवन के अनन्तर आत्मा को मनुष्य लोक में किये हुए कर्मानुसार यश-अपयश तथा कीर्त्ति अथवा अपकीर्त्ति रूपी शरीर में चिरकाल लों निवास करना पड़ता है तो कदाचित् वह इतने दिनों बाद भी लोगों का घृणापात्र बनने के भय से निष्ठुर अमानुषिक कर्म करने में प्रवृत्त न होता। परन्तु—नवयुवक मदमत्त सिराजुद्दौला तो नवाबी को कुछ और ही समझता था। पाठकों, इसीसे नवाब सिराजुद्दौला का अन्तिम परिणाम एक शोचनीय घटना है।

प्लासी युद्ध के विजयियों को इस युद्ध के अवसान में—लूट खसोट में बहुत सी द्रव्य हाथ लगी। प्लासी युद्ध के समाप्त होते ही दूसरे दिन मीर जाफर के बङ्गाल के सूबेदार अथवा नवाब होने की घोषणा घोषित करवायी गयी। मीर जाफर ने नवाबी पाने पर क्लाइव और उसके साथियों को बहुत सी द्रव्य भेंट में दीं। किन्तु जब बेचारे अमीचन्द—नहीं नहीं, अभागे अमीचन्द की, अपना हिस्सा पाने की बारी आयी, तब उसको पिछली चालाकी का सारा वृतान्त सुनाया गया। इस वृतान्त को सुन कर अमीचन्द की जो दशा हुई वह केवल अनुमान गम्य है। बहुत दिनों से अभिलषित वस्तु के पाने की आशा संयुक्त मनुष्य को, अवसर प्राप्त होने पर आशातीत वस्तु की

अप्राप्ति से जो मनोवेदना होनी सम्भव है उससे कहीं अधिक मनोवेदना इस वृत्तान्त को सुन कर अमीचन्द के हृदय में उत्पन्न हुई। अमीचन्द की बहुत दिनों की लगाई आशालता पर तुषार पड़ गया। अङ्गरेज इतिहास लेखकों का कथन है कि अभागे अमीचन्द के हृदय पर इस घटना से ऐसी गहरी चोट लगी कि वह आशा भङ्ग की असह्य भीषणता को न सह लड़खड़ा कर बैठ गया। उसको संसार अन्धकार मय प्रतीत होने लगा।

अङ्गरेज इतिहास लेखकों ने यह भी लिखा है कि अमीचन्द की यह दशा देख क्लाइव को अमीचन्द पर दया भी आई थी और पीछे से उसने इस बात की चेष्टा भी की थी कि अमीचन्द को कुछ दिया भी जाय। क्लाइव ने अमीचन्द की शिफारिश करते हुए लिखा था :—

"As a person capable of rendering greate services and therefore not wholly to be discarded."— Dr Pope.

किन्तु जिस क्लाइव के हाथ में उस समय सब कुछ था उसके अनुरोध करने पर भी अमीचन्द को कुछ न मिलना और प्रत्युत अमीचन्द के निर्दोष घर वालों के साथ नवाबी प्रथानुसार अत्याचार होना—क्लाइव के कलुषित हृदय का, यह प्रत्यक्ष उदाहरण समझना अनुचित न होगा।

अमीचन्द के प्रति जो ऊपरी कृपाएँ दिखलाई गयीं उन का अन्तिम परिणाम कुछ भी नहीं हुआ। उसके हृदय पर जो चोट लगी थी उसका सांघातिक असर निरन्तर बढ़ता ही गया। अन्त में अमीचन्द विक्षिप्त हुआ और कुछ मास बाद वह मर भी गया। क्लाइव के इस कुकृत्य के विषय में डाक्टर पोप लिखते हैं:—

"Clive thus degraded himself by his duplicity & injured that reputation for strict integrity as well as states, is one of the most essential element of success."

अर्थात् क्लाइव ने अपनी कुटिल नीति के वशवर्ती हो कर अपने पद को स्वयं नीचे गिरा दिया और अपनी उस सत्य कीर्त्ति को कलङ्कित किया जिसका किसी व्यक्ति विशेष में रहना अथवा राज्य में वर्त्तमान होना सफलता का प्रधान अङ्ग समझा जाता है । अस्तु, क्लाइव को बङ्गाल विजय के उपलक्ष में तीन लाख पाउण्ड मिले; साथ ही उसको कई जागीरें भी मिलीं । लोग कहते हैं इन जागीरों की आय का अधिक भाग उसके स्थापित "Lord Clive's Fund" में जाता था । इस फण्ड द्वारा कम्पनी के आहत और असमर्थ नौकरों की सहायता की जाती थी ।

यद्यपि क्लाइव को लोग द्रव्य का लालची नहीं बतलाते; तथापि इस प्रकार अनुचित रीति से इतना धन लेना, केवल अन्य जाति वालों की दृष्टि में ही नहीं किन्तु, लार्ड क्लाइव के सजातियों की दृष्टि में भी अच्छा प्रतीत नहीं होता है । क्लाइव के सजातियों ने तो इस विषय में यहां लों लिखा है कि केवल क्लाइव के इस कुकृत्य से अङ्गरेज जाति पर अन्य लोगों की दृष्टि में धब्बा लगा है ।

"These immense sums, received in his irregular way, demoralised the man who received them and lowered Englishmen in the eyes of all men."

इस अवसर पर क्लाइव ने केवल अपनी जेब ही नहीं भरी किन्तु कम्पनी को भी बहुत हर्जा दिलवाया । जो नगर बङ्गाल में अब चौबीस परगने के नाम से प्रसिद्ध है वह एक समय कम्पनी की ज़िमीदारी में आगया था । इस नगर के दानपत्र की तारीख २० दिसम्बर सन् १७५७ ई० है ।

कम्पनी के डाइरेक्टरों ने क्लाइव को बङ्गाल में अपने उपनिवेशों का गवर्नर नियुक्त किया और वह भी अपने देश के हित साधन में तत्पर होने लगा। उसने फरासीसियों के विरुद्ध एक सेना करनाटक के उत्तर भाग में भेजी। इस सेना द्वारा अच्छी सफलता प्राप्त हुई। इसी सेना ने मीर जाफर और पटना के गवर्नर रामनारायण को शाह आलम से बचाया। शाह आलम ने राज्य छीड़ लेने की इन दोनों को धमकी दी थी। इसी सेना द्वारा क्लाइव ने बङ्गाल में डचों की शक्ति को भी उन्मूलन किया।

सन् १७६० ई० में क्लाइव दूसरी बार इङ्गलेण्ड वापिस गया। वहां पहुंचते ही उसके ऊपर पुरस्कार और बहुमान की घनघोर वर्षा हुई। वह आइरिश पीयर (Irish Peer) बनाया गया और उसको लार्ड (Lord) एवम् बेरन (Baron) की उपाधियाँ मिलीं। तत्कालीन इङ्गलेण्ड के युवक किङ्ग तृतीय जार्ज और वाग्मिवर पिट तथा अङ्गरेज जाति ने क्लाइव का बड़ा सम्मान किया। क्लाइव की कामना थी कि वह आइरिश के बदले इङ्गलिश पीयर बनाया जाय। क्लाइव ने इस विषय में अपने एक पत्र में लिखा था।

"If health had not deserted me on my arrival in England in all probability, I should have been an English Peer instead of an Irish one, with the promise of a red riband-I know I could have bought the title (which is usual) but that I was above, and the honors I have obtained are free and voluntary."

क्लाइव के इस पत्र से स्पष्ट विदित होता है कि इङ्गलेण्ड से सुसभ्य देश में किसी समय, सम्मान पाने वाले के गुणों का विचार कर उपाधियां वितरित नहीं की जाती थीं—किन्तु

गुण न होने पर भी और धन पास होने से ही प्रत्येक मनुष्य पदवियां पाने का अधिकारी हो सकता था।

सर जान मेलकोम (Sir John Malcolm) ने क्लाइव की वार्षिक आय ४०,००० हज़ार पाउण्ड अर्थात छः लाख रुपये कूती थी। जिन दिनों का हम यह वृत्तान्त लिखते हैं उन दिनों ३४ वर्ष की अवस्था वाले मनुष्य के लिये, जिसके पास चौदह वर्ष पूर्व एक अल्प मासिक वृत्ति को छोड़, अन्य कुछ भी निज का नहीं था—उसके लिये यह आय अवश्य ही बहुत कही जा सकती है।

पाठको! धन पाकर जो लोग केवल अपने नाशवान शरीर के भोगराग में ही उस धन को व्यय करना जानते हैं; धनवान होने पर भी जो लोग अपने धनहीन पड़ोसियों की यंत्रणाओं पर कर्णपात नहीं करते और धनाभाव से दुःखित अपने आत्मीय सम्बन्धियों के धनकष्ट को नहीं मैंटते, ऐसे लोगों का धनवान होना न होना बराबर है। क्लाइव धनवान् होने पर धन की सार्थकता को भली भांति समझता था। क्लाइव के धन से और उसकी उदार प्रकृति से उसके आत्मियों ने लाभ उठाया। वह अपने पिता को आठ सौ पाउण्ड (अर्थात् १२,०००) रुपये); अपनी बहनों, अन्य सम्बन्धियों और मित्रों को—सब मिलाकर २०,००० पाउण्ड (अर्थात् तीन लाख रुपये) वार्षिक दे डालता था। इतना ही नहीं धन सम्पन्न होने पर वह अपने पुराने मित्र मेजर लारेंस को भी नहीं भूल सका था। मेजर लारेंस को वह ५०० पाउण्ड अर्थात् ७५००) रु० प्रतिवर्ष देता था। अपने मित्र के प्रति क्लाइव का यह उदार व्यवहार अत्यन्त श्लाघ्य है। इन दिनों क्लाइव जैसे उदार मित्र का मिलना कठिन है।

इस बार भी विलायत लौटने पर क्लाइव पार्लियामेण्ट के झगड़े में पड़ गया किन्तु-इस बार वह सफलमनोर्थ हुआ। वह श्रूसवरी (Shrewsbury) की ओर से पार्लीयामेण्ट में मेम्बर नियुक्त हुआ। किन्तु स्वदेशीय राजनैतिक मण्डली में उसका विकाश न हो सका। इसका कारण अङ्गरेज इतिहास लेखक यह बतलाते हैं कि क्लाइव की मनोवृत्ति सदैव भारतवर्ष सम्बन्धी विषयों के विचार की ओर लगी रहती थी। यह अनुमान हमको भी ठीक प्रतीत होता है। क्योंकि जिस देश में रह कर क्लाइव—साधारण क्लाइव, एक वकील का अत्यन्त उत्पाती पुत्र क्लाइव; अपने देश में इतना गौरवान्वित हुआ वह कृतज्ञ क्लाइव भला इस देश को किस प्रकार भूल सकता था। जिस समय क्लाइव पार्लीयामेण्ट में प्रविष्ट हुआ उस समय वह लिबरल अथवा 'विग' दल की ओर झुका था, अनन्तर वह फाक्स में जाकर मिल गया। फिर पिट की अद्वितीय प्रतिभा ने उसको अपनी ओर आकर्षित किया और अन्त में वह ग्रेनविल (Granville) से मिला। दशान्तर को प्राप्त होने पर भी भारतवर्ष को वह न भूल सका। क्लाइव का स्वभाव अब ऐसा हो गया था कि वह ईस्ट इण्डिया कम्पनी के मामलों में अधिक समय व्यतीत करने लगा था। कम्पनी में अपना प्रभाव बढ़ाने को उसने अपने पास का बहुत सा धन व्यय कर के, कम्पनी के शेयरस मोल लिये थे।

कम्पनी के डाइरेक्टरों में सलीवन नाम के एक व्यक्ति थे। वह क्लाइव से बड़ी ईर्षा करते थे। यद्यपि प्रकट में ये दोनों मिले हुए से जान पड़ते थे; तथापि इन दोनों के हृदय में ईर्षाग्नि धधका करती थी। कम्पनी के डाइरेक्टरों का चुनाव

प्रति वर्ष होता था। सन् १७६३ ई० में जब कम्पनी के डाइरेक्टरों के चुनाव का समय आया तब हृदय के भीतर धधकती हुई ईर्षाग्नि बाहर फूट कर निकली। क्लाइव ने इस बात का प्रयत्न किया कि सलीवन इस बार कम्पनी का डाइरेक्टर न चुना जाय। किन्तु क्लाइव को इसमें सफलता प्राप्त नहीं हुई। सलीवन इस वर्ष भी कम्पनी का डाइरेक्टर चुना गया। जो अग्नि अबलों इन दोनों के हृदय मन्दिर में जल रही थी वह अब प्रकाश रूप से बाहर भी जलने लगी। सलीवन भी क्लाइव से इसका बदला लेने की घात जोहने लगा। क्लाइव ने सोते हुए विषधर को लात की मार से जगा अपने मन की अमूल्य शान्ति को स्वयं नष्ट किया। अब खुलंखुल्ला-दाव पेंच खेले जाने लगे। दोनों की एकमात्र यही कामना थी कि एक दूसरे को नीचा दिखलावें। अन्त में सलीवन का चक्र घूम गया। कम्पनी के 'बोर्ड आफ डाइरेक्टरस' ने अधिकांश सम्मति (Majority of votes) से एक मन्तव्य पास किया। इस मन्तव्य के पास होते ही क्लाइव पर विपत्ति आयी। उसके निज की जो ज़िमीदारी बङ्गाल में थी क्लाइव को उस ज़िमीदारी की आमदनी देना बन्द कर दिय गया। वास्तव में यह वही ज़िमीदारी थी जिसको मीर जाफर ने लार्ड क्लाइव को भेंट में दिया था। भेंट पत्र में कम्पनी से सम्बन्ध युक्त क्लाइव का नाम होने से ही क्लाइव की ज़िमीदारी की आमदनी का अपहरण किया जाना-"बोर्ड आफ डाइरेक्टरस"का ठीक न्याय नहीं कहा जा सकता।

जिस समय मीर जाफर—अकर्मण्य स्वार्थलोलुप मीर जाफर, आलमगीर के भय से भीत हो कर, अपने ऐश्वर्य के शीघ्र

नष्ट होने की चिन्ता में दग्ध हो रहा था, उस समय सहायता करके-क्लाइव ने मीर जाफर की चिन्ता मेंटी। इसी उपकार के प्रत्युपकार में मित्रोचित उदारता का परिचय देते हुए-नवाबी प्रथा के अनुसार मीर जाफर ने क्लाइव को यह ज़िमीदारी भेंट की थी। जिस समय यह ज़िमीदारी क्लाइव ने भेंट में पायी उस समय लों कम्पनी के डाइरेक्टरों ने कोई ऐसी आज्ञा नहीं दी थी जिसमें कम्पनी के कर्मचारियों को ऐसी भेंट लेने का निषेध किया गया हो। इतने दिनों बाद डाइरेक्टरों का इस विषय की मीमांसा करना और भेंट की उपयोगता का निश्चय करना असङ्गत और अन्याय युक्त था। इन सब विषयों के पूर्वापर को विचार कर प्रतिद्वन्दी को हराने की कामना से, क्लाइव ने डाइरेक्टरों के पास किये हुए मन्तव्य के विरुद्ध "चान्सरी" में एक बिल उपस्थित किया।

इङ्गलैण्ड में जब भारतवर्ष की 'शासन समिति' (Governing Body)" में इस प्रकार गड़बड़ मची हुई थी, तब क्लाइव के भारतवर्षीय उत्तराधिकारी की अक्षमता और अयोग्यता से बङ्गाल प्रान्त की दशा शोचनीय हो रही थी। क्लाइव के उतराधिकारी का वेनसिटार्ट (Vansitart) नाम था। उसमें पदोचित योग्यता का अभाव था। जो जहाज़ यहां से लौट कर स्वदेश जाते वे इस देश के कुप्रबन्ध की खबरें इङ्गलैण्ड निवासियों को सुनाते। उस समय इस देश के अधिकांश भाग का शासन कम्पनी के अयोग्य कर्मचारियों के हाथ में था। ये लोग कम्पनी के लाभ की बात को एक दम भूल कर अपनी अपनी जेबें भरने लगे थे। ऐसे ही कारणों से कम्पनी की सम्पत्ति बढ़ने पर भी उसके साझीदारों को नाम मात्र का लाभ होता था।

इस देश में नित्य प्रति विप्लवों की संख्या बढ़ी—अराजकता और अन्याय की मात्रा बढ़ी—साथ ही कम्पनी की प्रतिष्ठा घटी और कम्पनी के कर्मचारियों का भय यहां की प्रजा के हृदय में घटा। अतः मीर जाफर पर कम्पनी का ऋण नित्य प्रति बढ़ता गया। अन्त में बङ्गाल के अङ्गरेज गवर्नर ने, मीर जाफर को अयोग्य समझ नवाबी से उतार और उसके दामाद मीर क़ासिम को चालाक समझ, बङ्गाल की नवाबी छोड़ देने के लिये, नवाब मीर जाफर पर नवाबी से 'इस्तेफा' देने का दबाव डाला। अन्त में मीर जाफर ने इस्तेफा दिया और कलकत्ते में जीवन के शेष दिन बिताना पसन्द किया। इससे जान पड़ता है कि मीर जाफर बड़ा दूरदर्शी था। कलकत्ते में रहना पसन्द करने में मीर जाफर ने भविष्य में अपना कल्याण समझा। मीर जाफर को मीर क़ासिम की कपटयुक्त प्रकृति का भली तरह ज्ञान था। उसको मालूम हो गया था कि मीर क़ासिम के नवाब होने पर बङ्गाल की दुर्दशा अवश्य ही होगी और यदि मैं मीर क़ासिम के पास रहूंगा तो मेरी वही दशा होगी जो दशा निरपराधी हंस की चालाक काक के साथ रहने से हुई थी। अस्तु—सन् १७६० ई० की २७ वीं सितम्बर को मीर क़ासिम बङ्गाल का नवाब हुआ। नवाब होने पर उसने अङ्गरेजों को मिदनापुर, चिरगाँव और बर्दवान भेंट किये। इतना पाने पर भी कम्पनी के स्वार्थलोलुप कर्मचारियों को सन्तोष नहीं हुआ। मीर क़ासिम के साथ अङ्गरेजों का विवाद चल पड़ा। इसीका परिणाम "पटना का ग़दर" कहा जाता है। पटना के ग़दर में जैसे भीषण अत्याचार मीर क़ासिम ने किये उनको स्मरण करके मनुष्य के हृदय में कठोरता की

पराकाष्ठा का पूरा ज्ञान हो जाता है। इसी ग़दर में पटना का गवर्नर रामनारायण गले में बोझा बांध कर श्री गङ्गा की गोद में सुलाया गया। अङ्गरेजों के अन्य सेठ साहूकार मित्रों की भी वही गति हुई जो गति रामनारायण को प्राप्त हुई थी। दो कम डेढ़ सौ क़ैदी अङ्गरेज, गोलियों के निशाने बनें। अन्त में अङ्गरेजों ने पटना पर अपना अधिकार जमाया और मीर क़ासिम अवध के नवाब शुजाउद्दौला के पास चला गया।

इन सब घटनाओं की ख़बर जब इङ्गलैण्ड पहुंची तब तो कम्पनी का आसन दोलायमान होने लगा। चारो ओर क्लाइव के नाम की रटन्त होने लगी। स्वार्थतत्पर कम्पनी के डाइरेक्टरों ने क्लाइव के जागीर वाले मामले को ठण्डा कर दिया और उसको भारतवर्ष का गवर्नर बना कर पुनः यहाँ भेजना निश्चय किया।

"बोर्ड आफ डाइरेक्टरों" के जिस अधिवेशन में क्लाइव को भारतवर्ष भेजना निश्चय हुआ था, आरम्भ में उस अधिवेशन में बड़ा हलचल मचा। लोगों को आरम्भ में यह विश्वास नहीं था कि क्लाइव भारतवर्ष की तृतीय यात्रा करना स्वीकार करेगा। लोगों को क्लाइव के उदार और गम्भीर स्वभाव का ज्ञान नहीं था। प्रतिद्वन्दी सलीबन की बातों के फेर में पड़ कर जिस बोर्ड ने क्लाइव को भारी आर्थिक क्षति पहुंचाई उसी बोर्ड के प्रस्ताव को क्लाइव इतनी सरलता से स्वीकार कर लेगा इसका विश्वास प्रथम किसी को नहीं था। किन्तु नहीं, जब क्लाइव से डाइरेक्टरों ने अपनी इच्छा प्रकट की तब उसने केवल यह कह कर उसे स्वीकार कर लिया कि यदि उसका प्रतिद्वन्दी सलीवन, बोर्ड की प्रेसीडेंसी से हटा दिया जाय

तो उसको भारतवर्ष की गवर्नरी स्वीकार करने में कुछ भी आपत्ति नहीं होगी। इस पर बोर्ड में बड़ी खलबली पड़ी—क्यों कि जिस सलीबन को डाइरेक्टरों ने इतना मुंह लगा लिया था कि उसकी बातों में वे ज्ञानशून्य होजाते थे उस सलीबन को पद भ्रष्ट करना बड़ी कठिनाई का सामना करना था। किन्तु अन्त में निरुपाय हो तथा अपनी आंखों पर ठिकरी रख कर डाइरेक्टरों को सलीबन को प्रेसीडेंसी से प्रथक करना ही पड़ा और सन् १७६५ ई० में क्लाइव कम्पनी से पूर्ण अधिकार प्राप्त कर के तीसरी बार भारतवर्ष के लिए प्रस्थानित हुआ। जो लोग अपने एक मात्र नीच स्वार्थ के वशीभूत हो देश भर के गौरव को मिट्टी में मिला देना कुछ भी नहीं समझते, जो अपने एक मात्र नीच स्वार्थ के वशीभूत हो देश भर के अर्थ को नष्ट कर देते हैं और जो अपने एक मात्र उच्च पद प्राप्ति की क्षुद्र मनोकामना के वशवर्त्ती हो देश भर का पद नीचा कर देते हैं उन लोगों को क्लाइव से शिक्षा लेनी चाहिये। अपनी शोचनीय स्थिति को कुछ भी न समझ क्लाइव ने जब देश के गौरव को नष्ट होते देखा तब विना किसी आपत्ति को उपस्थित किये उसने देश सेवाव्रत धारण कर लिया। इस के अतिरिक्त शत्रु से बदला लेने की कामना रखने वालों को भी क्लाइव की प्रणाली का अनुसरण करना चाहिये। शत्रु नीति का यही माहात्म्य है कि अवसर मिलने पर शत्रु से बदला लेने में कभी न चूकना।

—:o:—

नवम-अध्याय ।

(उपसंहार)

"शस्त्राघाता न तथा सूचीक्षतवेदना यादृक्"

(क्लाइव की तृतीय भारत यात्रा का उद्देश्य-बङ्गाल की परिवर्तित दशा-क्लाइव का कम्पनी के कर्मचारियों के प्रति वर्ताव-क्लाइव के शासन सम्बन्धी सुधार-शासन की कड़ाई से कम्पनी के कर्मचारियों में असन्तोष-क्लाइव का निर्पेक्ष वर्ताव-बङ्गाल में कम्पनी का दबदबा- क्लाइव की अस्वस्थता-क्लाइव के विषय में कलकत्ते की कमिटी का मत-क्लाइव की भारत से अन्तिम विदाई—स्वदेश में क्लाइव पर विपत्ति-हाउस आफ कामन्स में क्लाइव-क्लाइव के भारतीय शासन की जांच-क्लाइव के भाग्य का फैसला-क्लाइवका निर्दोषी सिद्ध होना—क्लाइव की मृत्यु-मृत्यु के कारण-उपसंहार)

क्लाइव ने अपनी प्रथम भारतयात्रा में दक्षिण प्रान्त में ब्रिटिश आधिपत्य स्थापित किया, द्वितीय बार उसने उत्तरपूर्वीय प्रान्त का अधिकांश भाग अपने अधीन किया और अपनी अन्तिम तृतीय बार की भारतयात्रा में उसने कम्पनी के शासन की हिलती हुई जड़ को दृढ़ कर के कम्पनी के स्वार्थलोलुप कर्मचारियों का उचित शासन किया ।

हमने प्रथम क्लाइव की सैनिक विभाग सम्बन्धी प्रतिभा का परिचय दिया; अनन्तर उसमें सैनिक एवम् राजनैतिक निपुणता का समावेश प्रदर्शन किया; अब हम क्लाइव के विशुद्ध राजनैतिक कार्यों का यहां वर्णन कर के उसकी नैतिक क्षमता का परिचय देते हैं ।

क्लाइव जब तीसरी बार यहां आया तब उसको बड़ी कठिनाइयों में पड़ना पड़ा । कारण इसका यही है कि कम्पनी

के कर्मचारी अब अपने को कुछ और का और ही समझने लगे थे। क्लाइव को अब जिन कठिनाइयों का सामना करना है वे शस्त्रवल से नहीं हटायी जा सकतीं। पाठक! क्लाइव को इस बार कम्पनी के बङ्गालस्थित शिश्नोदरपरायण निरङ्कुश कर्मचारियों को उचित रीति से शासित कर के उनको शृङ्खला-वद्ध करना है।

सन् १७६५ ई० की ३ मई को जब लार्ड होकर क्लाइव तीसरी बार यहां आया; तब इस देश में अनेक परिवर्तन हो चुके थे। उसके पुराने सुपरिचित बङ्गाल के भूतपूर्व नवाब मीर जाफर की मृत्यु हो चुकी थी। मीर जाफर का उत्तराधिकारी मीर क़ासिम भी बङ्गाल की नवाबी से निकाला जा चुका था। नाम मात्र के लिये शाहंशाह की पदवी धारण करने वाला द्वितीय शाह आलम प्रयागस्थ अङ्गरेजों के कैम्प में था। कम्पनी के प्रायः सभी भृत्य और कलकत्ते की अङ्गरेजी काउंसिल जिसके प्रेसीडेण्ट मिस्टर स्पेन्सर थे, पूर्णरीति से बदनाम हो चुके थे। कम्पनी के कर्मचारियों की धनलोलुपताजन्य हृदय विदारी कहानियां सुदूर इङ्गलेण्ड में रहने वाले कम्पनी के डाइरेक्टरों के कर्णकुहर में प्रविष्ट हो चुकी थीं और डाइरेक्टरों के नेत्रों के सामने, धनलोलुप कर्मचारियों की क्षुद्र धन लालसा के प्रतिफलों के चित्र अङ्कित हो चुके थे।

भावी भीषण परिणाम का विचार कर उतनी दूर बैठे हुए डाइरेक्टरों ने कम्पनी के कर्मचारियों की वित्तैषणा रोकने को एक आज्ञा पत्र निकाला था। इस आज्ञा पत्र का मर्म स्पष्ट शब्दों में यही था कि कम्पनी के कर्मचारी प्रजा से अथवा किसी से 'नजर' और 'वकशीस' न लिया करें। परन्तु सात

समुद्र पार से आयी डाइरेक्टरों की इस आज्ञा का पालन करवाना विना एक साहसी शासक के कठिन बात थी। कम्पनी के कर्मचारी निरङ्कुश होने से इतने ढीठ हो गये थे कि डाइरेक्टरों की आज्ञा के सर्वथा विरुद्ध उन लोगों ने 'नजर' और बकशीसे लेले कर मीर जाफर के कम उम्र लड़के को बङ्गाल की नवाबी देदी थी।

क्लाइव ने आते ही डाइरेक्टरों की उक्त आज्ञा का पालन करवान आरम्भ किया। साथ ही शासन में इतनी कठोरता दिखलाई कि कम्पनी के नौकरों को निज का व्यापार करने का भी निषेध कर दिया। स्वार्थियों के स्वार्थ में बाधा पड़ने से जो यंत्रणा उनको होती है और जिस प्रकार वे अन्तर निहित अग्नि की भांति समय पाकर एक दम धधक उठते हैं—उसे भुक्तभोगी ही भली भांति अनुभव कर सकते हैं। पाठको! ऐसी दशा में कम्पनी के क्षुद्रस्वार्थ में लिप्त कर्मचारी मिल कर यदि क्लाइव का अवरोध करें तो आश्चर्य की बात नहीं। क्लाइव की इन कड़ाइयों ने कम्पनी के कर्मचारियों में बदला लेने की इच्छा उत्पन्न कर दी। किन्तु क्लाइव की निर्भीत प्रकृति के सामने कर्मचारीगण इस देश में सदैव नीचा देखते रहे। ये लोग नीचा क्यों न देखते, क्लाइव तो इस बार सत्यपथ पर आरूढ़ था। इसके अतिरिक्त इस बार क्लाइव बङ्गाल का पूर्ण अधिकार प्राप्त गवर्नर हो कर आया था। उसके शब्द बङ्गाल वालों के लिये अमोघ आज्ञा थी। यही कारण था कि वह अपने अधीनस्थ कर्मचारियों की कुछ भी परवाह न करके अपना काम दृढ़ता पूर्वक करता ही गया। जो लोग निरन्तर झगड़ा करते करते झग-

ड़ालू प्रकृति के होगये थे उनको तो क्लाइव ने छाँट छाँट कर एक दम निकाल दिया और उनकी जगह मदरास से सिविलियन्स बुलाकर नियुक्त किये ।

प्रथम उद्योग में सफलता प्राप्त होने पर जो उत्साह उत्पन्न होता है वही उत्साह मनुष्य की उन्नति की प्रथम सीढ़ी है । क्लाइव अपने प्रथम उद्योग में सफलमनोर्थ हुआ और उसने अब दूसरे कामों में हाथ लगाया । दूसरी प्रथा जिस में सुधार की बड़ी आवश्यकता थी वह यह थी कि सामरिक विभाग में जो धन की लूट होती थी उसको रोकना ।

उस समय अङ्गरेजी पलटने जब लाम पर जाती थीं तब उनको "डबल भत्ता" मिलता था । यह 'भत्ता' लड़ने वालों की खुराक का दाम समझ कर दिया जाता था । परन्तु जिस समय का यह वृत्तान्त है उस समय भारत के अन्न को निगल जाने वाली रेली ब्रादर्स एण्ड कम्पनी यहां स्थापित नहीं हुई थी । यहां का अन्न विदेश जाता था पर इतना नहीं जाता था जितना अब प्रतिवर्ष निकल जाता है । उस समय इस देश में अन्न की प्रचुरता से अल्प आय में ही यहां के मनुष्यों का पेट भली भांति भर जाता था । पेट ही नहीं भर जाता था किन्तु उस समय के लोगों ने जो काम १०) मासिक की आय से किये वे काम अब १५०) मासिक आय वाला भी नहीं कर सकता ! इस "डबल भत्ते" की प्रथा से उस समय सैनिकों को अच्छी रक़म हाथ लगती थी । उदाहरण के लिये यदि किसी केपटिन को एक मास लों किसी लड़ाई में रहना पड़ता तो इस 'डबल भत्ते' के हिसाब से मासिक वेतन छोड़ कर उसको लगभग एक हज़ार रुपया और मिल जाता था । क्लाइव ने इस

प्रथा को भी बन्द किया ।

इस धन हानि को न सह कर कम्पनी की सेनाओं के अङ्गरेज सैनिकों में बड़ी हल चल पड़ी । जोशीले स्वार्थी सैनिकों ने क्लाइव को अपना अपना काम छोड़ देने की धमकी दी और २०० अफसरों ने एक ही दिन अपने अपने इस्तीफे दाखिल कर दिये । क्लाइव—निर्भय क्लाइव, अङ्गरेज सैनिक अफसरों की इस मान लीला से बिलकुल विचलित नहीं हुआ। प्रत्युत वह प्रत्येक आफिसर का इस्तेफा लेता गया और प्रत्येक को हिरासत में देता गया । उसने तुरन्त मदरास से अपने विश्वासपात्र मनुष्यों को बुलाकर इन लोगों के खाली पदों की पूर्त्ति की । इस्तेफा देते समय इन अफसरों का कदाचित् यह विश्वास रहा होगा कि क्लाइव स्वदेशी है और स्वदेशी होने से वह हमारा पक्ष अवश्य लेगा साथ ही वह अपनी भूल को समझ भी जायगा परन्तु जब इन लोगोँ ने क्लाइव की विचार दृढ़ता को प्रत्यक्ष अपने सम्मुख देखा तब इन लोगों की सारी आशाओं पर पानी फिर गया । पन्द्रह दिन के भीतर भीतर पूर्ववत् शान्त स्थापित होगई । सब कर्मचारी अब फेक्टरी की कलों की भाँति आपसे आप नियमिति रूप से और एकसा कार्य करने लगे । जो तूफान एक साथ उमड़ आया था वह एक भारी दबाव पड़ने से एक साथ दब गया।

क्लाइव ने जब देखा कि उसका रोब सब पर छा गया है तब उसने कर्मचारियों के वेतन और आमदनी पर विचार किया । जब यह बात उसकी समझ में आगई कि कम्पनी की दी हुई आर्थिक सहायता से कर्मचारियों का निर्वाह भली भाँति नहीं हो सकता तब उसने इन लोगों की आमदनी ब-

ढ़ाने का विचार किया। किन्तु किसी का अनिष्ट करना जितने सहज है उतना इष्टसाधन करना सहज नहीं है। यद्यपि क्लाइव का रोपित यह बीज उसके यहां रहते रहते अंकुरित नहीं हो पाया; तथापि लार्ड कार्नवालिस के समय में क्लाइव का रोपित वीज अंकुरित होकर पल्लवित भी हुआ और कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि की गयी। क्लाइव ने जब यह देखा कि इन लोगों के वेतन वृद्धि में अभी विलम्ब है तब उसने कर्मचारियों के निर्वाह का एक दूसरा उपाय निकाला। कम्पनी के कर्मचारियों का निज का व्यापार रोक देने के पलटे में निमक की आमदनी से जो लाभ होता था उसमें से कुछ अंश कर्मचारियों में Subsistence allowance के रूप में वितरित करने की क्लाइव ने व्यवस्था की। क्लाइव का यह कार्य यद्यपि दूरदर्शिता का था तथापि उसको इसके लिये पीछे बड़ी विपत्ति झेलनी पड़ी।

क्लाइव ने घर के भीतर संशोधन कर के घर के बाहर भी संशोधन करना आरम्भ किया। प्रसिद्ध मुग़ल शाहंशाह बाबर के वंशधर शाह आलम जो उस समय नाम मात्र को इस देश के मालिक थे क्लाइव ने उनसे कम्पनी के नाम में बङ्गाल बिहार तथा उड़ीसा की ज़िमीदारियों में शासन स्थापित करने को शाही फरमान निकलवाये और शाह आलम की ओर से दीवानी के अधिकार प्राप्त किये इससे इन प्रान्तों के लोगों पर क्लाइव का बड़ा प्रभाव पड़ा। क्लाइव की शासन प्रणाली से बङ्गाल भर में कम्पनी का प्रताप छागया। बङ्गाल के नवाब को ४२ लाख रुपयों पर पेंशन लेकर बङ्गाल की नवाबी छोड़ने के लिये विवश होना पड़ा। इन सब कार्यों से केवल ब-

ङ्गाल का ही में नहीं किन्तु देश भर में ब्रिटिश शक्ति का आतङ्क लोगों पर छा गया।

निरन्तर की मानसिक चिन्ता और परिश्रम शीघ्र ही शरीर को निर्वल और क्षीण कर देता है। क्लाइव का शरीर भी इसीसे अब नित्य प्रति क्षीण और दुर्वल होने लगा। उसने अब इङ्गलेण्ड लौट जाने का विचार दृढ़ किया। बाइस मास लों निरन्तर काम करके क्लाइव ने सन् १७६७ ई० के जनवरी मास के अन्त में इस देश से सदैव के लिये बिदाई मांगी। पाठको! क्लाइव रहा तो इस बार केवल बाइस ही मास परन्तु उसने इस देश में ब्रिटिश शक्ति की जड़ को दृढ़ करके चिरकाल के लिये पुष्ट कर दिया।

कलकत्ते की कमिटी ने डाइरेक्टरों को क्लाइव के प्रचारित सुधारों का उल्लेख करते हुए क्लाइव के यहां आने के पूर्व की दशा का चित्र अङ्कित करते हुए लिखा था।

"A presidency divided headstrong and licentious(हरे राम!); a government without nerves, a treasury without money, and service without subordination, decipline or public spirit. Amidst a general stagnation of useful industry, of licensed commerce individuals were accumulating immense riches which they have ravished from the insulted prince and his helpless people, who groaned under the united pressure of discontent poverty and oppression" और क्लाइव के यहां से सदैव के लिये प्रस्थापिन होने के समय के बाद इस देश की दशा का उल्लेख उक्त कमिटी ने यों किया है

"The present situation need not be described. The liberal supplies to China, the state of your treasury, of your investment of the service and of the whole country declare it to be the strongest contrast to what it was."

क्लाइव अन्तिम बार जब यहां से लौट कर स्वदेश में पहुंचा तब उसकी आर्थिक दशा पहले की अपेक्षा अच्छी नहीं थी। इस बार उसने जिस आज्ञा का पालन अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से करवाया उसका पालन स्वयं भी किया था। मीरजाफर से भेंट में ६० हज़ार पाउण्ड की जो जागीर क्लाइव को मिली थी-उस जागीर को उसने कम्पनी को दे डाला; परन्तु कम्पनी से इस बात की लिखा पढ़ी करवाली कि इस जागीर की आमदनी से अशक्त और काम करने के अयोग्य सैनिक अफसरों और सिपाहियों को आर्थिक सहायता मिलती रहे।

कहते हैं तीसरी बार की भारतयात्रा में क्लाइव ने किसी की भेंट स्वीकार नहीं की थी। इस पर भी जब वह इङ्गलेण्ड लौट कर गया तब उसके स्वदेशियों ने उसकी निन्दा प्रचारित करने में कोताई नहीं की और सभ्यदेश के रहने वालों ने उसके प्रति नाना कुवाच्यों का प्रयोग भी किया। बङ्गाल में रह कर जिन लोगों के स्वार्थ में क्लाइव ने बाधा डाली थी अब उन लोगों ने बदला लेने का सुअवसर उपस्थित देख क्लाइव का अनिष्ट साधने के लिये प्रयत्न करना आरम्भ किया। मैकाले ने लिखा है कि इन लोगों ने क्लाइव की निन्दा इङ्गलैण्ड में यहां लो फैलाई कि क्लाइव ने स्वयं अपनी निन्दा अपने कानों से ऐसे वयोवृद्ध लोगों के मुख से सुनी जिनसे क्लाइव का कभी परिचय भी नहीं हुआ था। भारतवर्ष में रह कर क्लाइव ने जिस ठाठ के साथ गवर्नरी की थी उसको अतिशयोक्तियों में वर्णन करते हुए वहां वालों ने अपनी सम्पूर्ण विद्या बुद्धि को व्यय कर डाला। जो क्लाइव कुछ दिनों पूर्व स्वदेशियों से अलभ्य

प्रतिष्ठा प्राप्त करके उनका विश्वासपात्र बन चुका था, वही क्लाइव अब कुछ स्वदेशियों के नीच स्वार्थ में बाधा डालने के कारण अविश्वासी और निन्दा का पात्र बनाया गया।

"अतथ्यस्तथ्यो वा हरति महिमानं जनरवः"। किसी नीतिज्ञ ने ठीक ही कहा है। जिन दिनों क्लाइव के कुछ स्वदेश भाई उससे घृणा करते और उसके साथ ईर्षा और द्वेष रखते थे उन्हीं दिनों क्लाइव ने उन लोगों की द्वेषाग्नि में घी की आहुति डाली। श्रापशायर (Shropshire) और सरे (Surrey) स्थानों में क्लाइव ने क्लेरमाउण्ट (Clarmount) पर बड़ी ऊंची ऊंची हवेलियां बनवा डालीं। क्लाइव के वैभव को देख कर जलने वाले उसके शत्रुओं ने लोगों से कहना आरम्भ कर दिया कि यह सब उसी बेईमानी से उपार्जित धन की महिमा है। परन्तु जो अनपढ़ थे और जिनके हृदय में क्लाइव की नीचता और क्षुद्रता का चित्र अङ्कित किया गया था वे लोग अपनी अपनी अशिक्षा और असभ्यता के कारण इन हवेलियों का मूल कारण भूत प्रेतों के मत्थे मढ़ने लगे। ऐसे लोगों की धारणा थी कि बङ्गाल के जिन मृत नवाब से क्लाइव ने धन लिया है वह भूत बन कर कहीं किसी रात्रि में उसको उठा न लेजाय, इसी भय से क्लाइव ने चौड़ी चौड़ी दीवालों से आवेष्ठित हवेलियां बनवाई हैं।

कुछ काल तक क्लाइव ने इसी बात की प्रतीक्षा की कि कदाचित् समय स्वयं लोगों के भ्रमों को दूर कर दे परन्तु जब क्लाइव के इस भाव से लोग क्रमशः यहां तक ढीठ होगये कि रास्ता चलते वे उस पर दोषारोपण करने लगे तब एक दिन हाउस आफ कामन्स में भारतीय विषयों पर चर्चा चल पड़ने

पर क्लाइव ने खड़े होकर आत्मरक्षा के उद्देश्य से अपने विपक्षियों पर वक्तृता द्वारा घोर आक्रमण किया।

क्लाइव ने बाल्यावस्था में पढ़ने में अनिच्छा दिखलाई थी और इसी लिये उसको कई स्कूलों में पढ़ाने का प्रयत्न भी किया गया था। इसीसे हमारे पाठक क्लाइव की विद्या सम्बन्धी योग्यता की अटकल लगा सक्ते हैं। परन्तु हाउस आफ कामन्स में भाषण करते हुए क्लाइव ने अपनी योग्यता का जैसा परिचय दिया उसकी प्रशंसा लार्ड चेटहम(Lord Chatham) ने मुक्तकण्ठ से की है। * विपक्षियों के प्रचारित अपवाद की इस भाषण में क्लाइव ने ऐसी विचित्र समालोचना की कि उसको सुनकर उसके विपक्षी लज्जित हुए और अन्य उपाय न देख उनहों ने अमीचन्द वाले मामले को अब हरा किया इसमें संशय नहीं कि क्लाइव का यह कर्म निपट अधर्मयुक्त उसके पद के सर्वथा विरुद्ध और जाति भर के ऊपर धब्बा लगाता है। इस मामले के उठते ही क्लाइव की जांच के लिये एक कमिटी नियुक्त की गयी। सिराजुद्दौला के साथ मामला छिड़ने से लेकर बङ्गाल विजय तक के सब मामलों की जांच करने का काम उस कमिटी को सौंपा गया। उस कमिटी की जांच से कई छिपे हुए रहस्यों की उधेड़ बुन हुई। कमिटी ने जांच के समय क्लाइव की प्रतिष्ठा और पद का कुछ भी विचार न करके क्लाइव से बड़े टेढ़े टेढ़े प्रश्न किये। क्लाइव की

* Lord Chatham, who now the ghost of his former self, loved to haunt the scene of his glory, was that night under the gallery of the House of Commons and declared that he had never heard a finer speech."

—Macaulay's Lord Clive. p. 83

कमिटी का यह व्यवहार बहुत गड़ा। अपनी बात समाप्त करते हुए अन्त में उसने कमिटी से साक्षेप कह डाला कि "कमिटी ने मुझ से वैसे ही प्रश्न किये जैसे प्रश्न किसी भेड़ बकरी चुराने वाले से किये जाते हैं।

क्लाइव को एक बड़ा भरोसा था। उसको अपने कृतकर्मों पर पूरा विश्वास था। जो कार्य उसने किये थे वे सब स्वतन्त्र होकर और निज इच्छा से किये थे। उसको कर्त्तव्य कर्म का पूरा ज्ञान था। इसीसे जब जांच की कमिटी ने अपनी रिपोर्ट हाउस आफ कामन्स में सुनाई तब क्लाइव ने खड़े होकर बड़े साहस के साथ अपना बचाव Defence स्वयं किया। क्लाइव की स्पीच समाप्त होने के बाद कुछ समय लों हाउस आफ कामन्स निस्तब्ध रहा परन्तु लोगों की बुद्धि में कमिटी की रिपोर्ट ने जो विष प्रथम भर दिया था उसका समूल नाश क्लाइव न कर सका।

इस दृष्ट संसार में कोई ऐसा मनुष्य, कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो निर्गुण हो। परमात्मा को छोड़ अन्य कोई पदार्थ निर्गुण नहीं हो सकता। अतः मनुष्य भी कभी निर्गुण नहीं हो सकता। गुणयुक्त होने से ही अच्छे और बुरे गुणों का जोड़ा प्रतीत होने लगता है। मनुष्य मात्र में गुण होते हैं। किसी में थोड़े अवगुण होते हैं गुण अधिक होते हैं और किसी में गुण कम और अवगुण अधिक होते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि लार्ड क्लाइव में अवगुण थे परन्तु यदि उसके गुण और अवगुणों की तुलना की जाय तो अवगुणों से गुण ही अधिक निकलेंगे। यह बड़े खेद की बात तो अङ्गरेज जाति वालों के लिये हैं कि जिस मनुष्य ने अपने जातीय गौरव को

डूबते देख बचा लिया—जिस मनुष्य ने अपने जातीय लाभ के लिये असंख्य शत्रुओं की कुछ परवाह न कर प्राण को हथेली पर रख कर अपने को हर प्रकार से भयानक स्थिति में डाला उसी मनुष्य के साथ उसीकी जाति वालों ने अपने स्वार्थ के वशीभूत हो—शत्रुता की और उसके प्रति इस प्रकार सर्वसाधारण में घृणा दिखलाई।

अन्त में हाउस आफ कामन्स में यह मत स्थिर हुआ कि क्लाइव ने ब्रिटिश कमाण्डर होकर मीर जाफर से बहुत सा धन लिया है किन्तु ऐसा स्थिर होते ही वेडरबर्न साहब ने प्रस्ताव किया और हाउस के एक दल ने स्वीकार भी कर लिया कि क्लाइव ने भारतवर्ष में रह कर स्वदेश के लिये प्रशंसनीय सेवा की है। अब हमारे पाठक देखें कि हाउस आफ कामन्स के मत में कैसा अपरिहारिणीय मत उत्पन्न हुआ है। जीव की मोक्ष को लोग तब मानते है जब जीव के किये हुए शुभ और अशुभ कर्मों के फल परस्पर में पूरे कट जांय और कुछ भी शेष न रहे। क्योंकि शुभाशुभ कर्म वालों की विषमता ही जीव को कर्मबन्धन में फसाती है। यहां हाउस आफ कामन्स के दो भिन्न भिन्न दलों के मतानुसार क्लाइव के किये हुए कर्मों का फल समता को प्राप्त हो गया। अच्छे बुरे कर्मों के फल आपस में पूरे पूरे कट गये। ब्रिटिश कमाण्डर होकर रिशवत लेना और लार्ड क्लाइव होकर देश की प्रशंसनीय सेवा करने के समान फल हुए। अतः क्लाइव को मोक्ष मिली। क्लाइव सर्वसाधारण की दृष्टि में एक प्रकार से लाञ्छित होने से बच गया परन्तु स्वदेशनिवासियों के ऐसे असद् व्यवहार पर उसके हृदय में जो ग्लानि उत्पन्न हुई उसी

ने क्लाइव का सर्वनाश किया ।

जैसा कड़ा अमानुषिक व्यवहार कमिटी ने उसके साथ जांच के समय किया था उसका प्रभाव क्लाइव के मन पर पड़ा और जो दया (Mercy) उसके ऊपर अन्त में की गयी वह वास्तव में उसकी अभिमान युक्त प्रकृति के लिये बड़ी ही कष्टप्रद थी। मन पर प्रभाव पड़ने से उसका प्रतिफल शरीर पर पड़ना स्वाभाविक बात है। अतएव उक्त घटना के १८ मास बाद और भारतवर्षीय अपने प्रतिद्वन्दी डूपले की मृत्यु के १० वर्ष बाद, ४९ वर्ष २ मास की अवस्था में लार्ड क्लाइव ने २२ नवम्बर सन् १७७४ ई० को स्वयं अपनी कुत्सित इच्छा के अनुसार, शरीर परित्याग किया ।

केवल इतिहास लेखकों पर पूर्णतया निर्भर रहने वालों को आश्चर्य होगा कि क्लाइव जिसको मरे अभी पूरे डेढ़ सौ वर्ष भी नहीं होने पाये उसी क्लाइव की मृत्यु के कारण अङ्गरेज इतिहास लेखकों ने भिन्न भिन्न दिखलाये हैं। अङ्गरेज इतिहास लेखक जब आधुनिक विषयों को निश्चय करके एक मत नहीं हो सकते तब इन लोगों की अनदेखी प्राचीन बातों की अनगढ़ अटकलें यदि लोगों को भ्रम में डाल दें तो आश्चर्य ही क्या है ! कोई क्लाइव की मृत्यु का कारण पिस्तौल कोई विष और कोई छुरी बतलाता है। अङ्गरेज इतिहास लेखकों की यह कैसी विडम्बना है। यही नहीं विलायत के सभ्य जीवनी लेखक अभी तक यह बात भी निश्चय पूर्वक नहीं कह सकते कि क्लाइव श्रापशायर में मरा अथवा लन्दन में। सभ्यदेश के लेखकों में ऐसी मोटी मोटी बातों में पृथ्वी आकाश का अन्तर होना बड़े आश्चर्य और निन्दा की बात है।

Horace Walpole के मतानुसार क्लाइव ने अफीम की अधिक मात्रा खालेने से आत्मघात किया । कहते हैं वह किसी रोग विशेष के शमनार्थ अफीम खाने लगा था । किन्तु, Gleig के कथनानुसार क्लाइव ने एक छुरी से आत्मघात किया । कहते हैं जब वह अपने बालकट वाले मकान की बैठक में बैठा था तब एक रमणी उससे मिलने को आयी । उस रमणी ने क्लाइव को एक पर की क़लम और एक तीक्ष्ण छुरी उसे बनाने के लिये दी । क्लाइव ने क़लम बना कर तो रमणी को लौटा दी परन्तु छुरी को अपने हाथ में ज्यों का त्यों रखा । इसी खुली हुई तीक्ष्ण छुरी से प्लासी के जेता ने अपना गला काट कर हृदयस्थ ग्लानि का प्रायश्चित्त किया ।

बाल्यकाल से चञ्चलस्वभाव राबर्ट क्लाइव, एक साधारण वकील का प्रकृतसिद्ध उत्पाती क्लाइव, प्रतापशाली क्लर्क क्लाइव, आरकट दुर्ग और प्लासी युद्ध का जेता क्लाइव और भारतवर्ष में ब्रिटिश आधिपत्य की जड़ जमाने वाला लार्ड क्लाइव—यद्यपि आज इस धराधाम पर नहीं है, तथापि उसकी स्वदेशसेवा की पताका आजलों उसके देश में फहरा रही है ।

क्लाइव का मृत शरीर गिरजे के हाते में गाड़ा गया । यह गिर्जा वही था जिसकी शिखर पर क्लाइव ने बाल्यावस्था में एक बार चढ़ कर अनूठी भविष्यतवाणी सुनी थी । क्लाइव भाग्यवान था जिसका मृत शरीर भी अन्त में उसके देश में ही लगा । क्लाइव की मृत्यु के बाद थोड़े दिनों उस की स्त्री जीवित रही । क्लाइव का सब से बड़ा लड़का एडवर्ड क्लाइव (Edward Clive) जो सन् १७५४ में उत्पन्न हुआ था पीछे

बङ्गाल का गवर्नर हुआ और सन् १८०४ ई० में वह Earl of Powis बनाया गया।

क्लाइव की कीर्त्ति में जो धब्बे थे उनको समय के अमोघ प्रवाह ने अब बहुत कुछ धो डाला है। इङ्गलेण्ड के निवासियों में आज से सवा सौ वर्ष पूर्व क्लाइव के विषय में जो धारणा थी वह धारणा, अब वहाँ के लोगों की नहीं रही। जो ईर्ष्याद्वेष सवा सौ वर्ष पूर्व लोगों में था अब वह ईर्ष्याद्वेष प्रायः लोगों के हृदय से निकल गया है और धीरे धीरे शेष भी दूर होता चला जाता है। जो क्लाइव किसी समय बुरे विशेषणों के साथ स्मरण किया जाता था वही क्लाइव कालचक्र के प्रभाव से आज इतिहासों के पृष्ठों में योद्धा (Warrior); नीतिज्ञ (Statesman); भारतवर्ष में ब्रिटिश आधिपत्य की जड़ जमाने वाला (Founder of the British Empire in India) और चतुर (Clever) बतला कर चित्रित किया जाता है।

"सर्वं यस्य वशादगात्स्मृतिपथं
कालाय तस्मैनमः॥





 ## सूचना। 

